राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2018

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

सफलता के सोपान

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी संस्थागन, कोचीन को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान किया गया

संस्थान की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'मत्स्यगंधा' में प्रकाशित 'मछुआरों की आय बढ़ायी जाने के लिए समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियां, विषय लेख के लिए डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक और डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, समुद्री संवर्धन प्रभाग, सी.एम.एफ.आर.आई. को राजभाषा विभाग का गौरव पुरस्कार 2017–18 दिनांक 14 सितंबर, 2018 को, विज्ञान भवन, नई दिल्ली आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में भारत के महामहिम उप राष्ट्रपति श्री वेंकय्या नायडु ने प्रदान किया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी.एम.एफ.आर.आई. और
डॉ. इमेल्डा जोसफ पुरस्कार ग्रहण करते हुए

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक 2018

भाकृअनुप
ICAR

कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली 110 012

सत्यमेव जयते

त्रिलोचन महापात्र, पीएच.डी.
एफ एन ए, एफ एन ए एस सी, एफ एन ए ए एस
सचिव एवं महानिदेशक

TRILOCHAN MOHAPATRA, Ph.D.
FNA, FNASc, FNAAS
SECRETARY & DIRECTOR GENERAL

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली 110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE AND FARMERS WELFARE
KRISHI BHAVAN, NEW DELHI 110 001
Tel.: 23382629; 23386711 Fax: 91-11-23384773
E-mail: dg.icar@nic.in

आमुख

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने अपनी 90 वर्षों की सफल यात्रा के दौरान राष्ट्र की खाद्य व पोषणिक सुरक्षा में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आज हमारा राष्ट्र खाद्यान्न के मामले में एक आयातक की भूमिका से निकलकर निर्यातक राष्ट्र के पथ पर अग्रसर है जिसका श्रेय परिषद द्वारा उच्च उपजशील किस्मों के विकास और किसानों तक उन्नत तकनीकों के हस्तांतरण को जाता है। गणतंत्र दिवस की परेड़ में लगातार दूसरे वर्ष भी परिषद की झांकी 'किसान गांधी' को शामिल होने का गौरव हासिल हुआ। इससे भी अधिक गर्व का विषय यह है कि इस वर्ष इसे प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

वर्तमान में जहां कृषि से जुड़े प्राकृतिक संसाधन दिन प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं वहीं दूसरी ओर हमारी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसे में परिषद की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि हम अपने सफल अनुसंधान परिणामों के माध्यम से कम समयावधि एवं जल की बचत करने वाली व जलवायु अनुकूल किस्मों तथा उन्नत तकनीकों को तेजी से किसानों तक पहुंचाएं। भारत में अभी भी अधिकांश कार्यबल प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तौर पर कृषि एवं उससे जुड़े उद्योग पर आश्रित है। यह विशाल कार्यबल अब निम्न आय वर्ग से निकलकर मध्यम वर्ग में शामिल होने की कतार में है। वर्तमान में भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन की दर को बनाये रखना एवं किसानों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने पर केन्द्रित है। इसमें परिषद की अति महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारत में कृषि सेक्टर के माध्यम से विश्व की लगभग 17.6 प्रतिशत जनसंख्या का एवं 15 प्रतिशत पशुधन संख्या का भरण–पोषण किया जाता है, जबकि भारत में विश्व का मात्र 4.2 प्रतिशत जल एवं विश्व के कुल भूमि क्षेत्रफल में से मात्र 2.4 प्रतिशत की ही उपलब्धता है। इस वर्ष परिषद द्वारा मुख्य तौर पर बढ़ी हुई गुणवत्ता के साथ विभिन्न जैविक व अजैविक प्रतिबलों के प्रति सहिष्णु नई किस्मों व संकरों के विकास पर बल दिया गया है। इस वर्ष कुल 372 नवीन किस्में विकसित की गईं जिनमें अनाज की 200; तिलहन की 49; दलहन की 47; व्यावसायिक फसलों की 47 और चारा फसलों की 29 किस्में शामिल हैं। इसके अलावा चावल, गेहूं, मक्का, बाजरा और मसूर की आठ जैव–प्रवर्धित (बायो–फोर्टिफाइड) किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। इन किस्मों में कुपोषण के विरूद्ध लड़ाई में आयरन, जिंक, सेलेनियम और प्रोटीन की उच्च मात्रा है। बागवानी फसलों में इस वर्ष 86 नवीन किस्में विकसित कीं गईं जिनमें सब्जी फसलों की 62; फलदार फसलों की 2; मसालों की 22 किस्में शामिल हैं। धान के भूसे का प्रबंध करना उत्तरी राज्यों में एक बड़ी चुनौती रही है। परिषद द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से इस विषय को बड़ी गंभीरता से लिया गया है। इस दिशा में जहां एक ओर पोर्टेबल ब्रिकेट बनाने के यंत्र का उपयोग करके धान के भूसे अथवा पराली से ईंधन की गुटिकाएं (टिकुली) तैयार की गईं वहीं खेत में ही पराली जलाने से होने वाले पर्यावरण नुकसान को भी रोका गया।

वर्ष 2017–18 के लिए देश में कुल 284.83 मिलियन टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हुआ है जो कि वर्ष 1950–51 की तुलना में 5.60 गुणा अधिक है। बागवानी के क्षेत्र में पिछले साल के मुकाबले 4.8 प्रतिशत वृद्धि के साथ इस वर्ष 305 मिलियन टन का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ है। दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए देशभर में 150 सीड हब स्थापित किए गए जिसके परिणामस्वरूप दालों का 25.23 मिलियन टन रिकॉर्ड उत्पादन हुआ।

किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने में कृषि विस्तार को महत्व देते हुए कुल 25 नए कृषि विज्ञान केन्द्र अनुमोदित किए गए जिससे अब कृषि विज्ञान केन्द्रों की संख्या पिछले वर्ष के 681 के मुकाबले बढ़कर 704 हो गई है। वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में भारतीय विश्वविद्यालयों की स्थिति में सुधार लाने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग तैयार की गई।

इस वर्ष एनएएससी परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नए सभागार का उद्घाटन किया गया जो कि एक विशिष्ट उपलब्धि है। इस सभागार की कुल क्षमता 1200 व्यक्ति है। साथ ही इसकी डिजाइन को इस प्रकार लचीला बनाया गया है कि इसे साथ–साथ 400 व्यक्तियों की क्षमता वाले तीन सभागार हिस्सों में इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ ही इसमें कुल सात छोटे कमेटी कक्ष अथवा प्रशिक्षण कक्ष भी हैं। इसकी कुल लागत 165 करोड़ रूपये है। यह एक विश्व स्तरीय सुविधा है जिस पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को गर्व है। पिछले कुछ वर्षों में देश में पहली बार दिल्ली से बाहर असम एवं झारखण्ड में आईएआरआई की बुनियाद रखी गई थी। इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष आईएआरआई–झारखण्ड में प्रशासनिक ब्लॉक का उद्घाटन किया गया है। हमारा मानना है कि देश में दूसरी हरित क्रान्ति का प्रादुर्भाव देश के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भूभाग में होगा और निश्चित रूप से असम व झारखण्ड में आईएआरआई जैसे अग्रणी संस्थान की स्थापना करने से इसमें प्रगति होगी।

उन्नत तकनीकों, किस्मों व अनुसंधान परिणामों को शीघ्रता से किसानों तक पहुंचाने में राजभाषा हिन्दी की विशेष भूमिका है। हमारे देश में उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम तक हिन्दी को सहजता से समझा व बोला जाता है और किसानों तक अनुसंधान परिणामों को सीधे तौर पर पहुंचाने में हिन्दी की महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता। इस दिशा में परिषद द्वारा हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा आलोक'' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका के माध्यम से परिषद के नवीन अनुसंधान व तकनीकों के बारे में विभिन्न हितधारकों तक जानकारी को सुलभ कराया जा सकेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रस्तुत सारगर्भित जानकारी सुधी पाठकों का ज्ञानवर्धन करेगी। मैं, पत्रिका के सम्पादन मंडल द्वारा किए गए योगदान की सराहना करता हूं और इसकी सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

त्रि॰ महापात्र

(त्रिलोचन महापात्र)

सम्पादकीय

इसमें संशय नहीं कि हम पर अंग्रेजी का राज रहा, मुगलों का राज रहा जिसके फलस्वमरूप भारत में अंग्रेजी ओर उर्दू का बोलबाला बढ़ा। हम औपनिवेशिकता के अधीन थे इसलिए हम पर शासकों की भाषाएं थोपी गई। किन्तु कोई देश अपनी पहचान, अपनी संस्कृति और सभ्यता की पहचान अपनी भाषा या भाषाओं के जरिए ही रख सकता है और भारत एक बहुभाषी देश है जहां संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 राजभाषाओं के अलावा भी कई भाषाएं, तमाम समृद्ध बोलियां हैं जिन्हें बोली न कह कर भाषा ही कहा गया है। वे सब मिलकर भारतीयता के हक में एक बड़े प्रभामंडल का निर्माण करती हैं। जैसे बिना अभिव्यक्ति के व्यक्ति गूंगा है, वैसे ही बिना अपनी भाषा या भाषाओं के कोई भी देश गूंगा है।

हिन्दी को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस एवं व्यापक स्वरूप प्रदान, करने के उद्देश्य से और यह रेखांकित करने के उद्देश्य से कि हिन्दी केवल साहित्य की भाषा ही नहीं, बल्कि आधुनिक ज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में एक सक्षम भाषा है, परिषद में राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा आलोक' को प्रकाशित करने की संकल्पना की गई है।

इस वार्षिक पत्रिका, राजभाषा आलोक–2018 का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसमें नवीनतम जानकारी के साथ कृषि के विभिन्न विषयों पर सरल एवं सहज भाषा में लिखे आलेखों का संकलन किया गया है तथा 'प्रभाग परिचय' की श्रृंखला में इस बार प्राकृतिक संसाधन एवं प्रबंधन के अधिदेश, उपलब्धियों तथा विजन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त् परिषद एवं इसके संस्थानों में वर्षभर आयोजित की गई गतिविधियों के अंतर्गत हिन्दी् से जुड़े कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों आदि का विवरण तथा सभी संस्थानों से निकलने वाले हिन्दी के विभिन्न प्रकाशनों को भी इसमें शामिल किया गया है। 'विविधा' खण्डव में पाठकों को मार्मिक कहानी तथा भावप्रवण कविताएं पढ़ने को मिलेंगी। आशा है आपको यह अंक पसन्द आएगा। सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाओं व सुझावों का स्वागत है जो हमें निरन्तर बेहतर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

– संपादक मंडल

भाकृअनुप
ICAR

राजभाषा आलोक

वार्षिकांक: 2018
(अंक 22)

संरक्षक
डॉ. त्रिलोचन महापात्र
महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प.

परामर्श
डा. एस के सिंह
कार्यकारी परियोजना निदेशक
(डीकेएमए)

संपादन
सीमा चोपड़ा
निदेशक (राजभाषा)
एवं
मुरारी लाल गुप्ता
उप निदेशक (राजभाषा)

संकलन एवं सहयोग
हरि ओम
निजी सचिव

प्रोडक्शन
डॉ वी.के. भारती
एवं
अशोक शास्त्री

विषय-सूची

आलेख			पृष्ठ संख्या
1.	परिषद का प्रयास – कृषि में अग्रसर चहुंमुखी विकास	त्रिलोचन महापात्र, एस.के. मलिक एवं महेश गुप्ता	1
2.	कृषिकोशः कृषि संबंधी ज्ञान के प्रसार हेतु एक डिजिटल आधानी (रिपोजिटरी)	निधि वर्मा, अमरेन्दटर कुमार, सीमा चोपड़ा, शैली शर्मा एवं पी.एस.पांडे	14
3.	उत्पादन और उत्पादकता की निरंतर बढ़ोतरी के लिए की चावलध्यान की नई प्रजातियां	दिनेश कुमार, सतिन्दर पाल, पी. आर. चौधरी, डी. के यादव	18
4.	बारानी कृषि संस्थान और राजभाषा की उपयोगिता	डॉ संतराम यादव	21
5.	रेबीज–एक घातक पशुजन्य रोग	जी बी मंजुनाथ रेड्डी, अवधेश प्रजापति, योगिशाराध्या आर	24
6.	अजोलाः पशुधन के लिए एक पोषक पशु आहार पूरक	के गिरिधर और ए.वी. ईलनगोवन	28
7.	किसानों की आकांक्षाओं पर खरा उतरता अटारी–10	डॉ. वाई.जी. प्रसाद एवं डॉ. संतराम यादव	30
8.	बकरियों में कृत्रिमा गर्भाधान की बढ़ती महत्ता	चेतना गंगवार, एस.डी. खर्चे, अनुज कुमार सिंह सिकरवार, बी. राय एवं एम.एस. चौहान	33
9.	समेकित कृषि प्रणाली (आई.एफ.एस.)– किसानों की सतत आय व रोजगार के लिए उत्तम विकल्प	अशोक कुमार, मोहम्मद आरिफ, आर. पी. यादव व एस. के. सिंह	36
10.	कम उपयोगी जामुन फल के चमत्कारी एवं लाभकारी लाभ	प्रेरणा नाथ् एस.जे. काले एवं मृदुला डी	39
11.	पथरीली जमीन एवं जल कमी क्षेत्रों के लिए ड्रैगन फल की संभावनाएं	योगेश्वर सिंह, धनंजय नांगरे, महेश कुमार, पी सुरेश कुमार, पी बी तावरे एवं एन पी सिंह	42
12.	आय उत्सर्जन में कृषि प्रसंस्करण की स्थापना एवं उपयोगिता	निधि अग्रवाल	46
13.	भारत के बहुतायत लघु किसानों को एकत्रित करने की जरूरत एवं रणनीतियां	विनायक निकम एव अबिमन्यु झाझड़िया	48
14.	प्राकृतिक संसाधन प्रबंध प्रभाग का परिचय		50
	भा.कृ.अ.प. के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त राजभाषा संबंधी गतिविधियां		54
	विविधा		115

आलेख

परिषद का प्रयास - कृषि मे अग्रसर चहुंमुखी विकास

त्रिलोचन महापात्र*, एस.के. मलिक** एवं महेश गुप्ता***

कृषि योग्य उर्वरा भूमि, विविधतापूर्ण मौसम के अनुकूल छः ऋतुएं, उत्तर में राष्ट्र प्रहरी एवं अनेकानेक नदियों का उद्‌भव विराट हिमालय, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में अपार समुद्रीय सम्पदा, विपुल जैव विविधता, अविरल प्रवाहिनी नदियां, भरपूर खनिज एवं वन सम्पदा, सर्वाधिक पशुधन, विविधतापूर्ण संस्कृति, मेहनतकश किसान एवं अनुसंधान प्रयास में निरन्तर प्रयासरत हमारे वैज्ञानिक जैसी विशेषताएं भारत राष्ट्र को एक वैभव सम्पन्न राष्ट्र बनाने में मददगार हुई हैं। कृषि, हमारे देश की जीवन रेखा है और देश का समग्र विकास कृषि क्षेत्र का विकास किए बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है। देश की खाद्य सुरक्षा को सतत आधार पर सुनिश्चित करने में जहां हमारे वैज्ञानिकों द्वारा किए गए सफल अनुसंधान परिणामों, उन्नत तकनीकों व कम समय में अधिक उपज देने वाली एवं जलवायु अनुकूल किस्मों का योगदान है वहीं अपनी कड़ी मेहनत से इसे खेतों में साकार रूप प्रदान करने का श्रेय किसानों को जाता है। माननीय प्रधानमंत्री जी के शब्दों में ''इंडिया के एक प्रहरी हमारे किसान, हमारे अन्नदाता हैं जो देश का भरण–पोषण करने के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा कर रहे हैं; दूसरे प्रहरी हमारे वैज्ञानिक बंधु हैं जो नई–नई तकनीक विकसित कर किसान का जीवन आसान कर रहे हैं।'' यहां हम, कृषि से जुड़े भगवद्‌गीता के एक श्लोक का उद्धरण प्रस्तुत करना चाहेंगे:

अन्नादभवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः ।
यज्ञाद्‌भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्‌भवः ।।

अर्थात् सभी प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है, वर्षा की उत्पत्ति यज्ञ सम्पन्न करने से होती है और यज्ञ की उत्पत्ति नियत कर्म करने से होती है। गीता का यह श्लोक भारत में कृषि के प्राचीन इतिहास और उसके महत्व को दर्शाता है। भारत में प्राचीन काल से ही खेती–बाड़ी के प्रमाण मिलते हैं। 8000 बीसी में उत्तर–पश्चिम में मेहरगढ़ में और दक्खन, मध्य भारत, कश्मीर में खेती–बाड़ी का पता चलता है। इसी प्रकार 6000 बीसी में मेहरगढ़ एवं विंध्य में अनाज की खेती का पता चला है। हडप्पा और मोहनजोदड़ो में की गई खुदाई से कृषि की बेहतर प्रणाली होने का प्रमाण मिलता है। इसी प्रकार हडप्पा तथा मोहनजोदड़ो में अनाज भण्डार अथवा धान्यागार की मौजूदगी से पता चलता है कि उस समय के लोग सरप्लस धान्य का उत्पादन करते थे। हमारे चारों वेदों, अरण्याकस, सूत्र साहित्य, सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, उपनिषद, रामायण व महाभारत, पुराण, बुद्ध एवं जैन साहित्य में तथा कृषि पराशर, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, पाणिनी के अष्टध्याय, तमिल में संगम साहित्य, मनुस्मृति, वराहमिहिर की वृहत संहिता (गणित एवं ज्योतिष विज्ञान) में खेती–बाड़ी के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है । उपरोक्त साहित्य की रचना 6000 B.C. से 1000 A.D. के बीच होने की संभावना है। साथ ही उपरोक्त साहित्य में जैव–विविधता एवं कृषि (पशु पालन सहित) के बारे में जानकारी भी उपलब्ध है। प्राचीन पुस्तक अमरकोश के अध्याय भूमिवर्ग में मिट्‌टी की उर्वरता, सिंचाई और भौतिक विशेषताओं के आधार पर बारह प्रकार की भूमि बताई गई है।

राष्ट्र की इसी प्राचीन परम्परा को आगे बढ़ाते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपनी स्थापना के नौ दशक सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। नौ दशकों की यात्रा किसी भी संगठन के लिए बहुत बड़ी होती है और हमें खुशी है कि परिषद द्वारा अपनी इस यात्रा को न केवल सफलतापूर्वक पूरा किया गया है वरन् अनेक चुनौतियों के बावजूद समय–समय पर अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियां भी हासिल की गईं हैं। परिषद द्वारा किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप देश की कृषि व्यवस्था और कृषि उत्पादन को बढ़ाने में मदद मिली है। इसके परिणामस्वरूप आज हमारा देश खाद्य सुरक्षा हासिल कर सका है बल्कि 130 करोड़ की जनसंख्या वाला यह विशाल देश वर्ष 2013 में खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत समस्त देशवासियों को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने की गारंटी दे सका है।

*सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प, **प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प, ***सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भा.कृ.अनु.प

मानव सभ्यता के विकास में कृषि की प्रमुख भूमिका रही है तथा इस क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व प्रगति के कारण ही विश्व की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में गतिमान परिवर्तन हुए हैं। वर्तमान समय में टिकाऊ कृषि के लिए संसाधनों का सफल प्रबंध करने की आवश्यकता है जिसमें यह ध्यान रखना होगा कि हमारी भावी पीढ़ियों के लिए कोई संकट उत्पन्न न हो। जीवन–यापन के लिए कृषि से लेकर अब कृषि उत्पादन में प्रचुरता की स्थिति तक पहुंचने के दौरान अनेक रूपांतरकारी अवस्थाएं आई हैं। वर्तमान स्थिति में, कृषि सेक्टर को औद्योगिक सेक्टर के बराबर मानने पर बल दिया जा रहा है ताकि खेती से होने वाली आय पर्याप्त और टिकाऊ हो सके। तकनीकों के माध्यम से किसानों को ऐसी युक्तियां व संसाधन उपलब्ध हुए हैं जिनसे खेती करना अधिक आसान और टिकाऊ हो गया है। यदि हम स्वतंत्रता प्राप्ति को एक आधार वर्ष मानें तो स्वतंत्रता मिलने के उपरान्त कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिलती है जिसमें परिषद की उल्लेखनीय भूमिका है।

लगातार बढ़ रहे शहरीकरण के बावजूद, आज भी भारत मूलतः गांवों में ही बसता है जिनमें लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या है। राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में कृषि की एक महत्वपूर्ण भूमिका है और लगभग 58 प्रतिशत कार्यबल अभी भी अपनी आजीविका के लिए खेती–बाड़ी पर ही आश्रित है तथा कृषि राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) एवं निर्यात का एक प्रमुख घटक बनी हुई है। कृषि तथा उससे सम्बद्ध सेवाओं में लगा यह विशाल जनबल केवल उत्पादक ही नहीं, अपितु देश को सबसे बड़ा बाजार देने वाला उपभोक्ता वर्ग भी है। देश की लगभग तीन चौथाई जनसंख्या वाले इस विपुल वर्ग की क्रियाशक्ति बढ़ने से ही देश का उद्योग, व्यापार, रोजगार और कला कौशल समुन्नत होगा। भारत में कृषि सेक्टर के माध्यम से विश्व की लगभग 17.6 प्रतिशत जनसंख्या का, 15 प्रतिशत पशुधन संख्या का भरण–पोषण किया जाता है, जबकि भारत में विश्व का मात्र 4.2 प्रतिशत जल एवं विश्व के कुल भूमि क्षेत्रफल में से मात्र 2.4 प्रतिशत की ही उपलब्धता है। कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान करते हुए खाद्य व पोषणिक सुरक्षा के क्षेत्र में राष्ट्र को आत्मनिर्भरता प्रदान करने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी स्थापना के सफलतापूर्वक नौ दशक पूरा करने की यात्रा के दौरान देश को आयातक की भूमिका से खाद्यान्न की दृष्टि में एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के साथ–साथ अनेक जिंसों के मामले में एक निर्यातक राष्ट्र बनाने में परिषद द्वारा सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए गए हैं। वर्तमान में भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन की दर को बनाये रखना एवं किसानों की आय को वर्ष 2022 तक दोगुना करने पर केन्द्रित है। इसमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अति महत्वपूर्ण भूमिका है। अपनी इस भूमिका को ध्यान में रखते हुए परिषद द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। खेती को उत्पादन केन्द्रित बनाने के साथ–साथ आय केन्द्रित बनाने का प्रयास जारी हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर देशभर के हितधारकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए गणतंत्र दिवस 2018 की परेड़ में पूरी तरह से कृषि को समर्पित ''मिश्रित खेती – खुशियों की खेती'' तथा लगातार दूसरे वर्ष गणतंत्र दिवस 2019 की परेड़ में ''किसान गांधी'' स्लोगन से सजी एवं भारतीय कृषि के विविध रंगों को संजोने वाली मनमोहक झांकी को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह, कृषि एवं किसान के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति कृषि के महत्व को दर्शाता है। इस झांकी के माध्यम से दूध उत्पादन, स्वदेशी नस्लों और पशुधन आधारित जैविक कृषि के महत्व को प्रदर्शित किया गया तथा साथ ही ग्रामीण समुदाय की खुशहाली के लिए कृषि व पशुधन को बेहतर बनाने हेतु गांधी जी के दृष्टिकोण को चित्रित किया गया। ''किसान गांधी'' झांकी को माननीय रक्षा मंत्री द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया जो कि परिषद परिवार के लिए गर्व का विषय है।

गणतंत्र समारोह 2018 में भा.कृ.अनु.प. की झांकी

गणतंत्र समारोह 2019 में भा.कृ.अनु.प. की झांकी

बुनियादी सुविधा विकास

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अनुसंधान एवं विकास के अलावा अपनी बुनियादी सुविधाओं का भी निरंतर

आधुनिकीकरण किया जाता है। इसी क्रम में इस वर्ष एनएएससी परिसर में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नए Convention सेन्टर का उद्घाटन किया गया जिसमें कई सभागार एवं आधुनिक सुविधाएं मौजूद हैं। निःसंदेह एक विशिष्ट उपलब्धि है। इसकी कुल क्षमता 1200 व्यक्ति है। साथ ही इसकी डिज़ाइन को इस प्रकार लचीला बनाया गया है कि इसे साथ–साथ 400 व्यक्तियों की क्षमता वाले तीन सभागार हिस्सों में इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ ही इसमें कुल सात छोटे कमेटी कक्ष अथवा प्रशिक्षण कक्ष भी हैं। इसकी कुल लागत 165 करोड़ रूपये है। यह एक विश्व स्तरीय सुविधा है जिस पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को गर्व है। पिछले कुछ वर्षों में देश में पहली बार दिल्ली से बाहर असम एवं झारखण्ड में आईएआरआई की बुनियाद रखी गई थी। इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष आईएआरआई–झारखण्ड में प्रशासनिक ब्लॉक का उद्घाटन किया गया है। हमारा मानना है कि देश में दूसरी हरित क्रान्ति का प्रादुर्भाव देश के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर भूभाग में होगा और निश्चित रूप से असम व झारखण्ड में आईएआरआई जैसे अग्रणी संस्थान की स्थापना करने से इसमें प्रगति होगी।

नवनिर्मित कनवेंशन सेन्टर

कृषि अनुसंधान

देश की लगातार बढ़ रही जनसंख्या एवं पशुधन संख्या का भरण पोषण करने, भोजन में पौष्टिकता का समावेश करने, कृषि को एक लाभकारी उद्यम बनाने, राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भरता हासिल करने और किसानों की आय को बढ़ाने की दिशा में कृषि तकनीकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। कृषि उत्पादन में वृद्धि करना और उसमें टिकाऊपन लाना अति महत्वपूर्ण है जिसमें कि नित नवीन अनुसंधान के माध्यम से नई तकनीकों का विकास करने और उन्हें यथाशीघ्र किसानों तक पहुंचाने का विशेष महत्व है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन की वर्तमान चुनौतियों को ध्यान में रखकर जलवायु अनुकूल किस्मों की तकनीकों के विकास पर विशेष बल देने की जरूरत होती है।

परिषद द्वारा उठाई गईं नीतिगत पहलों के परिणामस्वरूप ही वर्तमान वर्ष में देश में खाद्यान्न का रिकॉर्ड उत्पादन संभव हुआ है। वर्ष 2017–18 में कुल 284.83 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन हुआ जो कि वर्ष 2013–14 में हासिल 265.04 मिलियन टन की तुलना में लगभग 20 मिलियन टन (लगभग 7.5 प्रतिशत) अधिक है। वर्ष 2017 के दौरान देश में कुल दुग्ध उत्पादन 165.4 मिलियन टन, मीट उत्पादन 7.4 मिलियन टन रहा। सितम्बर, 2018 के अनुसार, भारत में खरीफ फसल का कुल बुवाई क्षेत्रफल 105.78 मिलियन हेक्टेयर था। बागवानी सेक्टर में, वर्ष 2017–18 में बागवानी फसलों का ट्रिपल सेंचुरी पार करते हुए रिकॉर्ड 305.40 मिलियन टन उत्पादन दर्ज किया गया जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 3.7 प्रतिशत ज्यादा है जबकि पिछले पांच साल के औसत उत्पादन की तुलना में 10 प्रतिशत ज्यादा है। इसमें फल उत्पादन 97.35 मिलियन टन है जो कि पिछले वर्ष की तुलना में 4.8 प्रतिशत अधिक है। सब्जी उत्पादन लगभग

भारतीय कृषि: उत्पादन स्थिति

मद	1950–51 (मिलियन टन उत्पादन)	2017–18 (मिलियन टन उत्पादन)	गुणा वृद्धि
खाद्यान्न	50.83	284.83	5.60
दलहन	8.41	25.23	3.00
तिलहन	5.16	31.10	6.00
कपास	0.52	5.93	11.40
गन्ना	57.05	376.90	6.60
बागवानी	96.56 (1991–92)	305.40	9.73
दूध	17.00	165.40	9.73
मत्स्य	0.75	11.41	15.21
अण्डा	1830 करोड़	87050 करोड़	47.57
मांस	1.9 (1998–99)	7.37	3.88

187.5 मिलियन टन है जो कि पिछले वर्ष के मुकाबले में 3.5 प्रतिशत अधिक है। विशेषकर प्याज, टमाटर एवं आलू के उत्पादन में पिछले वर्ष की तुलना में क्रमशः 3.7 प्रतिशत, 2 प्रतिशत एवं 5.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

जलवायु परिवर्तन के प्रति कृषि को अनुकूल बनाने की दिशा में वर्ष 2020, 2050 और 2080 के भावी जलवायु परिदृश्य के अंतर्गत गेहूं की उपज क्षमता का अनुरूपण किया गया और इसकी तुलना इंफोक्रॉप – व्हीट मॉडल का उपयोग करके आधार अवधि (1976–2005) से की गई। परिणामों से यह संकेत मिला है कि गेहूं की जलवायु क्षमता उपज में भावी जलवायु की दशा में मध्य भारत और देश के पूर्वी भागों में उल्लेखनीय रूप से कमी आने की आशंका है। स्थलाकृतियों, मृदा गहराई, ढ़लान, बनावट, जल निकासी, समुद्र से निकटता, लवणता एवं अम्लता के आधार पर, गोवा राज्य के लिए कुल 27 भूमि प्रबंधन इकाइयों (LMU) का मानचित्रण किया गया।

ड्रिप सिंचाई के माध्यम से जल उत्पादकता एवं लाभ में सुधार करने के प्रयासों के तहत इसकी डिजाइन विकसित की गई और इसका उपयोग ओड़िशा राज्य के एक सिंचित कमाण्ड क्षेत्र में चावल आधारित फसल अनुक्रम में जल उत्पादकता एवं लाभप्रदता में सुधार करने में किया गया। भारतीय मृदाओं में जिंक एवं बोरोन की कमी की स्थिति का मूल्यांकन किया गया और कुल 58 कृषि पारिस्थितिकीय उप क्षेत्रों (AESR) को शामिल करते हुए देशभर में लगभग 2.04 लाख भू संदर्भित मृदा नमूनों के आधार पर मानचित्रण किया गया। परिषद द्वारा कुल 19 अन्वेषण कार्यक्रम चलाए गए और 1502 प्राप्तियों (Accessions) का संग्रह किया गया जिसमें 1063 खेती योग्य एवं 439 वन्य प्राप्तियां शामिल थीं। इस वर्ष पादप जननद्रव्य पंजीकरण समिति (PGRC) की दो बैठकें आयोजित की गईं और कुल 110 आनुवंशिक स्टॉक को पंजीकृत किया गया । इसी प्रकार बागवानी में, बेर के 10, अमरूद के 2, अम्लीय नीबू के 8 तथा मनीला इमली के 27 जननद्रव्यों का संकलन किया गया। पोषणिक दृष्टि से समृद्ध आलू क्लोन का विकास किया गया। पशुओं और पोल्ट्री की नौ नई समष्टियों (Populations) का नस्लों के रूप में पंजीकरण किया गया जिसमें गोपशु, अश्व, सूअर, याक, गीज़, बत्तख तथा पोल्ट्री प्रत्येक की एक–एक और बकरी की दो नस्लें शामिल हैं। पहली बार याक, बत्तख एवं गीज़ की स्वदेशी नस्लों को पंजीकृत किया गया। इन नई नस्लों को मिलाकर अब देश में पंजीकृत स्वदेशी नस्लों की संख्या 169 हो गई है जिसमें गोपशु की 41; भैंस की 13;

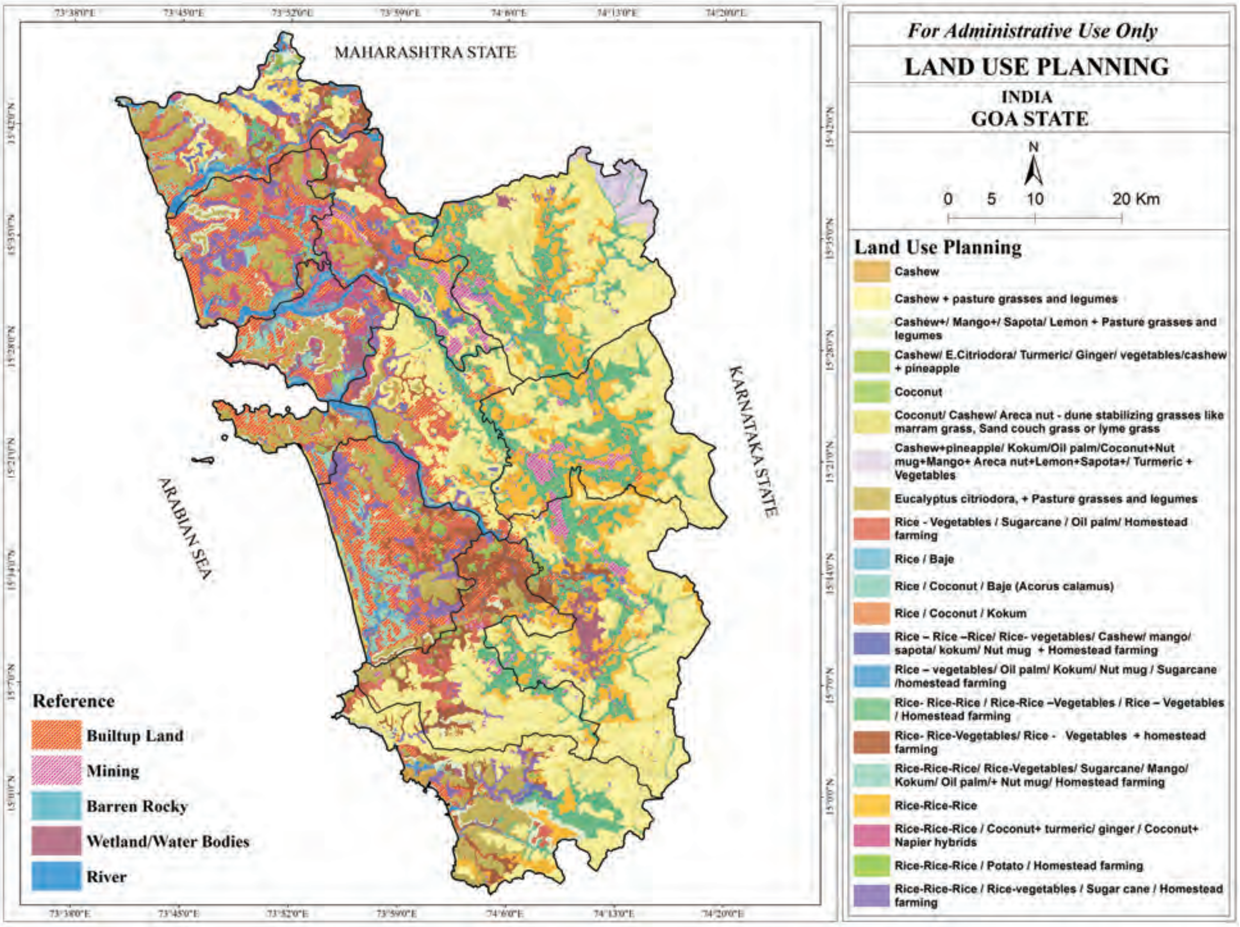

बकरी की 28; भेड़ की 42; अश्व व टट्टू की 7; ऊंट की 9; सूअर की 7; गधे की 1; याक की 1; बत्तख की 1; गीज़ की 1; तथा पोल्ट्री की 18 नस्लें शामिल हैं। व्यावसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्वदेशी मत्स्य हिल्सा (टेनुआलोजा इलिशा), रोहू (लेबियो रोहिता) तथा मागुर (क्लेरियस मागुर) के सम्पूर्ण जीनोम का अनुक्रमण किया गया, एकत्रीकरण किया गया और उसकी व्याख्या की गई। इससे वृद्धि, रोग प्रतिरोधिता आदि से जुड़े जीनों का पता लगाने में मदद मिलेगी। भाकृअनुप द्वारा अभी तक कुल 623 जिला कृषि आकस्मिकता योजनाएं तैयार की गईं और उन्हें परिषद तथा कृषि व सहकारिता विभाग की वेबसाइट पर अपलोड किया गया तथा साथ ही इन्हें राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को भी सुलभ कराया गया।

फसल सुधार

अनुसंधान परिणामों को किसानों के खेतों तक पहुंचाने के प्रयोजन से परिषद द्वारा वर्ष 2018 के दौरान चावल की 94; गेहूं की 27; मक्का की 26; मंडुआ की 5; बाजरा व ज्वार की 15; जौ की 5; और न्यूट्रि सिरियल की 18 किस्मों सहित अनाजों की कुल 200 से अधिक पैदावार देने वाली किस्मों/संकर किस्मों को देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खेती के लिए जारी किया गया। तिलहनी फसलों में तोरिया–सरसों व अलसी प्रत्येक की 7; सोयाबीन की 10; मूंगफली की 11; तिल की 4; कुसुम व सूरजमुखी प्रत्येक की 3; एवं अरंडी की 4 किस्मों सहित तिलहन की कुल 49 अधिक पैदावार देने वाली किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता लाने के लिए देशभर में 150 सीड हब स्थापित किए गए थे जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ष दालों का 25.23 मिलियन टन रिकॉर्ड उत्पादन हुआ जबकि पिछले वर्ष भी दालों का 22.95 मिलियन टन रिकॉर्ड उत्पादन हुआ था। दलहन में, काबुली चने की 5; मूंग की 8; उड़द की 6; अरहर की 8; मसूर, हरी मटर और अरहर की 5–5; क्लस्टर बीन, राजमा, मोठबीन प्रत्येक की 1 और भारतीय बीन की 2 किस्म सहित दलहन की अधिक उपज देने वाली कुल 47 किस्मों को देश के विभिन्न पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खेती के लिए जारी किया गया। व्यावसायिक फसलों में अधिक पैदावार देने वाली कुल 47 किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया जिनमें कपास की 23; पटसन की 2; मेस्टा व केनॉफ प्रत्येक की 1; तथा गन्ना की 18 किस्में शामिल थीं। पशुधन का भरण पोषण करने के प्रयोजन से चारा फसलों में अधिक पैदावार देने वाली कुल 29 किस्मों/संकर किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया जिनमें चारा ग्वार और मकई प्रत्येक की 7; मार्वल घास की 2; अंजन घास की 3; राइसबीन ल्यूसर्न की 2 तथा नेपियर बाजरा हाइब्रिड, धामन घास, बरसेम चारा लोबिया, अपराजिता, चारा सिवान घास एवं कलिंग्डा प्रत्येक की 1–1 किस्म शामिल थी। चावल, गेहूं, मक्का, बाजरा और मसूर सहित विभिन्न फसलों की आठ जैव प्रवर्धित किस्मों को वर्ष 2018 के दौरान खेती के लिए अधिसूचित किया गया। चावल की किस्मों यथा डीआरआर धान 48 एवं डीआरआर धान 49 में जिंक तत्व की उच्च मात्रा है। प्रोटीन, जिंक तथा आयरन से भरपूर गेहूं की तीन किस्मों यथा एमएसीएस 4028; पूसा गेहूं 8777 तथा यूएएस 334 को खेती के लिए जारी किया गया।

बागवानी में, कुल 86 किस्मों की पहचान की गई। इनमें सब्जी फसलों (टमाटर, बैंगन, भिंडी, बंदगोभी, फूलगोभी, प्याज, फ्रेंचबीन, भारतीय बीन, मूली, केल (Kale), मिर्च, विंग्ड बीन, परवल, लौकी, खीरा, बथुआ, कद्दू, तोरई, हरी मटर, गोल तरबूज आदि) की 62 किस्में; फलदार फसलों (आम व पपीता) की 2 किस्में; एवं मसाला तथा कंदीय फसलों (इलायची, आलू, कसावा, अदरक, धनिया आदि) की 22 किस्में शामिल हैं। अमरूद की किस्म अर्का पूर्णा की पहचान खेती के लिए जारी करने के प्रयोजन से की गई है। यह किस्म पर्पल लोकल x इलाहाबाद सफेदा क्रास का एक संतति वंशक्रम है। इसमें निरन्तर फलन होता है, इसके फल मुलायम, गोल, मध्यम से बड़े आकार वाले (200–230 ग्राम) वाले होते हैं। इसका छिलका चमकदार होता है। इस किस्म में 10–120 ब्रिक्स कुल घुलनशील ठोस पदार्थ अंश (TSS) है। यह एक दोहरे प्रयोजन वाली किस्म है जो कि भोज्य तथा प्रसंस्करण दोनों प्रयोजनों के लिए उपयुक्त है। तमिल नाडु के पहाड़ी क्षेत्रों में केला का एनआरसीबी वंशक्रम 11 (मनोरंजितम किस्म) एक शानदार किस्म है जिसमें बेहतरीन सगंधीय एवं स्वादिष्ट गूदा पाया जाता है। यह एक उच्च उपजवर्धक सोमाक्लोनल किस्म है जिसमें अपने पैतृक की तुलना में 300 प्रतिशत अधिक उपज पाई जाती है। इसके फलों में काफी सुगंध होती है और ये 130 सेल्सियस पर शीत भण्डार में भी अपनी सुगंध कायम रखते हैं। परिषद के संस्थान भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (IIHR) में एक टमाटर संकर अर्का अभेद विकसित किया गया जो कि पर्णकुंचन रोग, जीवाण्विक मुरझान, अगेती एवं पछेती अंगमारी/झुलसा रोग का प्रतिरोधी है। इसमें ठोस, अंडाकार तथा मध्यम आकार के फल (90–100 ग्राम वजन) आते हैं। इसके अलावा, टमाटर की काशी अमन एवं काशी अमूल आशाजनक किस्में प्रदर्शित की गई है।

आलू की किस्म नीलकंठ के फल आकर्षक बैंगनी, अंडाकार तथा एकरूप होते हैं जिनमें छोटी–छोटी आंखें होती हैं और इसका गूदा हल्का पीला होता है। इसमें अन्य लाल त्वचा वाली घरेलू किस्मों की तुलना में उच्च प्रति–ऑक्सीकारक तत्व पाया जाता है। यह मुख्य मौसम, सब्जी के लिए

काशी अमन

आलू की किस्म नीलकंठ

काशी अमूल

कुफरी गंगा

उपयुक्त है। इसकी परिपक्वता अवधि मध्यम है तथा इसमें उच्च कंद उपज पाई जाती है। यह किस्म पछेता झुलसा रोग की प्रतिरोधी है। इसकी भण्डारण व पाक गुणवत्ता बहुत अच्छी है और यह उत्तर–मैदानी क्षेत्रों में उगाने के लिए उपयुक्त है। इसके अलावा आलू की एक अन्य किस्म कुफरी गंगा भी आशाजनक पाई गई है। शिमला मिर्च किस्म, अर्का अतुल्य एक F 1 संकर है जिसे उच्च उपज के साथ चूर्णिल आसिता प्रतिरोध के लिए विकसित किया गया है। इसका गुण यह है कि इसका पौधा लगातार विकसित होता रहता है और इसमें गहरे हरे रंग की पत्तियां, ठोस, मध्यम आकार के फल (100–120 ग्राम वजन) आते हैं। यह ताजी हरी सब्जी बाजार के लिए उपयुक्त है जिसे खरीफ तथा रबी दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है।

इसके अलावा इस वर्ष खरबूजे की किस्म अर्का श्री, फ्रेंचबीन की किस्म अर्का सुकोमल, वेलवट बीन की किस्म अर्का शुभ्रा, पालक की किस्म थार हरीपर्ण, तोरई की किस्म थार तापिश, कुन्दरू की थार सुन्दरी, आलू की कुफरी गंगा, कुफरी लीमा, कसावा की श्रीरक्षा, रतालू की श्रीनिधि, श्री श्वेता, श्री हरिता आशाजनक पाई गईं जिन्हें खेती के लिए जारी किया गया। डीओजीआर 16015 एक प्याज वंशक्रम विकसित किया गया जो रबी मौसम में खेती करने के लिए उपयुक्त है। इसके कंद गोलाकार एवं गहरे लाल रंग के होते हैं। यह एकरूप तथा जोड़ व तोर वाले कंदों से मुक्त किस्म है। इसमें 35.76 टन प्रति हेक्टेयर की विपणन योग्य उपज पाई गई है जो कि सर्वश्रेष्ठ तुलनीय किस्म भीमा शक्ति (33.63 टन प्रति हेक्टेयर) के मुकाबले में 24.43 प्रतिशत अधिक है।

रतालु की किस्म श्रीनिधि

डीओजीआर 1605

पालक की किस्म थार हरिपर्ण

बीज उत्पादन के क्षेत्र में इस वर्ष 1,16,999 क्विंटल प्रजनक बीजोत्पादन किया गया जिसमें प्रमुख अंश अनाज फसलों का है। इसी प्रकार इस वर्ष सभी श्रेणियों को मिलाकर गुणवत्ता बीज का कुल उत्पादन 3,66,059 क्विंटल के लक्ष्य की तुलना में 5,97,992 क्विंटल रहा। उत्पादन में 1,37,605 क्विंटल आधारीय बीज, 3,14,216 क्विंटल प्रमाणित बीज, 96,443 क्विंटल विश्वसनीय लेबल युक्त बीज और 49,728 क्विंटल खेत फसलों की रोपण सामग्री शामिल थी।

पशुधन सुधार

देसी नस्ल परियोजना के अंतर्गत गिर (24), साहीवाल (25) और कांकरेज (26) के सांडों को संतति परीक्षण के तीन विभिन्न सेटों में उपयोग किया गया । देशभर में पशु नस्ल में सुधार लाने के प्रयोजन से फ्रीजवाल, गिर, कांकरेज और साहीवाल सांड की हिमीकृत वीर्य खुराकें उत्पन्न करके उनका वितरण किया गया। गिर, कांकरेज और साहीवाल इकाइयों में क्रमशः 43.54, 46.21 एवं 44.80 प्रतिशत की गर्भाधान दर हासिल की गई। परियोजना प्रारंभ करने के बाद से 5,112 गिर, 1,957 कांकरेज और 1,326 साहीवाल मादा बछड़ियों का जन्म हुआ। मुर्राह सांड की हिमशीतित वीर्य खुराकें (183,563) तैयार की गईं, 56,820 वीर्य खुराकों का वितरण किया गया और 111,872 खुराकों को किसानों/गैर सरकारी संगठनों/विकास एजेन्सियों को बेचा गया। इसी प्रकार, नीली–रावी, जाफराबादी, भदावरी तथा सूरती भैंस नस्लों के लिए कुल 85,533 वीर्य खुराकें तैयार की गईं । भेड़ के आनुवंशिक सुधार के लिए 7,893 मादा भेड़ हेतु कुल 346 नर भेड़ का वितरण किया गया । अश्वों में पैतृकता का परीक्षण करना अनिवार्य हो गया है। जब किसी भी पैतृक की जानकारी नहीं हो तब अश्व के बच्चे की पैतृकता को सुनिश्चित करने के लिए सूक्ष्म सेटेलाइट आधारित जीनोटाइपिंग को अपनाया गया। पर्वतीय इलाकों में ग्रामीण पोल्ट्री उत्पादन के लिए उपयुक्त एक बहुरंगी दोहरे प्रयोजन

गिर गोपशु

कांकरेज गोपशु

उन्नत चूजा प्रजाति हिमसमृद्धि

वाला पक्षी, हिमसमृद्धि विकसित किया गया। 20 सप्ताह की आयु अवस्था में इस नस्ल के नर एवं मादा पक्षी का शरीर भार क्रमशः 1.8 किलोग्राम एवं 1.4 किलोग्राम दर्ज किया गया। इस वर्ष किसानों को उन्नत चूजा किस्मों के कुल 631,543 पक्षी वितरित किए गए।

इस वर्ष पेंग्बा (ऑस्ट्रियोब्रेमा बेलेंगेरी) के ग्रो–आउट संवर्धन प्रोटोकॉल विकसित किए गए। पेंग्बा, मणिपुर राज्य की एक अत्यधिक सम्मानित एवं संकटाकालीन स्वदेशी गौण कॉर्प है। अकेले कटला के साथ संवर्धन करने पर पेंग्बा का वृद्धि प्रदर्शन बेहतर पाया गया जिससे रोहू की तुलना में कटला के साथ इसकी बेहतर सुसंगतता का पता चलता है। पेंग्बा के ग्रो–आउट संवर्धन को किसानों के तालाबों में भी प्रदर्शित किया गया। स्वदेशी अलंकारिक मत्स्य नारायणी बार्ब, पेथिया नारायणी का संकलन कर्नाटक के शिमोगा में सीता नदी से किया गया। पालन के चार माह पश्चात् सेकेण्डरी लैंगिक लक्षण प्रदर्शित हुए। श्रोणिक पंख पर सफेद धारी के साथ नर कहीं अधिक रंगीन पाए गए।

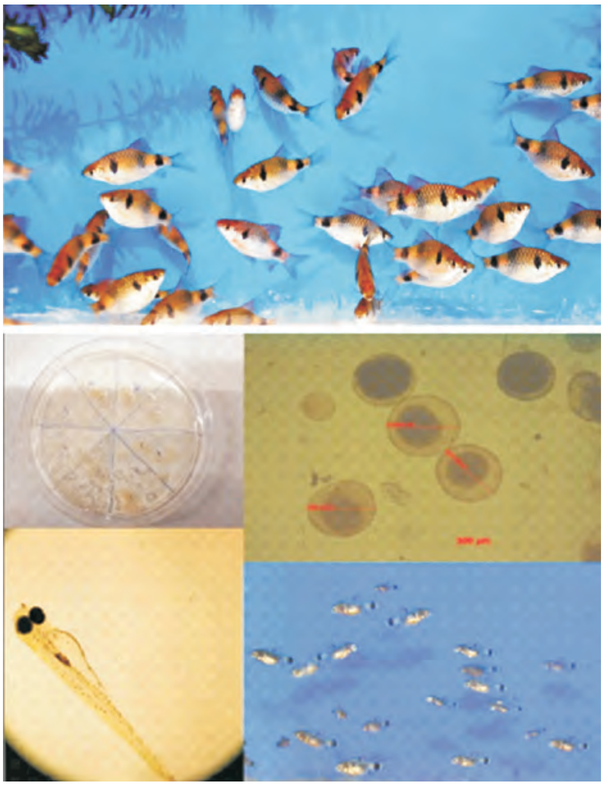

नारायणी बार्ब का ब्रूडस्टॉक एवं प्रजनन अवस्थाएं

गंगा–जमुना के मैदानी क्षेत्रों की नदियां, इंडियन मेजर कॉर्प (कटला, रोहू एवं मृगाल) व अन्य कॉर्प का प्राकृतिक वास स्थल हैं। अतः इस क्षेत्र की नदियों में इन मत्स्य प्रजातियों का संरक्षण करना एक प्रमुख राष्ट्रीय जैव विविधता संरक्षण लक्ष्य रहा। इस वर्ष, गंगा नदी में मत्स्य स्टॉक का पुनर्स्थापन किया गया। भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR - NBFGR), लखनऊ और भाकृअनुप – केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIFRI) द्वारा उत्तराखण्ड में ऋषिकेश; उत्तर प्रदेश में फतेहपुर घाट, इलाहाबाद; दश्वमेध घाट, वाराणसी; तथा छपरा घाट, बिठुर, कानपुर; एवं पश्चिम बंगाल में बैरकपुर, बालागढ़ और नबाद्वीप में गंगा नदी के विभिन्न विस्तार क्षेत्रों में मत्स्य बीज (6 लाख) की स्टॉकिंग की गई। समुद्री मत्स्योत्पादन के

अंतर्गत वर्ष 2017 में भारत की मुख्य भूमि के तटों से अनुमानतः 3.83 मिलियन टन समुद्री मत्स्य लदान हुआ जो कि 2016 की तुलना में लगभग 5.6 प्रतिशत अधिक है।

गंगा नदी में मत्स्य स्टॉक का पुनर्स्थापन

यंत्रीकरण एवं ऊर्जा प्रबंधन

विभिन्न कृषि प्रणालियों की उत्पादकता तथा लाभप्रदता बढ़ाने, उत्पादन एवं फसलोपरांत उत्पादन के लिए जरूरत आधारित और स्थान विशिष्ट यंत्रीकरण हेतु मशीनरी एवं ऊर्जा प्रबंधन प्रौद्योगिकियां विकसित की गई हैं। इनमें कुशल कृषि कार्य संचालन, संसाधन संरक्षण, प्रसंस्करण के लिए उन्नत मशीनरी; नवीनीकृत ऊर्जा प्रौद्योगिकियां; कृषिरत महिलाओं के लिए महिला अनुकूल एवं श्रम को कम करने वाले औजार; किसानों की आय को बढ़ाने के लिए पशु ऊर्जा का दक्षतापूर्ण उपयोग शामिल है। पारम्परिक विधि से गन्ना लगाने तथा आलू को बोने की विधि में अधिक समय लगता है जबकि यंत्रीकरण वाले राज्यों में किसान इन दोनों फसलों को उगाने के लिए दो प्रकार के प्लांटरों का उपयोग कर रहे हैं। इसलिए गन्ने की आंख (बड) एवं आलू की रोपाई करने के लिए एक आलू–सह–गन्ना बड प्लांटर का विकास किया गया। ज्वार तथा बाजरे की फसल में बालियों को अलग करने की समस्या के निदान के लिए एक सस्ता, हल्के वजन वाला, आसानी से चलाये जाने वाला सेपरेशन डिवाइस विकसित किया गया। यह उपकरण 1450 से लेकर 2100 मिमी. तक की ऊंचाई पर स्थित ज्वार व बाजरा की बालियों को अलग करने में उपयुक्त पाया गया है। उंगलियों में लगने वाली चोट में कमी लाने के लिए चाय की पत्ती तोड़ने वाला एक उपकरण विकसित किया गया। चाय की पत्तियों को तोड़ने की प्रक्रिया में पत्ती तोड़ने वालों के हाथ, भुजाओं की मांसपेशियों में दर्द होने लगता है और साथ ही उंगलियों में चोट लगने की भी आशंका बनी रहती है। चाय की पत्तियों को तोड़ने का कार्य अंगूठे और तर्जनी उंगली से किया जाता है। इसके लिए हाथ पर पहनने वाला एक पत्ती तुड़ाई उपकरण विकसित किया गया है जो नंगी उंगलियों से पत्तियों को चुनने की बजाय उन्हें काटने में सहायक होता है। फसलों के लिए पक्षी एक गंभीर खतरा होते हैं। मकई, ज्वार और बाजरा की फसल में पक्षियों के कारण लगभग 20–25 प्रतिशत तक नुकसान देखने को मिलता है। यदि खेत की अवस्थिति किसी सुनसान इलाके में है तो इस नुकसान में बढ़ोतरी भी हो सकती है। पक्षियों को भगाने के लिए एक उपकरण विकसित किया गया जो कि सौर ऊर्जा से चलता है। इस यूनिट में 3 मिनट के अंतराल पर 20 सेकण्ड तक मैकेनिकल और संगीतमय दोनों प्रकार की ध्वनियां उत्पन्न होती हैं जिससे फसल वाले खेत में पक्षियों के प्रवेश को रोका जा सकता है। इस इकाई की लागत 2,600 रूपये है जिससे कि प्रति फसल मौसम के दौरान लगभग 480 मानव घंटे की बचत होती है। धान के भूसे से ब्रिकेटिंग (कोयले की ईंट) तैयार करने वाली एक मशीन विकसित की गई। कई किसान धान की पराली को खेत में ही जला देते हैं जिसके कारण जहां एक ओर मृदा के पोषक तत्वों को नुकसान पहुंचता है वहीं इससे पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है और कई बार तो देखा गया है कि दिल्ली तथा इसके आसपास वाले इलाकों में सांस लेना भी दूभर हो जाता है। इस समस्या के समाधान हेतु ईंधन के रूप में प्रयोग करने के लिए धान के भूसे से ब्रिकेट्स (टिकुली) तैयार करने के लिए 50–60 किलो/घंटा क्षमता वाला एक हल्का उपकरण विकसित किया गया है। धान के भूसे एवं सोयाबीन के डंठलों को 70:30 के अनुपात में मिलाकर इसमें बाइंडर के तौर पर गाय के गोबर को मिलाया गया। इससे तैयार ब्रिकेट्स को प्रति किलोग्राम 6 रूपये तक बेचा जा सकता है। इस मशीन का उपयोग खेतों पर ही किया जा सकता है तथा तैयार ब्रिकेट्स का उपयोग घरेलू ईंधन के रूप में करके पारम्परिक ईंधन पर निर्भरता को कम किया जा सकता है।

गन्ना जूस उत्पादन के लिए गन्ने का छिलका हटाने वाला एक उपकरण विकसित किया गया। इस उपकरण में घूमने वाली शॉफ्ट के साथ धातु के चार ब्रश लगे हैं। जब गन्ने को धातुओं से बने इन चार ब्रशों के बीच घुसाया जाता है तब ब्रश के घूमने के कारण गन्ने का छिलका हट जाता है। इससे गन्ना जूस विक्रेता और गन्ना जूस बोतलबंद संयंत्र को लाभ मिलेगा। मिर्च को सुखाने के लिए एक बहुद्देश्यीय पॉलीहाउस सौर ड्रायर विकसित किया गया। यह मिर्च को अप्रत्याशित वर्षा से सुरक्षित रखता है और इसमें पारम्परिक शुष्कन की तुलना में 50 प्रतिशत कम समय लगता है तथा साथ ही मिर्च का रंग भी अच्छा बना रहता है। पटसन रेशा को उन्नत तरीके से सड़ाने के लिए एक बेहतर एवं उपयोगकर्ता अनुकूल प्रौद्योगिकी का विकास किया गया। पटसन रेशा को सड़ाने की पारम्परिक तकनीक में जहां प्रति हेक्टेयर में रूपये 10,575/– का शुद्ध लाभ मिलता था वहीं इसके मुकाबले में पटसन की त्वरित सड़न प्रौद्योगिकी को अपनाने से इसमें लगभग चार गुणा वृद्धि के साथ प्रति हेक्टेयर रूपये 32,500/– का शुद्ध लाभ मिलता है। वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने में पटसन को सड़ाने में त्वरित रेटिंग एक प्रभावी और लाभकारी प्रक्रिया है।

स्वचालित आलू सह गन्ना कली प्लांटर

पोर्टेबल धान पुआल ब्रिकेटिंग मशीन

पक्षियों को भगाने वाला सौर ऊर्जा चालित यंत्र

गन्ने का छिलका हटाने वाला यंत्र

मिर्च को सुखाने के लिए बहुद्देशीय पॉलीहाउस सौर ड्रायर

कृषि विस्तार

देश की राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (NARS) के अभिन्न अंग के रूप में अग्रिम पंक्ति प्रसार प्रणाली द्वारा किसानों के खेतों में फार्म प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से अनेक गतिविधियां चलाई गईं हैं। इस वर्ष प्रौद्योगिकी आकलन, परिष्करण, प्रदर्शन एवं क्षमता विकास कार्यक्रमों को चलाने के साथ–साथ अन्य पहल जैसे कि फार्मर्स फर्स्ट (Farmers FIRST), कृषि में युवाओं को आकर्षित करना एवं बनाए रखना (ARYA), जलवायु अनुकूल एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS), दलहन एवं तिलहन के कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि इनोवेशन (NICRA), दलहन बीज हब, एटिक (ATIC), मेरा गांव – मेरा गौरव एवं सरकार की मेगा योजनाओं के बारे में जागरूकता का सृजन करना आदि को भी लागू किया गया ताकि किसानों की सक्रिय भागीदारी के साथ प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग के माध्यम से किसान समुदाय को सहयोग किया जा सके। किसानों तक विज्ञान की पहुंच स्थापित करने में कृषि विस्तार को महत्व देते हुए कुल 25 नए कृषि विज्ञान केन्द्र अनुमोदित किए गए जिससे अब कृषि विज्ञान केन्द्रों की संख्या पिछले

वर्ष के 681 के मुकाबले बढ़कर 704 हो गई है। देश में अग्रिम पंक्ति प्रसार प्रणाली के तौर पर कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। इस वर्ष कुल 50,934 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए जिनके माध्यम से कुल 14.98 लाख किसानों, कृषिरत महिलाओं और प्रसार कार्मिकों को लाभ पहुंचाया गया। कुल 1.64 लाख ग्रामीण युवकों के लिए 6262 कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। इन प्रतिभागियों में 39.26 प्रतिशत युवा महिलाएं थीं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा 1.21 लाख प्रसार कार्मिकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें महिला प्रतिभागियों की संख्या 25.32 प्रतिशत थी। इस वर्ष कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 5.68 लाख प्रसार कार्यक्रम आयोजित किए गए जिन्हें परामर्श सेवाओं, नैदानिकी एवं क्लीनिक सेवाओं, प्रदर्शनियों, किसान सेमिनार, प्रक्षेत्र दिवस, मृदा स्वास्थ्य कैम्प एवं कार्यशाला के माध्यम से क्रियान्वित किया गया। दलहनी फसलों पर कुल 29,350 हेक्टेयर क्षेत्रफल को शामिल करते हुए राष्ट्रीय स्तरीय अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। इसी प्रकार तिलहनी फसलों पर कुल 26,481.25 हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल को शामिल करते हुए राष्ट्रीय स्तरीय अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। तिलहनी एवं दलहनी फसलों के अलावा, कुल 20,382 हेक्टेयर कृषि क्षेत्रफल में 199 फसलों पर कुल 68,440 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। अनाज फसलों में कुल 28,991 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए जिनमें 9,970 कृषि हेक्टेयर रकबे को शामिल किया गया। कदन्न फसलों पर 2,636; व्यावसायिक फसलों पर 2007; चारा फसलों पर 2,858 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। बागवानी फसलों में कुल 5,489 हेक्टेयर कृषि रकबे में सब्जियों (14,656), फलों (2,785), फूलों (511), मसालों (2,827) तथा रोपण फसलों (468) पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए। किसानों द्वारा अपनाई गईं पारम्परिक विधियों की तुलना में परिषद द्वारा आयोजित अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में उल्लेखनीय रूप से उपज अग्रता देखने को मिली। किसानों तक गुणवत्तापूर्ण बीज की आपूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए इस वर्ष अनाज, तिलहन, दलहन, व्यावसायिक फसलों, सब्जियों, फलों, फूलों, मसालों, चारा, वन्य प्रजातियों, औषधीय पौधों व रेशा फसलों की उन्नत किस्मों व संकर किस्मों का कुल 1.77 लाख क्विंटल बीज उत्पन्न करके उसे 19.98 लाख किसानों को उपलब्ध कराया गया। इसी प्रकार व्यावसायिक फसलों, सब्जियों, फलों, अलंकारिक, औषधीय एवं सगंधीय फसलों, रोपण फसलों, मसालों, कंदीय फसलों व चारा फसलों की श्रेष्ठ प्रजातियों व वन्य प्रजातियों की कुल 365.53 लाख गुणवत्ता रोपण सामग्री का उत्पादन करके उसे कुल 4.75 लाख किसानों को उपलब्ध कराया गया। गाय, भेड़, बकरी, भैंस तथा प्रजनक सांड की उन्नत नस्लों को उत्पन्न किया गया और इनकी आपूर्ति 7,638 किसानों को की गई। कुल 154.91 लाख आंगुलिक मछलियां उत्पन्न की गईं और उनकी आपूर्ति 3,890 किसानों को की गई। कुल 26,199 किसानों को पोल्ट्री पक्षियों की नस्लों/अण्डों/स्ट्रेन की आपूर्ति की गई। देश में दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयोजन से 97 कृषि विज्ञान केन्द्रों पर दलहन बीज हब स्थापित किए गए। इस वर्ष, अरहर, उड़द, मूंग, मसूर, चना, मटर तथा लैथाइरस का कुल 40,077.37 क्विंटल बीज उत्पन्न करके उसे किसानों को उपलब्ध कराया गया।

मसूर पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

उठी हुई क्यारियों पर सरसों की बुवाई

मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के तहत चार वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा पांच गांवों को अंगीकृत किया जाता है और वहां किसानों को कृषि संबंधी परामर्श एवं जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इस वर्ष परिषद के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के अंतर्गत 5091 वैज्ञानिकों को शामिल करके कुल 1311 वैज्ञानिक टीमें बनाई गईं। इस नवीन पहल से 'किसान के द्वार – विज्ञान का प्रसार' की अवधारणा को निश्चित रूप से बल मिला है। किसानों और ग्रामीण युवाओं द्वारा जमीनी स्तर पर किए गए इनोवेशन और विकसित की गईं कार्यप्रणालियों को सामने लाने और इनके लाभों को

साझा करने के लिए कुल 371 ग्रामीण इनोवेशन को दस्तावेजी रूप दिया जिनमें से 303 को कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रमाणित किया गया। बेहतर खेती–बाड़ी के लिए मृदा के स्वास्थ्य को बनाये रखना बहुत जरूरी होता है। इस कार्य को बढ़ाते हुए कुल 8,33,107 मृदा नमूनों की जांच की गई और कुल 8,79,574 मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को वितरित किए गए।

कृषि शिक्षा

''भारत में उच्चतर कृषि शिक्षा के सुदृढ़ीकरण एवं विकास'' योजना के अंतर्गत उच्चतर कृषि शिक्षा को बनाये रखने, इसकी गुणवत्ता व प्रासंगिकता के उन्नयन की दिशा में निरंतर प्रयास किया जा रहा है। इस क्रम में कृषि विश्वविद्यालयों की गुणवत्ता सुनिश्चित की गई और कृषि विश्वविद्यालयों को प्रत्यायन प्रमाण–पत्र (Accrediation Certificate) प्रदान किए गए। छात्रों व संकाय की सुविधाओं से संबंधित बुनियादी सुविधा को मजबूती प्रदान करने, उनका नवीकरण करने और उन्हें आधुनिक बनाने के लिए लगातार वित्तीय सहायता प्रदान की गई। 29 नए छात्रावासों, 14 नए परीक्षा भवनों, 62 स्मार्ट कक्षाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके आवासीय एवं शिक्षण सुविधाओं को मजबूती प्रदान की गई। कृषि विश्वविद्यालयों से सम्पूर्ण देश के ग्रामीण युवकों को उनके घर पर ही आसानी और तेजी से महत्वपूर्ण

पीजी प्रयोगशाला

पीजी प्रयोगशाला

पुस्तकालय सुदृढ़ीकरण

कम्प्यूटर लैब का सुदृढ़ीकरण

शैक्षणिक जानकारी/घोषणाएं/आयोजन के बारे में जानकारी देने के लिए एक कृषि शिक्षा पोर्टल–आईसीएआर (http:ekeducation.icar.gov.in) एक सिंगल विंडो प्लेटफार्म है। इस पोर्टल का उपयोग ऑन–लाइन मांग तथा विश्वविद्यालयों द्वारा प्रस्तुत सामयिक आंकड़ों के आधार पर शिक्षा विभाग, भाकृअनुप द्वारा वार्षिक रिपोर्ट के आंकड़ों के प्रबंधन, वित्तीय मंजूरी तथा निधि को जारी करने के लिए किया जा रहा है।

कृषि विकास की अग्रदूत – सूचना प्रौद्योगिकी

सूचना प्रौद्योगिकी के निरन्तर तेजी से विकासशील परिदृश्य में खेती भी अछूती नहीं है। आज हमारे किसान भाई मोबाइल फोन के माध्यम से घर बैठे ही नित नई तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल कर रहे हैं। ''डिजिटल इंडिया'' जैसी पहल ने भारतीय समाज में अति पिछड़े लोगों के जीवन में भी बदलाव लाया है। एक अध्ययन से यह पता चला है कि वर्ष 2020 तक स्मार्ट मोबाइल फोन के उपयोग में ग्रामीण भारत की भागीदारी बढ़कर 48 प्रतिशत तक हो जाएगी। सरकारी योजनाओं का किसानों को तुरंत एवं तेजी से लाभ पहुंचाने हेतु विभिन्न मोबाइल ऐप तथा अन्य टूल्स का विकास करने में कृषि आधारित सूचना एवं प्रौद्योगिकियां ''डिजिटल कृषि'' की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। आज हमारे किसान विभिन्न मोबाइल ऐप तथा वेब पोर्टल के माध्यम से इस प्रौद्योगिकी का लाभ उठा रहे हैं। भारत में कृषि विस्तार नेटवर्क के प्रमुख वाहक कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा इस प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ''जानकारी नेटवर्क'' को मजबूती प्रदान की गई। ''किसान कॉल सेंटर'' तथा पशुधन रोग पूर्वानुमान–मोबाइल ऐप (LDF मोबाइल ऐप) तथा वर्ष 2016 में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारंभ की गई ''किसान सुविधा'' एक व्यापक एवं बहुभाषीय मोबाइल ऐप है जिसके द्वारा वर्तमान मौसम पर, अगले पांच दिनों के पूर्वानुमान तथा बाजार मूल्यों आदि पर जानकारी प्रदान की जाती है। 2016 में प्रारंभ किए गए पूसा कृषि प्रौद्योगिकी मोबाइल ऐप का उद्देश्य भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR-IARI) तथा भाकृअनुप के अन्य संस्थानों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों एवं अन्य जानकारियों को किसानों तक पहुंचाना है। कृषि वोल्टेक प्रणाली (AVS) की स्थापना से किसानों की आय में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। आरएमएल फार्मर–कृषि मित्र, एग्रीऐप, खेती–बाड़ी, वॉट्स ऐप, कृषि ज्ञान, फसल बीमा, फार्म–ओ–पीडिया, पशु पोषण, तथा पोल्ट्री एवं कृषि बाजार के लिए ऐप शामिल हैं। इसके अलावा किसानों को विशेष जानकारी प्रदान करने वाले अनेक मोबाइल ऐप भी उपलब्ध हैं जैसे कि "riceXpert", ई–कपास, नेटवर्क एवं प्रौद्योगिकी प्रलेखन, नाशीजीवों एवं रोगों के लिए PulsExpert, म.चमेज सर्विलांस एवं परामर्श, बागवानी फसलों के लिए प्रणाली, ऑन लाइन नाशीजीव मॉनीटरिंग एवं परामर्श सेवाएं, नाशीजीव पूर्वानुमान ऐप, KRISHI डिजिटल डाटा पोर्टल। किसानों के लिए विकसित इन सभी मोबाइल ऐप के माध्यम से उनकी प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने और अधिक उत्पादन के माध्यम से उनकी आय को बढ़ाने में मदद की जा रही है। इसके अलावा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और राज्य कृषि विभागों द्वारा किसान समुदाय की मदद करने के प्रयोजन से क्षेत्रीय भाषाओं में भी अनेक अन्य सूचना प्रौद्योगिकी टूल्स विकसित किए गए हैं। कृषि क्षेत्र में ऐसे और अधिक उद्यमों की जरूरत है ताकि सार्वजनिक–निजी भागीदारी के माध्यम से कृषि को कहीं अधिक पेशेवर और व्यवसाय उन्मुख बनाया जा सके।

कृषि ड्रोन, पौधों में सटीक जीन सम्पादन, एपी–आनुवंशिकी, वायरलेस सेंसर नेटवर्क, स्मार्ट विन्ड व सोलर पॉवर, रोबोटिक्स, तथा मेगा स्तरीय गैर–लवणीकरण का उपयोग जैसे इनोवेशन से निश्चित तौर पर भारत में ''सदाबहार हरित क्रान्ति'' हासिल करने में मदद मिलेगी। इन सभी से निःसंदेह वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने में मदद मिलेगी जिसका लक्ष्य हमारे माननीय प्रधान मंत्री द्वारा रखा गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपनी नौ दशकों की यात्रा पूरी कर ली है। अपनी शताब्दी यात्रा तक पहुंचने में हमें इन 90 वर्षों की सफलता को दोगुने स्तर तक पहुंचाना है ताकि इन नौ दशकों के अनुसंधान परिणामों, उन्नत तकनीकों व सफलताओं का सदुपयोग करके हम कृषि सफलताओं के कई गुणा परिणाम हासिल कर सकें। हमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को 100वें साल में ले जाने से पहले एक अति–आधुनिक, सुव्यवस्थित, संकलित एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर का संगठन बनाना है। इसके लिए इस दशक में हमें बहुत से प्रयास करने हैं। पिछले 3–4 वर्षों में हमने परिषद को एक उन्नत संगठन बनाने की दिशा में अनेक सुधारों को लागू किया गया है। हमारी संस्था की समीक्षा एक उच्चाधिकार समिति (High Powered Committee) द्वारा करके अनेक मूल्यवान सुझाव दिए गए हैं जिनके माध्यम से हम परिषद को और आगे ले जा सकेंगे। हमें आधुनिक अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार तकनीकों को अपनाते हुए अपने मानव संसाधन को विश्व स्तरीय बनाना है जो कि हमारे किसानों व देश के लिए कार्य करते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की पहुंच को और अधिक बढ़ाना है जिससे आने वाले समय में जो कि स्मार्ट खेती का होगा, उसमें हम अपने किसानों को पूरा सहयोग दे सकें। हमें अपने प्रयासों को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने की जरूरत है ताकि देश के हर किसान को परिषद प्रणाली के अंतर्गत सीधे तौर पर शामिल करते हुए लाभ पहुंचाया जाए। किसानों तक परिषद की पहुंच को बढ़ाने के लिए हमारे प्रयास अविरलता के पथ पर अग्रसर हैं। तकनीकों का सीधा लाभ किसानों तक पहुंचाते हुए हमें अगले तीन सालों में खेती–बाड़ी में होने वाले लाभ के स्तर को दोगुना करने की दिशा में और अधिक सार्थक प्रयास करने हैं। परिषद के लगातार प्रयासों से इस संभावना को बल मिला है कि आने वाले समय में निश्चित तौर पर कृषि की बेहतरी और किसानों की खुशहाली बढ़ेगी जिससे कि हमारा राष्ट्र समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ेगा।

कृषिकोश: कृषि संबंधी ज्ञान के प्रसार हेतु एक डिजिटल आधानी (रिपोजिटरी)

निधि वर्मा*, अमरेन्दर कुमार**, सीमा चोपड़ा***, शैली शर्मा** एवं पी.एस.पांडे*

प्रस्तावना

सभी प्रकार के विकास संबंधित कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त समय पर सही सूचना का प्राप्त होना अत्यावश्यक है, और कृषि शिक्षा भी इसका अपवाद नहीं है। देश के कृषि क्षेत्र में अनुसंधान एवं शिक्षा के विकास के लिए राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के भीतर संस्थागत ज्ञान निःशुल्क उपलब्ध है। इसको समझते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के तत्वाधान में राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषण परियोजना (NAIP) के अंतर्गत इस उप–परियोजना ई–ग्रंथ (Egranth) को आरंभ किया गया है जिससे कि विश्व में सबसे बड़ी कृषि अनुसंधान और शिक्षा प्रणालियों में से एक भारतीय एनएआईएस में बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध सूचना को डिजिटल रूप से प्राप्त किया जा सके (जैन एवं सहयोगी, 2014 एवं एनएआईपी, 2014)। इस परियोजना का उद्देश्य अनुसंधान शोध–प्रबंधों, तकनीकी रिपोर्टों, अप्रकाशित कार्य, पुरानी मूल्य वान पुस्तकों तथा खराब हालत में पुस्तकालयों में बंद जर्नलों, सभी प्रकार के संस्थागत प्रकाशनों तथा अन्य ज्ञान संसाधनों के रूप में उपलब्ध संस्थागत ज्ञान को ICAR की Open access नीति के तहत, डिजिटल रिपोजिटरी में इकट्ठा कर उसे एक साथ मिलाना और उसका प्रसार करना है।

डिजिटल रिपोजिटरी की संरचना

कृषिकोश, बौद्धिक उपलब्धियों की डिजिटल रूप में संग्रह, परिरक्षण एवं प्रसार के लिए एक संस्थागत रिपोजिटरी है। इसको ओपन सोर्स सोफ्टवेयर 'डी स्पेस' का उपयोग कर, डिज़ाइन किया गया है जिसमें एक सक्षम एकीकृत सामग्री प्रबंधन प्रणाली (ICMS) होती है जो NARES तथा सृजित विश्वसनीय डिजिटल रिपोजिटरी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त रूप से निर्मित होती है। इस रिपोजिटरी में, कुछ महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दों यथा, समुदाय (कम्यूनिटी), संग्रह (कलक्शन), मद (आइटम) एवं बिटस्ट्रीम को समझना आवश्यक है। लॉजिकल डी स्पेस डाटा मॉडल को चित्र 1 में प्रस्तुत किया गया है। डी स्पेस लॉजिकल मॉडल के अनुक्रम में कम्यूनिटी, सर्वोच्च स्तर पर है जो संस्थाएं/संस्थान/ विश्वविद्यालय हो सकते हैं। एक कम्यूनिटी संग्रहों (कलैक्शनों) में संगठित होती है जिनमें एक विशिष्ट समुदाय के लिए पुस्तकें, संस्थागत प्रकाशन, कार्यवाहियां, रिपोर्ट, रीप्रिंट, शोध प्रबंध एवं अन्य प्रकाशन होते हैं।

डी स्पेस त्रि–स्तरीय संरचना पर आधारित है जिसमें स्टोरेज लेयर, लॉजिकल लेयर, एप्लीकेशन लेयर होती है और प्रत्येक लेयर में विभिन्न घटक होते हैं जैसा कि चित्र 2 में दर्शाया गया है।

स्टोरेज लेयर, रिलेशनल डाटाबेस अर्थात, डाटा तथा मेटाडाटा को स्टोर करने के लिए क्रमशः, पोस्ट ग्रीएसक्यू एल (स्ट्रनक्चकर्ड क्वेरी लैंग्वेज) एवं बिटस्ट्रीम स्टोरेज मॉड्यूल से मिलकर बनती है। लॉजिकल लेयर कई मॉड्यूल्स, जैसा कि कोर टूल्स, एडमिनिस्ट्रेशन टूल किट, ऑथोराइजेशन, ब्राउजिंग टूल्स, ई–ग्रुप व्यक्ति, वर्कफ्लो आदि का प्रबंधन करती है। सबसे ऊपर की लेयर, एप्लिकेशन लेयर हैं जो एंड यूजर के साथ संप्रेषण करती है क्योंकि इसमें वेब यूजर इंटरफेस निहित होता है।

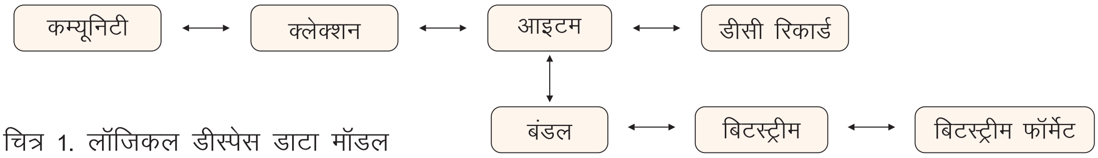

चित्र 1. लॉजिकल डीस्पेस डाटा मॉडल

*भा.कृ.अनु.प.–कृषि शिक्षा विभाग, नई दिल्ली–110012; ***भाकृअप–राजभाषा इकाई, नई दिल्ली–110012
**कृषि ज्ञान प्रबंधन इकाई, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

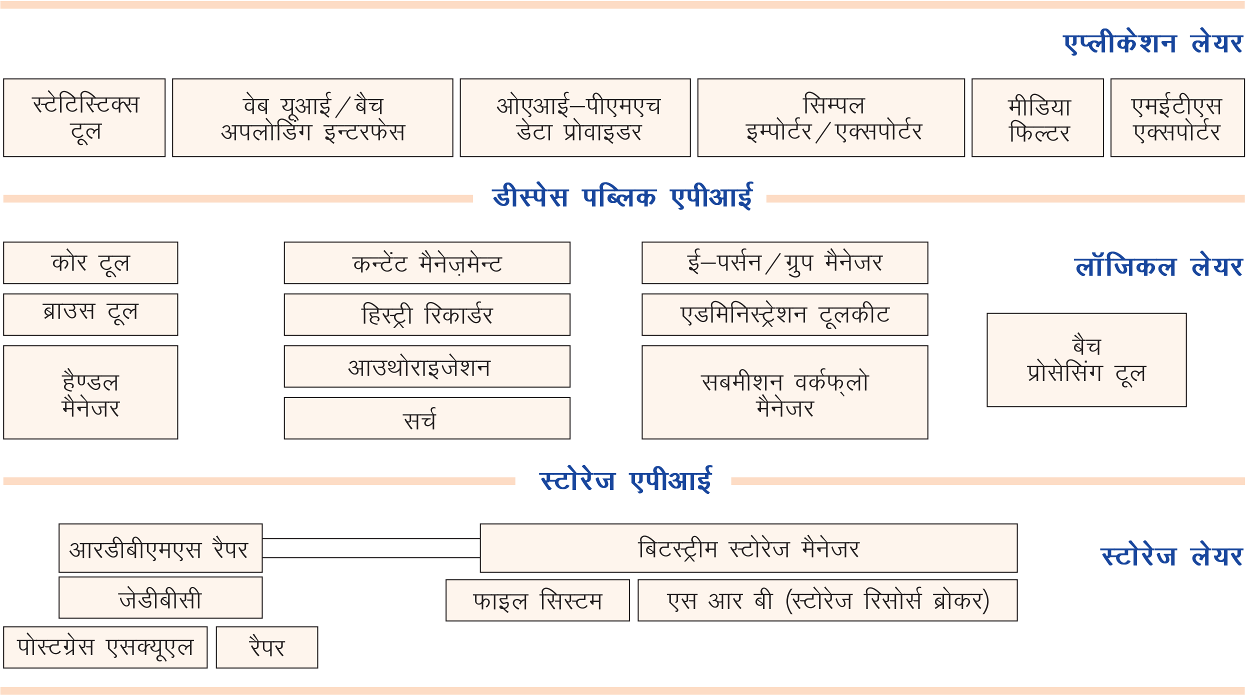

चित्र 1. डीस्पेस की संरचना

पुश नोटिफिकेशन के लिए मोबाइल एप्लीकेशन

कृषिकोश वेबसाइट एक मोबाइल अनुक्रियात्मक साइट है जिसका अर्थ है कि इस प्रणाली का डिज़ाइन, उपकरण के ले–आउट (विभिन्न प्रकार के मोबाइल फोन, टैबलेट आदि) के अनुसार अनुक्रिया या अनुकूलन करता है। कोड के माध्यम से वैब व्यू के सृजन के द्वारा संपूर्ण कृषिकोश के ले–आउट वैबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन में बदल जाती है। नए अपलोड के संबंध में संदेशों को भेजने के द्वारा उपयोगकर्ता को कृषिकोश के साथ जोड़ने के लिए पुश नोटिफिकेशन के साथ एक एप्लीकेशन विकसित की गयी है। जीसीएम का उपयोग कर इसका कार्यान्वयन किया जाता है। जावा प्रोग्रामिंग में एंड्रॉयड स्टूडियो, डाटाबेस एवं जीसीएम सर्वर को जोड़ने के लिए पीएचपी स्क्रिप्ट का उपयोग किया जाता है। मोबाइल एप्लीकेशन की संरचना को चित्र 3 में दर्शाया गया है।

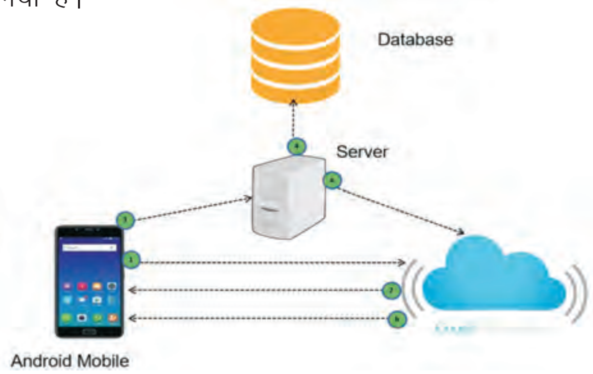

चित्र 3. मोबाइल अनुप्रयोग की संरचना

एनएआरईएस (NARES) का कृषिकोश डिजिटल संग्रह

कृषिकोश ओपेन एक्सेस वाला एक व्यापक डिजिटल संग्रह है जो राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और जिसमें विषय वस्तु को केंद्रीकृत रूप से होस्ट करने की व्यरवस्था है, इसका प्रबंधन विकेन्द्रीकृत है परंतु इसके द्वारा सभी के लिए पहुंच को बढाए जा सकने वाले निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं यथा, स्कॉलरों, अध्यापकों, शिक्षाविदों तथा आम जनता के लिए सामग्री तक पहुँच को सुगम बनाना। यह खोजने और परिक्षण की बढ़ी हुई क्षमता प्रदान करता है। विषय–वस्तु विशेषज्ञों की उच्चाधिकार प्राप्त समितियों ने इस संग्रह में सम्मिलित होने वाली बौद्धिक तथा शैक्षणिक मूल्य वाली विषय–वस्तु को चिन्हित किया है। एनएआरईएस के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की पुरालेख संबंधी सामग्री में दुर्लभ पुस्तकें, पुरानी पत्रिकाएँ, रिपोर्ट्स, न्यूजलेटर, वार्षिक रिपोर्टें सफलता–गाथाएँ, प्रतिभा संबंधी व्याख्यान (एंडौमेंट लेक्चर्स) लेखकों के रचना संग्रह, मुद्रण–पूर्व तथा पुनर्मुद्रण रचनाएँ, पैटेंट, पांडुलिपियाँ, पत्रिकाएँ, अप्रकाशित अथवा गैर वाणिज्यक स्तर पर प्रकाशित (ग्रे) साहित्य, छायाचित्र, श्रव्य–दृश्य रिकार्डिंग्स आदि शामिल हैं जिन्हे कृषिकोश में सम्मिलित किया जा सकता है। सभी रिकार्ड्स के लिए अधि–आंकड़े सभी को बिना रोक–टोक उपलब्ध हैं, तथापि, वास्तविक रिकॉर्ड, इसकी पहुँच श्रेणी के अनुसार निम्नानुसार सुलभ होंगे.

जनसाधारण तक सुलभता – ऐसा कोई भी रिकॉर्ड जो सामान्य तौर पर आम जनता को उपलब्ध करवाया जा सकता है इस श्रेणी में आएगा। विशेषाधिकार आधारित पहुँच–रिकॉर्ड केवल उन्हीं व्यक्तियों अथवा संगठनों के लिए सुलभ होगा जिनके पास एनएआरईएस में विशेषाधिकार का दर्जा प्राप्त है तथा प्रतिबंधित रिकॉर्ड जो अपने गोपनीय और संवेदनशील स्वरूप के कारण केवल एनएआरईएस द्वारा प्राधिकृत अधिकारियों को ही सुलभ होंगे।

कृषिकोश की विशिष्टताएं

कृषिकोश एक ऐसा डिजिटल संग्रह मंच है जहां विषय–वस्तु का विकेंद्रीकृत रूप से प्रबंधन किया जा सकता है लेकिन जिसमें अनेक उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए केंद्रीकृत रूप से होस्टिंग तथा रखरखाव करने की क्षमता है। प्रत्येक संस्था की अपनी रिपोजिटरी है जिस पर उनका पूरा नियंत्रण रहता है तथा जिसमें उन्हें हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर के रख–रखाव का भी प्रयास नहीं करना पड़ता क्योंकि भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा इसका केन्द्रीकृत रूप से प्रबंधन किया जाता है। यह संस्थागत ज्ञान के लिए ओपेन एक्सेसस की सुविधा प्रदान करता है। यह पूरे पाठ की खोज का ओपेन एक्सेस से युक्त संग्रह है जिसमें खोजने और ब्राउज करने के व्यापक विकल्प हैं तथा संस्थागत उपयोगकर्ता स्वयं का संग्रह संचालित कर सकते हैं और अपने संस्थान की विषय–वस्तु को अपलोड कर सकते हैं, इसे हटा सकते हैं अथवा इस पर प्रतिबंध लगा सकते हैं। इस संग्रह का मुख–पृष्ठ चित्र 4 में दर्शाया गया है और (http://krishikosh-egranth-ac-in/) लिंक के माध्यम से इसे देखा जा सकता है।

कृषिकोश के उपयोग के आंकड़े

कृषिकोश के प्रशासकों को सर्वर के उपयोग के आंकड़े प्रदान करने हेतु उन्हें उपयोग के विवरण उपलब्ध करवाने के लिए कम्यूनिटी, कलैक्शन, आइटम का संरूपण, डीस्पेस के साथ किया जाता है. कम्यूनिटी, कलैक्शन, आइटम आदि के कुल विजिट्स उन नगरों सहित देशों, जहां से ये विजिट्स आरंभ किए गए थे, के बारे में आंकड़े इस संग्रह में उपलब्ध हैं। 01 अक्तूबर 2017 से 30 नवम्बर, 2018 के अवधि के दौरान कृषिकोश के विश्लेषणात्मक आंकड़े दर्शाते हैं कि कृषिकोश वैबसाइट का प्रयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 1,09,30,041 थी। इस अवधि के दौरान कृषिकोश का सर्वाधिक विजिट करने वाले दस देशों को तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है

तालिका 1: कृषिकोश का सर्वाधिक विजिट करने वाले दस देश

देश	कृषिकोश उपयोगकर्ता	कृषिकोश उपयोगर्ताओं का %
संयुक्त राज्य	3583972	32.90
भारत	3278013	30.09
सूडान	453121	4.16
रूस	422481	3.88
चीन	406427	3.73
इथोपिया	292182	2.68
ईरान	246030	2.26
फिलीपींस	145715	1.34
नाइजीरिया	109028	1.00
इंडोनेशिया	95412	0.88

चित्र 4. कृषिकोश का मुख–पृष्ठ

निष्कर्ष

कृषिकोश अलग–अलग संस्थाओं के स्व–प्रबंधित संग्रह के लिए "क्लाउड सर्विस" के समान ही ओपेन एक्सेस नीति के सभी पहलुओं का क्रियान्वयन करने के लिए तैयार सॉफ्टवेयर मंच प्रदान करता है जिसमें सभी अलग–अलग संग्रहों का केंद्रीकृत रूप से समेकन किया गया है। यह एनएआरईएस संस्थानों के उपयोगकर्ताओं के लिए एक अनुकूलित डिजिटल संग्रह का मंच है, जहां वे भा.कृ.अनु.प. की ओपेन एक्सेस नीति की अनुपालना के लिए स्वयं की विषय–वस्तु को अपलोड कर सकते हैं तथा इसका प्रबंध कर सकते हैं। इस प्रकार कृषिकोश संस्थागत सूचना नामतः एनएआरईएस के शोधकर्ताओं द्वारा तैयार किए गए संस्थागत प्रकाशनों, पुस्तकों, रिपोर्टों, पुनर्मुद्रणों, कार्यवाही, थीसिस को जमा करने, प्रबंध करने तथा पहुँच के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए अनुकूल मंच है। वर्तमान में कृषिकोश में 1,60,000 से अधिक डिजिटीकृत मदों (खंडों) जैसे पुरानी पुस्तकों, पुरानी पत्रिकाओं, रिपोर्टों, कार्यवाहियों, पुनर्मुद्रण, प्रमुख अनुसंधानों, प्रशिक्षण नियम पुस्तकों (मेन्यूअल्स), ऐतिहासिक रिकॉर्डों सहित 35 मिलियन डिजिटीकृत पृष्ठ हैं जिसमें विभिन्न केन्द्रों पर डिजिटीकृत 1,00,000 थीसिस शामिल हैं। कृषिकोश डिजिटल संग्रह जो प्रकाशन के लिए डिजिटल मंच प्रदान करता है, आईपीआर मुद्दों, अनुसंधान कार्यक्रम निरूपणों तथा संस्थागत सूचना आस्तियों के कार्यक्षम प्रबंध पर सहायता और सलाह प्रदान कर सकता है।

संदर्भ

- डीस्पेस – इंटरनल रेफेरेन्स स्पेसिफिकेशन (2002) टेक्नोलाजी एंड आर्किटेक्चर
- माइकल जे० बास, डेविड स्टूव, रॉबर्ट टेंसले , मारग्रेट ब्रन्स्कोफ्स्की, पीटर ब्रेटोन, पीटर कारमाइकल, बिल काट्टे, दान चूडनोव, जॉयस एनजी (2002),डी स्पेस – इंटरनल रेफेरेन्स स्पेसिफिकेशन (2002) टेक्नोलाजी एंड आर्किटेक्चर मेसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालोजी
- http://wiki.duraspace.org.
- जैन, ए.के. चन्द्रशेखरन, एच तथा कुमार राजेश (2014) राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषण परियोजना (एनएआईपी) की–उप परियोजना "डिजिटल लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन मैनेजमेंट अंडर एनएआरएस (ई ग्रंथ)", भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, भारत की अंतिम रिपोर्ट
- जैन, ए.के., कुमार, अमरेन्द्र, बत्रा, कमल, कपूर, संजीव (2016) रेफेरेन्स मेन्यूयल ऑन कृषिकोश–ए रिपोजिटरी फॉर एनएआरईएस, आईसीएआर–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, प्र.सं. 50
- राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषण परियोजना (एनएआईपी (2014) एन इनिशिएटिव टूवर्ड्स इन्नोवेटिव एग्रीकल्चर, अंतिम रिपोर्ट, राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषण परियोजना, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है जिसका एक–एक दल, एक–एक प्रांतीय भाषा और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रांतीय बोलियां जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने–अपने घर में रानी बन कर रहे। प्रांत की जनगण की हार्दिक चिंता की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार के मध्य मणि हिन्दी भारत–भारती होकर विराजती रहे।

–कविवर रविन्द्र नाथ टैगोर

उत्पादन और उत्पादकता की निरंतर बढ़ोतरी के लिए चावल/धान की नई प्रजातियां

दिनेश कुमार[1], सतिन्दर पाल[2], पी.आर. चौधरी[3], डी.के. यादव[4]

भारत में सन 1966–67 के बाद कृषि के क्षेत्र में आयी हरित क्रांति के साथ नया दौर आरंभ हुआ, जिसके फलस्वरूप भारतीय कृषि निर्वाह स्तर से ऊपर उठकर आधिक्य स्तर पर पहुँच पाई। कृषि अनुसंधान में हुए गुणात्मक सुधार के फलस्वरूप देश में कृषि उत्पादन बढ़ा, खाद्यान्नों, दलहन, तिलहन, गन्ना आदि फसलों के प्रति हेक्टेयर एवं कुल उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई। हरित क्रांति के दौरान व उसके बाद भा.कृ.अनु.प. की अगुवाई में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान तंत्र के तहत हुए निरंतर कृषि अनुसंधान प्रयासों से उच्च उपज वाली किस्मों के विकास और किसानों द्वारा उनको अपनाये जाने के कारण उपज क्षमता में आशातीत वृद्धि हुई तथा भारत कई मुख्य फसलों जैसे चावल, गेहूं आदि में निर्यातक देशों की श्रेणी में आ गया। उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि का श्रेय सरकार की कृषि नीतियों के साथ – साथ मुख्यतः फसलों की नई उन्नत किस्मों के विकास, उनके गुणवत्ता युक्त बीजों की उपलब्धता तथा किसानों के परिश्रम को जाता है।

देश में वर्ष 2017–18 मे कुल खाद्यान्न उत्पादन 284.8 मिलियन टन हुआ जो कि एक रिकॉर्ड है जिसमें एक बड़ा हिस्सा देश की प्रमुख फसल चावल का है जो वर्ष 2017–18 में 109.8 मिलियन टन रहा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रयासों के फलस्वरूप चावल की उत्पादकता मे निरंतर वृद्धि हुई है जो कि 2.5 टन प्रति है. से अधिक है (2017–18, चौथा अग्रिम अनुमान)

चावल उत्पादन में हमारा देश विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है और तथा विश्व में चावल निर्यात में हम प्रथम स्थान पर है। वर्ष 2017–18 में भारत ने 12685133 टन चावल (4051896 टन बासमती व 8633237 टन गैर–बासमती) का निर्यात किया जिससे देश को रु. 49768.25 करोड़ की विदेशी मुद्रा के रूप में आय हुई। यह सब चावल तथा धान की साल दर साल नई उन्नत किस्मों की उपलब्धता से ही संभव हो पाया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के दो संस्थान, राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक एवं भारतीय चावल

तालिका 1: भारत में चावल का उत्पादन व उत्पादकता (1965–2018)

वर्ष	उत्पादन (मि.टन.)	उत्पादकता (कि.है.)
1965–66	39.59	862
1970–71	42.22	1123
1975–76	48.74	1235
1980–81	53.13	1336
1985–86	63.83	1552
1990–91	74.29	1740
1995–96	76.98	1797
2000–01	84.98	1901
2005–06	91.79	2102
2010–11	95.98	2239
2015–16	104.32	2404
2016–17	109.69	2494
2017–18*	112.9	2578

स्रोतः कृषि सांख्यिकी 2017 एक नजर, अर्धशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय, *चौथा अग्रिम अनुमान

अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद तथा अखिल भारतीय चावल अनुसंधान समन्वित परियोजना, चावल अनुसंधान मे कार्यरत हैं। अखिल भारतीय चावल अनुसंधान समन्वित परियोजना के सहयोगी केंद्र देश भर में मुख्यतः राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में स्थित है जो अपने अपने क्षेत्र विशेष के लिए चावल की प्रजातियाँ व फसल प्रबधन तकनीक विकसित करते हैं। इसके अतिरिक्त, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा एवं केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल भी चावल अनुसंधान में निरंतर कार्यरत हैं। भा.कृ.अनु.प. की अगुवाई में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान तंत्र द्वारा जिसमे भा.कृ.अनु.प. के संस्थान तथा राज्यों के कृषि विश्वविद्यालय स्थित हैं, के अथक अनुसंधान प्रयासों के परिणाम स्वरूप देश में अब तक चावल की 1080 से अधिक किस्में विकसित की गयी हैं तथा

सहायक महानिदेशक (एफ.एफ.टी.[1], मुख्य तकनीकी अधिकारी[2], प्रधान वैज्ञानिक[3], सहायक महानिदेशक (बिज)[4]

इन्हे फसल मानक, अधिसूचना तथा कृषि फसलों के लिए किस्मों का अनुमोदन करने वाली केन्द्रीय उप समिति द्वारा जारी और भारत के गजट में अधिसूचित किया गया है जिसमे पिछले पाँच वर्षों (2014–2018) में ही चावल की 258 किस्में अनुमोदित की गयी हैं। भा.कृ.अनु.प. ने जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले आकस्मिक बदलाव जैसे सूखा या बाढ़ आदि को ध्यान मे रखते हुए जलवायु परिवर्तन सहिष्णु किस्मों के विकास पर भी अनुसंधान को आगे बढ़ाया है जिसके फलस्वरूप नई जारी की गई चावल की 258 किस्मों में 131 किस्में जलवायु अनुकूल (क्लाइमेट रेजिलीयंट) अथवा सूखा या बाढ़ सहिष्णु हैं। चावल–धान की बाढ़ व सूखा सहिष्णु कुछ प्रमुख प्रजातियाँ तालिका 2 में दी गई हैं।

भा.कृ.अनु.प. के भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ से संचालित अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना – राष्ट्रीय बीज परियोजना (फसलों) प्रजनक बीज के उत्पादन का काम करती है जिसे बीज–श्रृंखला के माध्यम से अधिक मात्रा मे उत्पादित किया जाता है ताकि किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले बीज जल्दी से जल्दी उपलब्ध करवाए जा सकें। साथ ही, 'भा.कृ.अनु.प. की बीज परियोजना' का लक्ष्य राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के बीज क्षेत्र के उपयुक्त मूलभूत ढांचे को सुदृढ़ करना है जिससे अच्छी गुणवत्ता वाले बीजों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सके तथा किसानों को ये बीज उपलब्ध करवाए जा सकें। फील्ड फसलों के गुणवत्तापूर्ण बीज तथा उनकी नई उन्नत किस्मों को विकसित करना, देश में खाद्यान्न आपूर्ति और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न परियोजनाओं को बढ़ावा देने में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का फसल विज्ञान प्रभाग निरंतर प्रयासरत है। वर्ष 2017–2018 मे चावल की उन्नत किस्मों के प्रजनक बीजों का कुल उत्पादन 1721 टन रहा जबकि गुणवत्ता युक्त बीजों का कुल उत्पादन 30636 टन था। वर्ष 2014–15 से 2017–18 के दौरान चावल की बाढ़ व सूखा सहिष्णु किस्मों के 162 टन प्रजनक बीज व 916 टन गुणवत्तायुक्त बीजों का उत्पादन भी किया गया है।

भा.कृ.अनु.प. ने उपज बढ़ाने के साथ–साथ अब पोषणिक गुणवत्ता को भी विशेष महत्व दिया है, परिणामस्वरूप, बहुत सी नई किस्मों में पोषण गुणवत्ता का वांछित स्तर अब उपलब्ध है। भा.कृ.अनु.प. के नेतृत्व में एनएआरएस के अनुसंधान

तालिका 2: मई 2014 से आज तक जारी और अधिसूचित की गई चावल की बाढ़ और सूखा–सहिष्णु किस्में

दबाव (stress) की स्थिति	किस्में
बाढ़/जलमग्नता/जलभराव/गहरे/अर्द्ध जल के प्रति सहिष्णुता	आशुतोष, भीमा (धीरा) बहादुर एसयूबी–1, सी आर धान 408 (चकाखी), सी आर धान 409, सी आर धान 505, सी आर धान 506, सी आर धान 507, सी आर धान 508, सी आर धान 801, सी आर धान 802, सी आर धान 510, सी आर 1009, सब–1, सी ओ 43 सब 1, डीआर आर धान 50, क्षीरा, रणजीत सब 1, सांबा सब 1, तन्मयी, त्रिपुरा जला – 1
सूखा/नमी दवाब/कम वर्षा सहिष्णुता	एडीटी 51, एडीवी 8301 (संकर), बिरसा विकास धान 111, बिरसा विकास धान 203, सीएयू–आरआई, सीआर धान 801, दक्षा, डीआर आर धान 43, डीआर आर धान 44, डीआर आर धान 46, डीआर आर धान 47, डीआर आर धान 50, डीआर आर धान 52, हिम पालम लाल धान – 1, आई आर 64 डीआरटी 1, जेआरएच 19 (संकर) कालचम्पा, नंदयाल सोना, सबौर श्री, त्रिपुरा औष –1, त्रिपुरा हाकूचुक – 1, त्रिपुरा हाकूचुक –2, त्रिपुरा खरा – 1, त्रिपुरा खरा–2, वीएनआर – 2111 प्लस

प्रयासों ने अब विभिन्न फसलों के लिए अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान कार्यक्रमों (एआईसीआरपी) के माध्यम से जैव–संवर्द्धित किस्मों की एक श्रृंखला के विकास और अनुमोदन करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान विभिन्न फसलों की 35 जैव–संवर्द्धित (bio&fortified) किस्मों को विकसित किया गया है। आइरन और जिंक समृद्ध गेहूं, बाजरा और मसूर दालें जिंक और प्रोटीन युक्त चावल, उच्च प्रोटीन गुणवत्ता और विटामिन–ए से भरपूर मक्का कम इरुसिक एसिड और ग्लूकोसाइनोलेट सरसों और ट्रिप्सिन अवरोधक मुक्त सोयाबीन, जैव–संवर्द्धित किस्मों के कुछ उदाहरण हैं। जैव–संवर्द्धित किस्में न केवल पर्याप्त कैलोरी प्रदान करती हैं, बल्कि पर्याप्त वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्व भी प्रदान करती हैं। चावल की जैव संवर्धित किस्में, सीआरआर धान 310, सीआरआर धान 311, डीआरआर धान 45, डीआरआर धान 48, डीआरआर धान 49, जी आर–15, सीजी.जेडआर–2, जिंकों राइस एम एस, सुरभि, आदि जारी की गई हैं।

चावल की उन्नत किस्मों को बढ़ावा देने तथा उनको किसानों के खेतों तक पहुंचाने के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) के सहयोग से, उन्नत किस्मों को लोकप्रिय बनाने के लिए इनके अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित करता है। पिछले तीन वर्षों के दौरान विभिन्न राज्यों मे 2000 से अधिक अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए गए तथा बाढ़ और सूखा सहिष्णु किस्मों सहित अन्य उत्पादन प्रोद्योगिकियों को भी प्रदर्शित किया गया। इसके अतिरिक्त, नई किस्मों को बढ़ावा देने के लिए तथा चावल सहित विभिन्न फसलों की बाढ़ और सूखा सहिष्णु किस्मों जैसी नई प्रोद्योगिकियों के बारे में किसानों को जागरूक करने के लिए खेतों का दौरा, किसान मेले, किसान दिवस, बीज दिवस, किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि भी आयोजित किए जाते हैं।

एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक देश में 122 मिलियन टन चावल की आवश्यकता होगी (फूड सेक्यूरिटी पोर्टल, आई.एफ.पी.आर.आई 2017)। इसके लिए चावल–धान की उत्पादकता में वृद्धि करना बहुत आवश्यक होगा क्योंकि भूमि संसाधन तो सीमित ही रहने वाले हैं। उत्पादकता बढ़ाने के लिए धान की ऐसी नई उन्नत किस्मों का विकास करना होगा जो न केवल जलवायु परिवर्तन से होने वाले दबाव को सहन करने की क्षमता रखती हो अपितु उनमें धान मे लगने वाली सभी बीमारियों व कीट–पतंगों से लड़ने की क्षमता भी हो। नई किस्मों में अवयव (पानी, उर्वरक आदि) प्रयोग क्षमता भी अधिक होनी चाहिये जिससे इनकी पैदावार लागत कम रहे। नई नई उन्नत किस्मों के गुणवत्ता युक्त बीजों की उपलब्धता को भी सुनिश्चित करना होगा जिसके लिए बीज श्रृंखला को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता होगी। इसके साथ–साथ विस्तार गतिविधियों को भी बढ़ावा देने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

भा.कृ.अनु.प. के प्रयास इन सभी दिशाओं में जारी हैं ताकि भविष्य में देश में चावल की पैदावार आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सके और साथ ही चावल निर्यात करके देश की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में योगदान दिया जा सके। यहाँ पर यह बताना भी अतिआवश्यक है कि अनुसंधान तथा प्रचार प्रसार के लिए निवेश की आवश्यकता होती है जिसे उपलब्ध कराया जाना भी आवश्यक है ताकि भविष्य मे उत्पादकता व उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण हिसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति

बारानी कृषि संस्थान और राजभाषा की उपयोगिता

डा. संतराम यादव*

बारानी कृषि में मूल एवं अनुकूल अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने हैदराबाद में वर्ष 1985 में केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (क्रीडा) की स्थापना की। इससे पूर्व 1923 में मंजरी, पुणे में शुष्क भूमि कृषि अनुसंधान के प्रारंभिक प्रयासों के उपरांत प्रोत्साहन स्वरूप वर्षा आधारित क्षेत्रों के अंतर्गत स्थान विशेष की समस्याओं के समाधान हेतु 1970 में अखिल भारतीय समन्वित शुष्क भूमि कृषि अनुसंधान परियोजना (एक्रीपडा) शुरू की गई थी। तदुपरांत, फसल मौसम के संबंधों को समझने के लिए 1983 में अखिल भारतीय समन्वित कृषि मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना (एक्रीपाम) आरंभ की गई। वर्तमान में इन दोनों ही परियोजनाओं के विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों व अन्यत्र स्थानों पर क्रमशः 25–25 केंद्र कार्यरत हैं। कृषि अनुसंधान गतिविधियों की सूचनाओं के आदान–प्रदान हेतु इन केंद्रों से वीडियो कांफ्रेंस सुविधा का लाभ उठाया जा सकता है।

बारानी या शुष्क–भूमि कृषि (ड्राइलेंड फार्मिंग) बिना सिंचाई के कृषि करने की एक तकनीक है। यह बहुत कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उपयोगी है। इसमें उपलब्ध सीमित नमी को संचित करके बिना सिंचाई के ही फसलें उगाई जाती हैं। वर्षा की कमी के कारण मिट्टी की नमी को बनाए रखने तथा उसे बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया जाता है। इसके लिए गहरी जुताई की जाती है। वाष्पीकरण को रोकने का प्रयत्न किया जाता है। इसमें अल्प नमी में तथा कम समय में उत्पन्न होने वाली फसलें उत्पन्न की जाती हैं।

इस संस्थान (क्रीडा) का मुख्य अधिदेश रूप से वर्षा आधारित क्षेत्रों में संधारणीय कृषि प्रणालियों की अनुकूलताओं के विकास में योगदान के लिए मूल एवं प्रायोगिक अनुसंधान करना; देश में वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों हेतु सूचना भंड़ार के रूप में कार्य करना; वर्षा आधारित कृषि हेतु स्थान विशेष की प्रौद्योगिकियों के निर्माण के लिए राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को नेतृत्व एवं समन्वय नेटवर्क अनुसंधान प्रदान करना; वर्षा आधारित कृषि प्रणालियों में प्रशिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करना; संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों से सहयोग करना, आदि हैं। इन अधिदेशों का अनुपालन करते हुए क्रीडा ने कृषि उत्पादकता की वृद्धि, संरक्षण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपयोग हेतु वर्षा आधारित क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्थान ने 1998 से 2005 के दौरान वर्षा आधारित कृषि पारिस्थितिक प्रणाली निदेशालय का नेतृत्व करते हुए राष्ट्रीय कृषि प्रौद्योगिकी परियोजना (एनएटीपी) को सफलतापूर्वक पूरा किया। राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेषी परियोजना (एनएआईपी) के अंतर्गत 2007 से 2013 के दौरान मूल, अनुकूल एवं कार्रवाई अनुसंधान परियोजनाओं में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 2006 में कृषि जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के समाधान हेतु जलवायु परिवर्तन पर नेटवर्क परियोजना (एनपीसीसी) का संचालन किया। नोडल संस्थान के रूप में राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि पहल (निक्रा) नामक परियोजना पूर्ण की जिसका ध्येय बेहतर उत्पादन प्रौद्योगिकियों की जोखिम प्रबंधन अनुकूलताओं के विकास द्वारा जलवायु विविधता व परिवर्तन से फसलों, पशुधन, कुक्कुट पालन एवं मात्स्यिकी को जोड़कर भारतीय कृषि के समुत्थान में वृद्धि करना था।

यह संस्थान अपनी दो अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाओं (एक्रिप) तथा एक बड़ी नेटवर्क परियोजना का संचालन करते हुए वर्षा आधारित कृषि एवं जलवायु परिवर्तन के मुख्य क्षेत्रों में योजना, समन्वयन एवं कार्यान्वयन में प्रमुख भूमिका निभाते हुए देश–विदेश में एक विशेष पहचान बनाए हुए है। संस्थान मुख्यालय में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (नेचुरल रिसार्स मैनेजमेंट) एवं फसल विज्ञान (क्रॉप साइंसस) पर बहुविषयक अनुसंधान की सहायता हेतु अत्याधुनिक आधारभूत सुविधाओं से सुसज्जित सस्यविज्ञान, मृदा रसायन, मृदा भौतिकी, जलविज्ञान, पादप कार्यिकी, सूक्ष्मजीव विज्ञान, पादप प्रजनन, पादप वि.ति विज्ञान, कीट विज्ञान, पशु विज्ञान, केंद्रीय प्रयोगशाला, कृषि मौसम विज्ञान डेटा बैंक, भौगोलिक सूचना प्रणाली इत्यादि पंद्रह प्रयोगशालाएं एवं ग्लॉस हॉउस, नेट हॉउस, अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह, प्रशिक्षणार्थी आवास सुविधा, प्रेक्षागृह, पुस्तकालय, संग्रहालय तथा तीन सम्मेलन कक्ष हैं। संस्थान के हयातनगर रिसर्च फार्म, हैदराबाद (280 हेक्टेयर) और गुणेगल रिसर्च फार्म, रंगा रेड्डी जिला, तेलंगाना (80 हेक्टेयर) नामक दोनों सुविकसित अनुसंधान फार्म बारानी

*सहायक निदेशक (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (क्रीडा), संतोषनगर, हैदराबाद–500059

उत्पादन प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनमें क्षेत्रीय प्रयोगों एवं प्रदर्शनों हेतु इंजीनियरिंग वर्कशॉप, जल सिंचाई प्रणाली व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं। संस्थान के संसाधनों का बड़ा हिस्सा सुदूर कार्यक्रमों हेतु समर्पित है। इसका कृषि ज्ञान प्रबंधन एकक वैज्ञानिकों एवं अन्य अधिकारियों को ईमेल, वेबहोस्टिंग, इटरनेट एवं फाइल ट्रांसफर सेवाएं प्रदान करता है। भारत सरकार ने इस संस्थान को राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क कनेक्टिविटी प्रदान की है।

संस्थान में प्रशिक्षण, परामर्श एवं कांट्रेक्ट रिसर्च सर्विसेस के रूप में उपलब्ध सेवाओं का विवरण इस प्रकार है। समृद्ध विशेषज्ञता एवं अनुभव के आधार पर जलग्रहण विकास परियोजनाओं की योजना, मॉनीटरिंग एवं मूल्यांकन; वर्षा आधारित फसलों में न्यूनतम जोखिम के लिए सूखा प्रबंधन कार्य नीतियां; सूखा के अध्ययनों के लिए शीघ्र चेतावनी प्रणालियों की उपलब्धता; वर्षा आधारित फसलों हेतु उत्पादन प्रौद्योगिकीय वर्षा आधारित फसलों में समेकित नाशीजीव एवं पोषक तत्व प्रबंधन; गुणवत्तायुक्त जैव उर्वरकों, जैव कीटनाशकों एवं बहुउद्देशीय वृक्षों की रोपण सामग्री का उत्पादन; संसाधन लक्षण एवं मॉनीटरिंग के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली तथा सुदूर संवेदन आदि का प्रयोग; बारानी यांत्रिकीकरण, बारानी कृषि वानिकी, बारानी बागवानी एवं वैकल्पिक भूमि उपयोग प्रणालियां; मौसम आधारित फसल बीमा की सहायता करने के लिए फसल मौसम संबंधित आंकड़ों का निर्माण; गुणवत्ता मूल्यांकन और ग्रीनहाउस गैसों के परिमाणन हेतु मृदा, जल, पादप, जैविक खाद एवं जैव उर्वरकों के विश्लेषण के लिए संविदा सेवाएं प्रदान करना। संस्थान में ग्राहकीय परामर्श एवं संविदा सेवाएं भी उपलब्ध हैं। केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (भा.कृ.अनु.प.—क्रीडा) www.crida.in अपने नेटवर्क भागीदार के रूप में एक्रीपडा, एक्रीपाम, निक्रा एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर तकनीकी सहयोग द्वारा मिशन मोड कार्यक्रम के क्रियान्वयन और किसानों की आय को दोगुना करने के लिए मांपने योग्य एवं प्रमाणयुक्त मॉडलों की स्थापना करने में सहयोग कर रहा है (संदर्भ : क्रीडा प्रोफाइल, न्यूजलैटर्स एवं वार्षिक रिपोर्ट)।

कृषि और किसान भारतीय परंपरा के वाहक हैं। किसानों की खुशहाली से ही देश खुशहाल होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) देश की सर्वोच्च एपेक्स बॉडी है जो कि देशभर में फैले अपने कृषि अनुसंधान संस्थानों के माध्यम से किसानों के उत्थान हेतु हर क्षेत्र में अपना भरपूर योगदान प्रदान कर रही है। संस्थानों की कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाने से न केवल कृषि और कृषकों का ही उत्थान हो रहा है अपितु इसमें राजभाषा हिंदी का स्वरूप भी दिन प्रतिदिन बदलता जा रहा है। कृषि विज्ञान अनुसंधान और राजभाषा कार्यान्वयन किसान के बैलों की जोड़ी की तरह कंधे से कंधा मिलाकर चलते रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हर जगह इसकी चमक स्पष्ट दिखलाई पड़ेगी। आज कृषि विज्ञान के प्रचार प्रसार में राजभाषा हिंदी ने इतनी प्रगति कर ली है कि अब हर वो असंभव काम भी संभव हो गया है जिसके बारे में हम सिर्फ कल्पना ही करते थे। एक समय था जब जय जवान, जय किसान के नारे के जरिए समाज में यह संदेश पहुंचाने का प्रयास किया गया था कि किसान और जवान देश की दशा और दिशा तय करते हैं। बदलते परिवेश में जय विज्ञान का नारा भी इसमें जुड़ गया है।

राजभाषा कार्यान्वयन में हिंदी के बदलते स्वरूप के अंतर्गत कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु कार्मिकों की सुविधानुसार कीबोर्ड का विकल्प मौजूद है। मोबाइल पर हिंदी का प्रयोग बिना किसी प्रशिक्षण के बेधड़क किया जा रहा है। कार्मिक की डैस्क पर ही अनुवाद, टाइप, वाक्य संरचना सुविधाएं उपलब्ध हैं। हिंदी स्वयं शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत राजभाषा विभाग का लीला अर्थात् लर्न हिंदी लेंग्वेजिज थ्रु आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस नामक बहुप्रचलित साटवेयर द्वारा हिंदी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ का प्रशिक्षण ऑनलाइन व ऑफलाइन मोड में प्राप्त किया जाता है। कंठस्थ या ट्रांसलेशन मेमोरी के माध्यम से न केवल अनुवाद कार्य निपटाया जाता है अपितु एक बार किए गए प्राधिकृत अनुवाद को सुरक्षित भी रखा जाता है जिसे बाद में जारी होने वाले सामान्य प्रवृति के कागजातों में प्रयोग में लाया जाता है। अनुवाद कार्य हेतु राजभाषा विभाग का 'मंत्र राजभाषा' और गूगल ट्रांसलेशन की प्रसिद्धि जगजाहिर है। श्रुतलेखन साटवेयर का स्पीच टू टेक्स्ट के रूप में प्रयोग हो रहा है। हिंदी टेक्सट को हिंदी स्पीच में परिवर्तित करने हेतु 'प्रवाचक राजभाषा' बहुलाभकारी है। राजभाषा विभाग का ई—महाशब्दकोश कंप्यूटर पर राजभाषा कार्यों में बहुपयोगी सिद्ध हुआ है। इस डिजिटल युग में पारिभाषिक या तकनीकी शब्दावली का हिंदी में अभाव बीते दिनों की बात हो चुकी है। किसानों को जब अपने मोबाइल पर कृषि विज्ञान केंद्रों और प्रसार कार्मिकों से हिंदी में मैसेज या संदेश प्राप्त होते हैं तो उनका दिल बाग—बाग हो जाता है। वाट्सऐप मैसेज में हिंदी टेक्सट को टाइप करने की अपेक्षा बोलकर स्वतः टंकण सुविधा का लाभ उठाया जा रहा है। मशीनी अनुवाद आज की जरूरत है तथा हैदराबाद विश्वविद्यालय के कंप्यूटर एंड इनफॉर्मेशन साइंसेज डिपार्टमेंट की टीम द्वारा विकसित करनोपरांत जारी किए गए मशीन ट्रांसलेशन साटवेयर 'सारा—SARA' के पारिभाषिक और प्रशासनिक शब्दावली के अनुवाद में बहुपयोगी सिद्ध होने की संभावना है।

संस्थान राजभाषा की संवैधानिक स्थिति की निगरानी और कार्यान्वयन की आवश्यकता पर सहयोग व सुझाव देने वाली सभी छः समितियों की सिफारिशों को लागू करने हेतु प्रयत्न करता रहता है। कार्यालय प्रमुख अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए हिंदी कार्य को बढ़ावा देते रहते हैं। राजभाषा

कार्यान्वयन समिति की बैठकों में उच्चाधिकारियों को हिंदी की संवैधानिक स्थिति से अवगत कराया जाता है। पानी सदैव ऊपर से नीचे की ओर ही बहता है इसलिए यहां भी हिंदी में कामकाज की गति ऊपर से नीचे की ओर है क्योंकि उच्चाधिकारी ही अपने अधीनस्थ कार्मिकों के पथ प्रदर्शक होते हैं। यहां बातचीत और पत्राचार में अधिकांशतया हिंदी के सरल और अन्य भाषाओं के बहुप्रचलित शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतर करनोपरांत प्रयोग किया जाता है। कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने का अभ्यास कराने हेतु हिंदी कार्यशालाओं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित अंतराल पर भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है। यहां हिंदी कार्य हेतु इंटरनेट, सहायक संदर्भ साहित्य व संस्थान की विषय सामग्री उपयोग में लाई जाती है। नियम पुस्तकें और कोड़ मैनुअल्स केंद्रीय अनुवाद ब्यूरों के माध्यम से हिंदी में उपलब्ध हैं। उन्नत प्रौद्योगिकी के हिंदी भाषा के रूप में अनुप्रयोग की कमी के निवारण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से पसंदीदा भाषा में नवीन तकनीकों की अद्यतन जानकारी प्रदान की जाती है।

अंत में कह सकते है कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन में जहां एक ओर यह संस्थान बारानी कृषि में अनुसंधानरत रहते हुए अपनी प्रौद्योगिकियों को निरंतर किसानों के खेतों तक कारगर रूप में पहुंचाने में संलग्न है तो दूसरी ओर गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग तो एक नोडल एजेंसी के रूप में संवैधानिक प्रावधानों को कार्यान्वित कराने हेतु आदेश व निर्देश जारी करता है परंतु इनके अनुपालन पर परिषद का यह संस्थान गिद्ध सी नजर रखता है। यहां हिंदी के अनेकानेक कार्यक्रमों का निरंतर आयोजित होना ही यह दर्शाता है कि राजभाषा की उपयोगिता का कार्य प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कृषकों की इच्छित सामग्री को सरल व स्पष्ट भाषा में नवीन तकनीकों सहित उपलब्ध कराने के प्रयास से न केवल राजभाषा का ही विकास नजर आया अपितु देश की प्रगति में भी वह सहायक व कारगर सिद्ध हो रहा है। क्रीडा की कृषि ज्ञान प्रबंधन (एकमू) यूनिट अपने सभी कार्मिकों को नियमित रूप से कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से हिंदी पढ़ने, लिखने व बोलने की सुविधा के रूप में प्रोत्साहित करते हुए हिंदी समाचार पत्र व पत्रिकाएं, जन्मदिन की शुभकामनाएं, शादी की वर्षगांठ, सुख व दुख सुचनाएं तथा क्रीडा लिटरेचर भेजता रहता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का देशभर में फैला हुआ विशाल नेटवर्क राजभाषा हिंदी को नए रूप में नित नवीन ऊंचाइयों तक पहुंचाने में कारगर सिद्ध हो रहा है जिसमें क्रीडा एक मुख्य कड़ी की भूमिका अदा करता नजराता है जिससे बारानी कृषि संस्थान में राजभाषा की उपयोगिता सार्थक सिद्ध होती प्रतीत हो रही है।

हिन्दी सरल, सुबोध, सुदृढ़ और सुंदर भाषा है।

हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्तान हमारा

मैं राजभाषा से राष्ट्रभाषा बन रही हूं, मैं हिन्दी हूं, विश्व में छा रही हूं।

हिन्दी राजभाषा राष्ट्र का गौरव है, इसको अपनावें और गौरवशाली बनें।

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है

—विलियम कैरी, भारतीय मिशनरी

रेबीज़-एक घातक पशुजन्य रोग

जी बी मंजुनाथ रेड्डी*, अवधेश प्रजापति*, योगिशाराध्या आर*

रेबीज जिसे आम भाषा में अलर्क रोग या जलांतक भी कहा जाता है एक घातक विषाणु जनित रोग है। यह एक पशु जन्य रोग है अर्थात् यह पशुओं और मनुष्यों दोनों को ही ग्रसित कर सकता है। भारत जैसे घनी आबादी वाले देश में यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य और आर्थिक समस्या है। अंडमान एवं निकोबार और लक्षद्वीप को छोड़कर यह रोग संपूर्ण भारत में स्थानिक है। आवारा कुत्तों की बड़ी आबादी, प्रभावी नियंत्रण रणनीति की कमी इस रोग के प्रसार और स्थानिकता के महत्त्वपूर्ण कारणों में से एक है। विश्वभर में संक्रामक रोगों से होने वाली मृत्यु दर में रेबीज से होने वाली मृत्यु का दसवाँ स्थान हैं। रेबीज संक्रमण से अनुमानतः कम से कम सालाना 55,000 मानव मृत्यु हो जाती है जो मुख्य रूप से अफ्रीका और एशिया के विकासशील देशों में देखी गई है। भारत में एसोसिएशन ऑफ प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ रेबीज के एक हालिया राष्ट्रीय सर्वेक्षण ने अनुमान लगाया कि भारत में हर साल रेबीज के परिणामस्वरूप कुल 20,000 मानव जनहानि हो रही हैं। कैनाइन (श्वान प्रजाति) रेबीज को यूरोप और अमेरिका में सफलतापूर्वक नियंत्रित किया गया है, जहां कुत्तों के सामूहिक टीकाकरण व जनसंख्या नियंत्रण के कारण पशुओं और मनुष्यों में संक्रमण नगण्य हो गया है।

जानपदिक रोग विज्ञान

जानपदिक दृष्टिकोण से रेबीज विषाणु दो चक्र से संचरित होते है। पहला चक्र जंगली पशुओं के माध्यम से होता है जबकि दूसरा शहरी आवारा श्वान के माध्यम से। भारत में, रेबीज मुख्य रूप से शहरी चक्र में संचरित होता है, हालांकि सिल्वेटिक चक्र के अस्तित्व को खारिज नहीं किया जा सकता है। शहरी चक्र में, कुत्ते, मनुष्य और घरेलू जानवर रोग के संग्रहण और संचालक के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि गीदड़ और लोमड़ी सिल्वेटिक (जंगली) चक्र में विषाणु का संचरण करते हैं। रेबीज विषाणु के लिए स्थलीय मांसाहारी और चमगादड़ प्राकृतिक मेजबान हैं। अधिकांश स्तनधारी इस रोग से संक्रमित हो सकते है। जंगली स्तनधारी प्राणियों जैसे लोमड़ी, सियार, रैकून और चमगादड़ में रेबीज स्थानिक होता है। कई कारक जानवरों के काटने के कारण उच्च मृत्यु दर और रुग्णता में योगदान करते हैं। रोग की गंभीरता के कारण ही एशिया में रेबीज के कारण होने वाले वार्षिक खर्च का 563 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। श्वान की आक्रामकता और पहुँच के कारण रेबीज आमतौर पर समाज के सबसे कमजोर सदस्यों, बच्चों और निचले सामाजिक–आर्थिक वर्गों को प्रभावित करता है। पशुओं में रेबीज प्रकोप को भारत के लगभग सभी राज्यों से रिपोर्ट किया गया है (चित्र 1) ।

रोग का संचरण

रेबीज के विषाणु मनुष्यों और जानवरों की आबादी में ज्यादर जानवरों के काटने से फैलते हैं। रक्त पिशाच चमगादड़, कीटभक्षी, और फलपोशी चमगादड़ भी विषाणु को काटकर संचरित कर सकते हैं। रेबीज विषाणु आसानी से रेबीज संक्रमित जानवरों की लार द्वारा प्रेषित होते है। यहाँ तक कि वायुसोल और अंग प्रत्यारोपण के बाद संक्रमण के कुछ मामलों की रिपोर्ट की गई है विशेष रूप से कॉर्निया, अग्न्याशय, गुर्दे, फेफड़े, यकृत और अन्य ऊतक से। संक्रमित मां से दूध के अंतर्ग्रहण द्वारा मां से शिशु में रेबीज विषाणु संचरित हो सकता है।

रोग के लक्षण

विषाणु के शरीर में प्रवेश करने के बाद, उद्भवन अवधि (विषाणु के शरीर में प्रवेश से प्रथम लक्षण आने की अवधि) शरीर पर उनके काटने के स्थान पर निर्भर करती है. इसके अलावा रोग संक्रमित जानवरों में विषाणु प्रभेद, एकाग्रता और पूर्व टीकाकरण पर भी निर्भर करता है, जैसे अगर काट शरीर के केंद्रीय तंत्रिका तंतु के पास है तो वे कम उद्भवन अवधि दिखाते हैं। कुत्तों और बिल्लियों में उद्भवन अवधि आमतौर पर 6 महीने से कम होती है। मवेशियों में 25 दिनों से 5 महीने की उद्भवन अवधि हो सकती है।

रेबीज के लक्षण मुख्यतः तीन अवस्थाओं में प्रकट होते है।

*राष्ट्रीय पशु रोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

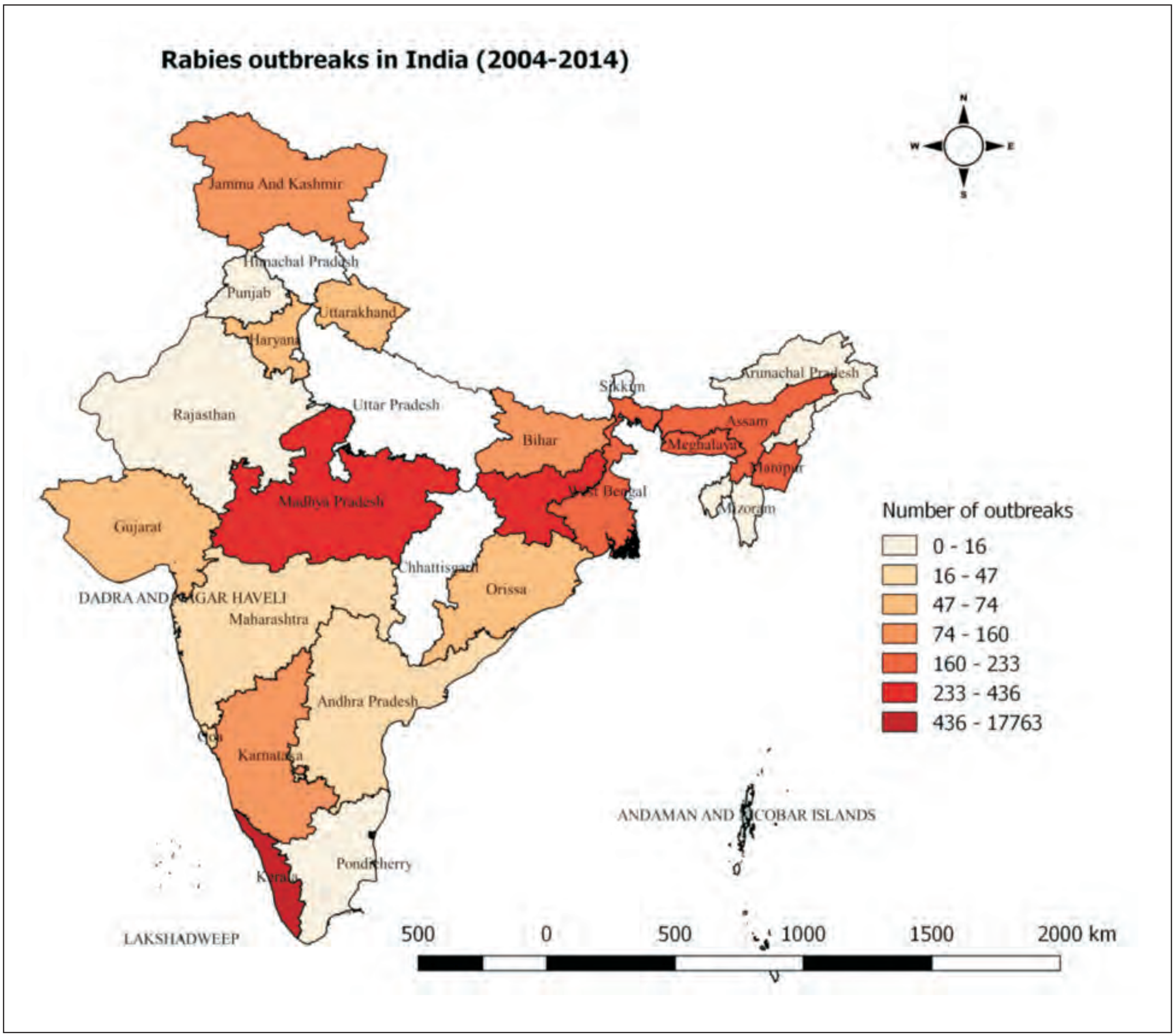

चित्र 1: भारत के विभिन्न राज्यों में सन 2004 से 2014 तक रेबीज से प्रभावित पशु प्रजातियों में रेबीज प्रकोप की संख्या का मानचित्र

प्रारंभिक अवस्था

प्रारंभिक अवस्था में लक्षण अक्सर सामान्य होते हैं जो 2–3 दिनों तक रह सकते है। इसमें भय, बेचैनी, क्षुधा की कमी, उल्टी, दस्त, हल्का बुखार, पुतलियों का सिकुड़ना, उच्च प्रतिक्रिया और अत्यधिक लार का गिरना हो सकते हैं। शूकरों में अक्सर बीमारी की शुरुआत में ही बहुत हिंसक उत्तेजना होती है।

उग्र अवस्था

रेबीज में दिखाई देने वाला उत्तेजना रूप मुख्यः रूप से तंत्रिका तंत्र के संक्रमण से जुड़ा हुआ है जिसे आम भाषा में पागलपन भी कहते है। जिसकी विशेषता बेचैनी, भटकना, गरजना, गुर्राना, लार स्राव तथा अन्य जानवरों, लोगों, मवेशिओं या निर्जीव वस्तुओं पर बेवजह हमला करना है। प्रभावित जानवर अक्सर वस्तुओं जैसे कि लकड़ी, पत्थर, भूसे या मल को निगलते हैं। जंगली जानवर अक्सर मनुष्यों के डर को खो देते हैं, और वे मनुष्यों या जानवरों की प्रजातियों पर हमला कर सकते हैं। मवेशियों में, असामान्य सतर्कता भी इस रूप का संकेत हो सकती है। कुछ जानवरों में ऐंठन होती है, विशेष रूप से अंतिम चरणों के दौरान। ज्यादातर मामलों में, बीमारी आरोही पक्षाघात में आगे बढ़ती है उग्र रेबीज वाले पशु नैदानिक संकेतों की शुरुआत के 4 से 8 दिनों बाद मर जाते हैं।

लकवाग्रस्त अवस्था

लकवाग्रस्त रूप में पशुओं में पक्षाघात के लक्षण दिखाई देते है, गले की मांसपेशियां लकवाग्रस्त हो जाती हैं। जानवर निगलने में असमर्थ हो सकता है। कंठ नलिका पक्षाघात में स्वर में असामान्य परिवर्तन का कारण बन सकता है। चेहरे का पक्षाघात भी हो सकता है या निचले जबड़े में गिरावट हो

सकती है। जुगाली करने वाले पशुओं में आफरा और अतिलारस्राव के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते है (चित्र 2)। श्वसन विफलता के परिणामस्वरूप मृत्यु आमतौर पर 2 से 6 दिनों के भीतर होती है।

चित्र 2: रेबीज ग्रसित मवेशी (मुख से अतिलारस्राव)

मनुष्यों में रोग के लक्षण

रेबीज की मनुष्यों में उद्भवन अवधि कुछ दिनों से लेकर कई वर्षों तक होती है । प्राथमिक लक्षण बुखार या सिरदर्द, साथ ही बेचौनी, दर्द, खुजलाहट या अन्य संवेदी परिवर्तन शामिल हो सकते हैं। कुछ दिनों के बाद, चिंता, भ्रम और चक्कर के लक्षण दिखाई दे सकते है, जो अनिद्रा, असामान्य व्यवहार, प्रकाश और ध्वनि के लिए अतिसंवेदनशीलता, प्रलाप, मतिभ्रम, मामूली या आंशिक पक्षाघात, अतिलारस्राव, निगलने में कठिनाई, ग्रसनी में ऐंठन में परिवर्तित हो सकती है। ग्रसनी के पक्षाघात से निगलने में परेशानी होती है जो जलातंक का कारण बनता है। मृत्यु आमतौर पर 2 से 10 दिनों के भीतर हो जाती है।

निदान

रेबीज का निदान संक्रमित पशुओं और मनुष्यों में नैदानिक लक्षणों के आधार पर किया जा सकता है। रेबीज के अनावश्यक उपचार, जोखिम से बचने के लिए आणविक अध्ययन के सटीक प्रयोगशालीय निदान की आवश्यकता होती है।

नैदानिक नमूना संग्रहः रेबीज वायरस को संक्रमित जानवरों के मस्तिष्क से अलग करके संवर्धित किया जाता है। नेक्रोपॉसी कमरे में खोपड़ी को खोलकर आम तौर पर मस्तिष्क एकत्र किया जाता है। आजकल रेबीज के निदान के लिए नई तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है।

ऊतक विकृत अध्ययनः इसमें मृत पशु के तंत्रिका तंतुओं को अभिरंजित करके विशिष्ट अभिरंजक जैसे सेलर स्टेन से अभिरंजित करके सूक्ष्मदर्शी से रोग विशिष्ट इनक्लूजन बोडी की पहचान की जाती है जिन्हें निग्री बोड़ी भी कहा जाता है।

चूहों में परिक्षण द्वाराः रेबीज संक्रमित नमूनों को चूहों के मस्तिष्क में संक्रमित किया जाता है। रेबीज विषाणु के होने पर चूहों में रेबीज जैसे लक्षण दिखाई देते है।

प्रत्यक्ष फ्लोरोसेंट एंटीबॉडी परीक्षण (डीएफए): रेबीज के निदान के लिए यह एक मानक परिक्षण है जिसकी सुविधा केवल मानक प्रयोगशालाओं में ही उपलब्ध है।

आण्विक परीक्षणः विज्ञान की प्रगति से विभिन्न आण्विक परीक्षण जैसे पीसीआर के उपयोग द्वारा विषाणु की सटीक पुष्टि की जा सकती है इसके साथ ही यह विषाणु के प्रभेद के जाँच में उपयोगी है।

विषाणु के पृथक्करण द्वाराः संवर्धित कोशिकाओं जैसे बीएचके–21 में, मुर्गी के भ्रुणित अण्डों में विषाणु को पृथक करके संवर्धित किया जा सकता है।

रेबीज का उपचार

एक बार लक्षण दिखाई देने के बाद, बीमारी हमेशा घातक होती है। रेबीज के इलाज के लिए एंटी–रेबीज मानव एंटीबॉडी, इंटरफेरॉन– अल्फा, रिबाविरिन और केटामाइन का उपयोग किया जा सकता है किन्तु इनकी सफलता अनिश्चित होती है। यदि उपचार सफल भी होता है, तो रोगी में मानसिक विकृतियों के लक्षण दिखाई देते है पशुओं के मामले में कोई इलाज नहीं होते है केवल टीकाकरण की सिफारिश की जाती है।

रोकथाम एवं नियंत्रण

घाव का उपायः रेबीज संक्रमण की रोकथाम के लिए श्वान के काटे गए स्थान को तुरंत साबुन और पानी से धोना चाहिए तथा उस पर अल्कोहल, सेट्रीमाइड, चतुर्धातुक अमोनियम यौगिक या आयोडीन जैसे विसंक्रामक का उपयोग करना चाहिए।

टीकाकरणः रेबीज अनुपचारित है केवल रोग नियंत्रण निवारक उपायों से ही संभव हैं। रेबीज के लिए मुख्यतः दो प्रकार से टीकों का उपयोग किया जाता है।

- प्री–एक्सपोजर/पूर्व–जोखिम (रेबीज संदेहित कारको के संपर्क में आने से पहले)

- पोस्ट–एक्सपोजर/जोखिम उपरांत (रेबीज संदेहित कारको के संपर्क में आने के बाद)

श्वान में

रेबीज़ के टीके को आमतौर पर तीन महीने की उम्र में पिल्लों (श्वान के बच्चो) को दिया जाता है, दूसरी खुराक तीन महीने के बाद, और उसके बाद हर तीन साल में बूस्टर खुराक का प्रावधान है। हालांकि, रेबीज़ स्थानिक क्षेत्रों में वार्षिक टीकाकरण की सिफारिश की जाती है। एक ज्ञात पागल जानवर द्वारा काटे गए टीकाकृत कुत्तों को एक रेबीज का बूस्टर टीकाकरण दिया जाना चाहिए और श्वान को 90 दिनों तक पूरी तरह से किसी भी लक्षण के लिए अपनी निगरानी में रखना चाहिए। बिना टीकाकृत किए हुए श्वान को अगर कोई पागल जानवर काटता है तो सामान्यतः श्वान में पोस्ट एक्सपोजर टीकाकरण संस्तुति नहीं की जाती। एक स्वस्थ कुत्ता या बिल्ली के मनुष्य के काटने पर उसे 10 दिनों तक अपनी निगरानी में रखना चाहिए। इस अवधि में अगर कोई लक्षण नहीं दिखाई देते है तो यह माना जा सकता है कि रेबीज के विषाणु श्वान की लार में मौजूद नहीं है।

मनुष्यों में

जोखिम उपरांत टीकाकरण

जिन व्यक्तियों को पूर्व में रेबीज का टीकाकरण नहीं हुआ है उन्हें 0, 3, 7, 14, 28 और 90 दिनों में आधुनिक सेल वैक्सीन का 1 एमएल मांसपेशियों में देना चाहिए। पूर्व में टीकाकृत व्यक्तियों में 0 और 3 दिन के अंतराल पर केवल 2 खुराक की आवश्यकता होती है। जिन व्यक्तियों के शरीर के अधिकांश हिस्सों में श्वान ने काटा है या काट/घाव केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के पास है जैसे चहरे (जिसे तीसरी डिग्री का घाव भी कहते है), को अतिरिक्त मानव रेबीज प्रतिरक्षा ग्लोबिन्स 20IU/किग्रा की खुराक या अश्व रेबीज प्रतिरक्षा ग्लोबिन्स 40IU/ किग्रा शरीर के वजन की खुराक पर दिया जाता है।

पूर्व–जोखिम टीकाकरण

ऐसे व्यक्तियों के समूह जैसे किसान, पशु संचालक, यात्री और रेबीज अनुसंधान व्यक्तिध्वैज्ञानिक जिनमें में रेबीज वायरस के जोखिम की उच्च संभावना होती है उनके लिए पूर्व जोखिम टीकाकरण की प्राथमिकता दी जाती है। यात्री जो दूसरे देशों में 1 महीने से अधिक समय बिताते हैं और जहाँ रेबीज स्थानिक है, को पूर्व–जोखिम टीकाकरण लेना आवश्यक है। मनुष्यों के लिए पूर्व–जोखिम टीकाकरण में 0, 7 और 21 या 28 दिनों पर आधुनिक सेल कल्वर वैक्सीन की 3 खुराक दी जाती हैं। यह टीका वयस्क के डेल्टोइड मांसपेशियों और शिशुओं की जांघ के बाहरी हिस्से में दिया जाना चाहिए। उच्च जोखिम वाले लोगों के लिए बूस्टर टीकाकरण को अनुशंसित किया जा सकता है। रोकथाम के लिए टीके बाजार में उपलब्ध हैं जिसे चिकित्सक के परामर्श से लेना चाहिए।

मवेशिओं में

जिन पशुओं में पूर्व में कोई रेबीज का टीका दिया गया है ऐसे पशुओं को ज्ञात पागल कुत्ते के काटने पर इच्छामृत्यु की संस्तुति की जाती है। अगर किसी तरह से यह संभव न हो तो ऐसे पशुओं को तुरंत बाड़े से अलग कर देना चाहिए तथा रेबीज टीके की 6 खुराक देनी चाहिए तथा साथ ही साथ रोग लक्षण आने का अवलोकन करना चाहिए। ऐसे पशुओं के लार, गोबर या किसी भी प्रकार से स्राव को खुले हाथों या त्वचा के संपर्क में नही आने देना चाहिए तथा स्थानीय पशुचिकित्सक को तुरंत सूचित करना चाहिए।

निष्कर्ष

रेबीज एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरा है। जनसंख्या में वृद्धि, शहरीकरण, आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या तथा जंगलों के कटाव के कारण इनके जंगली पशुओं के संपर्क में आने से, और कमजोर सरकारी नियंत्रण नीतियों की वजह से इसका प्रसार विकासशील देशों में बढ़ता ही जा रहा है। रेबीज के संग्राहक जानवर (आवारा कुत्ते और जंगली जानवर) में रेबीज के नियंत्रण के बिना मानव आबादी में रोगप्रसार नियंत्रण बेमानी है। अतः रेबीज़ निगरानी, रोकथाम और नियंत्रण के लिए अंतःक्रियात्मक स्थायी सहयोग की आवश्कता है विशेष रूप से कृषि, पर्यावरण, नगर पालिका, शिक्षा और स्वास्थ्य के सरकारी मंत्रालयों के बीच। देश में रेबीज के नैदानिक प्रयोगशालाओं का नेटवर्क अपर्याप्त है। नमूनों की जाँच और संवीक्षण के लिए नैदानिक प्रयोगशालाओं के और सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही सार्वजनिक स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता राष्ट्रीय रेबीज़ नियंत्रण और रोकथाम कार्यक्रमों में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते है।

अजोलाः पशुधन के लिए एक पोषक पशु आहार पूरक

के. गिरिधर* और ए.वी. ईलनगोवन*

अजोला जल में मुक्त रूप से तैरने वाला एक जलीय फर्न जाई का फर्न, सुंदर बारीक पत्तियो वाला पौधा है जो धान की पैदावार के लिए अतिउपयोगी जैव उर्वरक के रूप में बहुत प्रचलित हो चुका है। इस फर्न के संघ में हरे नीले शैवाल (एनाबीना अजोला) पाए जाते हैं जो नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए उत्तरदायी हैं। अन्य हरे चारे की अपेक्षाकृत अजोला में अत्यधिक क्रूड फाइबर (रेशा, 20% से भी अधिक) होने के कारण इसे एक अच्छे आवश्यक अमीनो एसिड प्रदाता के रूप में जुगाली करने वाले पशुओं के आहार में उपयोगी माना गया है।

पर्यावरण सम्बन्धी आवश्यकताएंः अजोला तालाबों, पानी के गड्ढों और नम–गर्म उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। इसे प्रकाश की आवश्यकता होती है और आंशिक प्रकाश (25-50ः सूर्य प्रकाश) में यह बहुत अच्छी तरह से पनपता है. यह जल की उपलब्धता के प्रति बहुत ही संवेदनशील है और जल के बिना पनप नहीं सकता। इसके प्रजनन और विकास के लिए सर्वोत्तम तापमान 20-30 डिग्री सेल्सियस है और 37 डिग्री सेल्सियस से ऊपर के तापमान का इस पर अत्यंत प्रतिफ्कूल प्रभाव पड़ता है. सापेक्षिक आर्द्रता 85-90ः इसके लिए उत्तम है. सर्वोत्तम पी एच 5-7 है। अजोला जल से ही आवश्यक पोषक पदार्थ प्राप्त करता है।

जल–तालाब का चयनः अजोला की आवश्यक देखभाल करने के लिए घर के निकट के तालाब का चयन करना बेहतर होता है. नियमित जल की आपूर्ति करना आवश्यक है. जिस स्थान पर तालाब का चयन किया हो, उस स्थान पर आंशिक सूर्य प्रकाश का रहना इसकी बेहतर पैदावार सुनिश्चित करेगा, अन्यथा छाँव प्रदान करनी होगी, जिससे न केवल जल का वाष्पीकरण कम होगा बल्कि अजोला की उपज भी बढ़ेगी।

तालाब का आकार और निर्माणः तालाब का आकार पशुओं की संख्या, पूरक आवश्यक फीड और संसाधनों की उपलब्धता की मात्रा जैसे कारकों पर निर्भर करता है। छोटे धारकों के लिए, प्रति दिन 0.7 किलो से अधिक पूरक चारा उत्पादन करने के लिए अजोला खेती के लिए 6 x 4 फुट का क्षेत्र पर्याप्त है। चयनित क्षेत्र पूरी तरह से साफ और समतल बनाया जाना चाहिए। तालाब की दीवारों को या तो ईंटों या खुदाई की मिट्टी के साथ बनाया जा सकता है. तालाब में टिकाऊ प्लास्टिक शीट प्रसार के बाद, दीवारों पर ईंटें रखकर सभी पक्षों को सुरक्षित किया जाना चाहिए। शीत में पानी के रिसाव को रोकने के लिए छेद या दरार नहीं होनी चाहिए। तालाब में अजोला के कल्चर का टीका लगाने के बाद, तालाब को शुद्ध जालीदार आवरण से ढक देना चाहिए जिससे आंशिक छाया प्रदान हो सके और तालाब में पत्तियों और अन्य मलबे का गिरना रोका जा सके।

सिल्पुलिन तालाब में एजोला

अजोला उत्पादनः उपजाऊ मिश्रित मिटटी के साथ गोबर और पानी को समान रूप से मिला कर तालाब में उसे समान रूप से फैलाने की जरूरत होती है। 6 x 4 फीट आकार के एक तालाब के लिए आवश्यक है और यह समान रूप से तालाब में लागू किया जाना चाहिए। पानी की गहराई 4–6 इंच होनी चाहिए। तालाब की सतह भी समतल होनी चाहिए जिससे पूरे तालाब क्षेत्र में पानी की गहराई समान रहे.

*राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलूरु

मानसून के मौसम के दौरान, अगर बारिश का पानी संचयन छत आदि में किया जा सकता है तो और यदि अजोला की खेती के इसे इस्तेमाल किया जाए तो इससे अजोला का उत्कृष्ट और तीव्र विकास सुनिश्चित करेगा। एचडीपीई तालाब सिल्पुलिन शीट से बने तालाबों की तुलना में लंबे समय तक चलते हैं। कुछ किसानों ने परियोजना क्षेत्र (कर्नाटक में चित्रदुर्ग जिला) में इस तकनीक का इस्तेमाल किया और उत्साहजनक परिणाम मिले हैं।

एचडीपीई तालाब में अजोला

तालाब का रखरखाव: एक किलो गोबर और 100 ग्राम सुपर फॉस्फेट के तालाब में 15 दिनों में एक बार अनुप्रयोग करने से अजोला का बेहतर विकास सुनिश्चित होगा। तालाब को छह महीने में एक बार खाली कर दिया जाना चाहिए। खेती आरंभ करने के लिए ताजा अजोला का कल्चर और मिट्टी का प्रयोग करना चाहिए।

अजोला की कटाई: तीन सप्ताह के समय में अजोला की पैदावार पूरी हो जाती है। पूर्ण विकास के बाद इसे हर रोज़ काटा जा सकता है। अजोला के अधिक उत्पादन की स्थिति में इसे छाया में सुखाया जा सकता है और सुरक्षित रूप से भविष्य में इस्तेमाल के लिए संरक्षित किया जा सकता है. एनएआईपी आजीविका परियोजना के तहत कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिले के विभिन्न गांवों में 100 से अधिक डेयरी किसानों के पशुओं को खिलाने जाने वाले अध्ययन में अजोला प्रति दिन औसतन 700 (ताजा वजन) ग्राम, प्रति गाय को खिलाने से मासिक दुग्ध उत्पादन में कम से कम 10 लीटर प्रति गाय सुधार हुआ है। इसके स्वाद से रूबरू होने के लिए जानवरों को कुछ दिन लग जाते हैं अतः यह बेहतर है कि यह प्रारंभिक चरणों में दानों के साथ खिलाया जाए। उपयोग पशुओं को चारा की कमी के समय में किया जा सकता है।

अजोला की खेती के फायदे:

- इसका उत्पादन बहुत ही किफायती है और यह पशुओं के लिए एक पोषक और पूरक आहार है।
- न्यून उत्पादन क्षमता वाले पशुओं में औसत 10 लीटर प्रति पशु मासिक दुग्ध उत्पादन में सुधार।
- दानों की आवश्यकता का एक हिस्सा अजोल्ला द्वारा पशु आहार में पूरण करने से कम कर सकते हैं।

अजोल्ला उपयोग की सीमाएं:

- जैसा कि अजोला में शुष्क पदार्थ सामग्री केवल 6 प्रतिशत है, यह मुश्किल है कि अजोला का पूर्ण फीड संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सके .
- बहुत अधिक या कम तापमान, कम नमी, सीमित जल उपलब्धता और पानी की खराब गुणवत्ता जैसी पर्यावरण बाधाएं अजोला उत्पादन को अपनाने में प्रतिबंधित कर सकती हैं।

विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू भाषा भौंहि प्रचार।।

अंग्रेजी अरू फारसी अरबी संस्कृत ढेर।
खुले खजाने तिनाहीं क्यों लूटत लावहु देर।।

—भारतेन्दु हरिशचन्द्र

किसानों की आकांक्षाओं पर खरा उतरता अटारी क्षेत्र-10

डा. वाई.जी. प्रसाद* एवं डा. संतराम यादव**

कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), क्षेत्र–10, हैदराबाद को तमिलनाडू, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना एवं पुडुचेरी में स्थित 72 कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) का समन्वयन एवं मानीटरिंग कार्यों का अधिदेश सौंपा गया है। अटारी का मुख्य उद्देश्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन, उन्नत प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन, प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, उन्नत तकनीकों का प्रसार, जांच सेवाएं एवं क्रांतिक निवेशों की आपूर्ति करना है। अटारी कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों तथा प्रसार अधिकारियों के मानव संसाधन विकास, राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि में नवप्रवर्तन (निक्रा) परियोजना को क्रियान्वित करने, युवाओं को कृषि की ओर आकर्षित करके उसमें उनकी रुचि बनाए रखने(आर्या), दलहन–तिलहन पर अग्रिम प्रदर्शन करने, किसान पहले (फार्मर्स फस्ट) नामक परियोजना (एफएफपी) को संचालित करने, जनजाति उपयोजना (टीएसपी) को कार्यान्वित करने, कृषि से जुड़े लोगों में जागरूकता प्रदान करने जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कुशल नेतृत्व में कृषकों की माली हालत में सुधार करते हुए उनके उत्थान में अपना भरपूर योगदान प्रदान करने का भरसक प्रयास कर रहा है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। किसानों का मुख्य पेशा कृषि और सहायक पेशा पशुपालन है। वह 'खाओ पियो और मौज करो' को त्यागकर सादा जीवन ही व्यतीत करता है। वह सुबह–सवेरे उठकर पशुओं को दाना–पानी देकर खेतों में डटकर काम करते हुए वहीं पर उपजी फलियों और रोटी, दाल, चावल, छाछ, सलाद आदि से अपनी भूख मिटाता है। दूध–दही और हरी–ताजी सब्जियां उसके तन–मन को संतुष्ट करती हैं। धोती–कुर्ता, पायजामा, लुंगी, बनियान आदि पहने, पांवों में चप्पल धारण किए, सिर पर पगड़ी बांधे और हाथों में डंडा लिए वह हरित क्रांति का अग्रदूत नजर आता है। ग्रामीण पशु खेती–बाड़ी के कार्यों में किसानों का सहयोग करते हैं। जहां बैल उनकी हल और गाड़ी खींचते हैं, वहीं गौमाता उनके लिए दूध, गोबर और बछड़े देती है। अपनी अतिरिक्त आमदनी हेतु भैंस, बकरी, भेड़, कुक्कुट, बतख, मत्स्य आदि भी पालते है। इन पालतू पशुओं और पक्षियों को पालने में उन्हें विशेष कठिनाई नहीं होती क्योंकि ये कृषि उत्पादों यथा पुआल, भूसा, खली, अनाज कीट–पतंगे आदि खाकर ही जीवित रह लेते हैं। पशुओं के लिए घास खेतों और बागानों से उपलब्ध हो जाती है। किसान हमें सिखाता है कि मनुष्य को किसी से कुछ लेने की नहीं बल्कि देने की आदत डालनी चाहिए। किसान माटी से सोना उपजाते हैं। वे अपने श्रम से संसार का पेट भरते हैं। अधिक पढ़ा–लिखा न होने पर भी उसे खेती की बारीकियों का ज्ञान होता है। वह मौसम के बदलते मिजाज को पहचान कर तदनुसार नीति निर्धारित करने में दक्ष होता है। हालांकि, कृषि उत्पादन में वृद्धि पूर्व में जनवृद्धि दर से भी कम रही जिसका मूल कारण भारतीय कृषि का परंपरावादी कृष्टिकोण है। अधिकांश भारतीय किसान खेती को व्यवसाय के रूप में न अपनाकर जीविकोपार्जन हेतु अपनाते हैं। कृषि की पुरानी परंपरागत विधियों, पूंजी की कमी, भूमि सुधार की अपूर्णता, विपणन एवं वित्त संबंधी कठिनाइयों आदि के कारण भारतीय कृषि की उत्पादकता अत्यंत न्यून बनी रहती है। अब नई पीढ़ी में शिक्षा एवं कृषि को कमाई का साधन बनाने की प्रवृति से कृषि एवं कृषक की आर्थिक दशा में कुछ सुधार आने लगा है। बदलती परिस्थितियों और जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति उपलब्ध और खेती योग्य भूमि का औसत कम होता जा रहा है। इसके साथ ही साथ भूमि का असंतुलित वितरण भी कई स्थानों पर किसानों को बहुत कुछ सोचने पर विवश करता रहता है। किसानों की इन्हीं समस्याओं के निवारण हेतु केंद्र सरकार ने अटारी को सरकारी योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए योग्य किसानों को लाभ प्रदान करने में सहयोग करने हेतु मैदान में उतारा है।

अटारी के अंतर्गत आने वाले कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा 'स्वच्छता ही सेवा' नामक अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया, जिसमें गांवों में श्रम दान करना तथा अपनाए गए गांवों तथा

*निदेशक, भा.कृ.अनु.प. – कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग संस्थान (अटारी), क्षेत्र–10, संतोषनगर, हैदराबाद
**सहायक निदेशक (राभा), भा.कृ.अनु.प. – केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद

सार्वजनिक स्थलों में स्वच्छता अभियान चलाना, विभिन्न ग्रामीण स्थलों पर स्वच्छता पखवाड़ा मनाना शामिल है। 'संकल्प से सिद्धि', कार्यक्रम के अंतर्गत देश में कृषि का सुधार एवं किसानों की आय को दुगुना करने के लिए नया भारत आंदोलन नामक कार्यक्रमों को सामान्य जनता की सहभागिता, कृषक समुदाय और विभिन्न राजनेताओं के सहयोग से आयोजित किया गया। विश्व मृदा दिवस कार्यक्रमों के अंतर्गत माननीय सांसदों, विधानसभा सदस्यों तथा सरकारी अधिकारियों को मुख्य संयोजक के रूप में आमंत्रित करने के बाद कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड प्रदान किए गए। 'मेरा गांव, मेरा गौरव' भारत सरकार की एक नई पहल है। इसके कार्यान्वयन में आईसीएआर के अनुसंधान संस्थानों के विभिन्न ग्रुपों के वैज्ञानिकों के सहयोग से अनेक गांवों को गोद लेकर विभिन्न गतिविधियां चलाई जा रही हैं। अटारी और उसके कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा किसानों एवं कृषिरत महिलाओं हेतु अनेकानेक इंटरफेस बैठकें आयोजित की जा रही हैं। कृषि पशुपालन, पौल्ट्री एवं उन्नत उपकरणों पर जागरूकता, प्रदर्शन और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी निरंतर आयोजन किया जा रहा है।

भारत सरकार के कृषि तथा किसान कल्याण मंत्रालय के बहुप्रचलित कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु अटारी तत्पर है। प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केंद्रों की मुख्य गतिविधि है जो विभिन्न उन्नत प्रौद्योगिकियों के बारे में ज्ञान एवं कौशल को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाता है। अटारी ने किसानों, प्रसार अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों को शामिल कर पादप किस्मों का संरक्षण एवं किसानों का अधिनियम (पीपीवी एवं एफआरए) पर जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

प्रौद्योगिकी सहायता तथा मानव संसाधन विकास करने हेतु अटारी (क्षेत्र–10), हैदराबाद तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के प्रसार एवं शिक्षा निदेशालय के माध्यम से कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन कर नवीनतम तकनीकियों से अवगत कराया जा रहा है। निक्रा के केवीके ने किसानों को क्षमता निर्माण का प्रशिक्षण भी प्रदान किया है। समय समय पर किसानों को जलवायु के लचीलेपन की प्रक्रियाओं एवं प्रौद्योगिकियों पर भी जागरूक किया जा रहा है।

आईसीएआर की निक्रा परियोजना के अंतर्गत अटारी के कृषि विज्ञान केंद्रों ने प्रौद्योगिकी प्रदर्शन अवयव को कार्यान्वित किया है। अनेक राज्यों में जलवायु समुत्थान कृषि प्रौद्योगिकी एवं प्रक्रिया का प्रदर्शन किया है। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, फसल उत्पादन, पशु पालन एवं मछली पालन नामक चार मापदंड़ों को अपनाकर विभिन्न प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया है। सरकारी नीतियों का अनुपालन करते हुए संस्थागत हस्तक्षेपों के अंतर्गत किसानों को कस्टम हायरिंग, बीज एवं चारा बैंक गतिविधियों के अंतर्गत लाया गया है।

बदलता परिवेश आज बहुत कुछ सोचने पर विवश कर रहा है। आज हालात इतने बदतर हो गए हैं कि देहाती लोग शहरी जीवन की चकाचौंध से प्रेरित, आकर्षित व प्रभावित होकर इसकी सुख–सुविधाओं का लाभ उठाने हेतु शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। परिणामस्वरूप छोटे–छोटे गांव वीरान होने लगे हैं। इस समस्या के निदान हेतु परिषद के माध्यम से संचालित भारत सरकार की 'आर्या' परियोजना चलाई जा रही है। इसमें युवाओं को कृषि की ओर आकर्षित करना एवं उसमें बनाए रखना बहुत जरूरी हो गया है। इसीलिए अटारी अपने केवीके के सहयोग से सरकारी प्रयासों को सफलीभूत करने का हरसंभव प्रयास कर रहा है। इसी कड़ी के रूप में युवाओं को सशक्त बनाने हेतु अनेक उद्यम इकाइयों की स्थापना करने के बाद इन युवाओं हेतु कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित अंतराल पर आयोजन किया जा रहा है।

तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्थापित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के हैदराबाद स्थित कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), क्षेत्र–10, हैदराबाद केंद्र को इसकी परिधि मे आने वाले कृषि विज्ञान केंद्रों के सहयोग से कृषकों के उत्थान हेतु सरकारी नीतियों के कार्यान्वयन में सहयोगी भूमिका निभाने तथा तकनीकी अनुप्रयोग और फ्रंटलाइन प्रसार शिक्षा कार्यक्रमों की मानिटरिंग करने की जिम्मेदारी का निर्वहन करने का कार्यभार सौंपा गया था। अटारी के अंतर्गत 72 कृषि विज्ञान केंद्र स्थापित हैं जिनमें से तमिलनाडू में 30, आंध्र प्रदेश में 24, तेलंगाना में 16 और पुडुचेरी में 2 केंद्र आते हैं। इनके समन्वयन, मार्गदर्शन व मानीटरिंग का कार्य भलिभांति किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त कृषि प्रसार अनुसंधान और मानव संसाधन को सुदृढ़ करने की जिम्मेदारी भी अटारी बखूबी निभा रहा है। अटारी के अंतर्गत आने वाले तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना राज्यों तथा केद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के कृषि विज्ञान केंद्रों में बागवानी प्रजातियां, पशु एवं ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण विषय को शामिल करते हुए कृषक फार्म पर अर्थात् किसानों के खेतों में आवश्यक जांच करते हुए प्रौद्योगिकियों की अनुकूलता का मूल्यांकन किया जा रहा है।

वर्ष 2017–18 के दौरान अटारी के कृषि विज्ञान केंद्रों ने 504 प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन करने के बाद किसानों के खेतों में 8407 फ्रंटलाइन प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए। इसके साथ ही साथ 5640 प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से 1,94,085 कृषकों, कृषिरत महिलाओं, ग्रामीण युवकों और प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्रदान की गई। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) कार्यक्रम को कार्यान्वित करते हुए केवीके ने 6295 दलहन कल्स्टर

फ्रंटलाइन डेमोंट्रेशन कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए 2730.6 हेक्टेयर क्षेत्र तक अपनी पहुंच कायम की। इसी अनुक्रम में अटारी ने राष्ट्रीय तिलहन एवं ताड़तेल मिशन (एनएमओओपी) योजना के अंतर्गत 2472 हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करते हुए 6180 सीएफएलडी कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 2017 में केंद्र सरकार ने नया भारत आंदोलन की शुरूआत की थी जिसमें 'संकल्प से सिद्धि' नामक समेकित कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि विज्ञान केंद्रों ने 50 प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जिनमें तीन केंद्रीय मंत्रियों, पुडुचेरी के मुख्यमंत्री, 24 सांसदों, 10 राज्य मंत्रियों और 21 विधानसभा के सदस्यों सहित 34166 प्रतिभागियों ने भाग लेकर किसानों के हित में चलाए जा रहे सरकारी प्रयासों की नीतियों की महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की।

देश का किसान भाग्यवादी दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं। अनेक बार शीत लहर, पाला, बेमौसम के ओले और सर्दी से उसकी फसल नष्ट हो जाती है जिससे श्रम का उचित प्रतिफल प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए वह कृषि को व्यवसाय के रूप में नहीं अपितु जीवन–यापन की प्रणाली के रूप में अपनाता है। स्वभावतः वह वांछनीय मात्रा में उत्पादन उपलब्ध नहीं कर सकता। किसान की इसी भाग्यवादी प्रवृत्ति में परिवर्तन करने हेतु उसे अधिकाधिक शिक्षित व प्रशिक्षित करना होगा। प्राकृतिक संकटों का सामना करने के लिए वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग करना होगा। केंद्र सरकार की फसल बीमा योजना किसानों के लिए वरदान साबित हो रही है। नई सरकारी योजना से 2 हेक्टेयर अर्थात् 5 एकड़ से कम कृषि भूमि वाले किसान यदि आधार कार्ड, बैंक पासबुक को कृषि पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करा देते हैं तो प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत 6000 रूपये प्रति वर्ष उनके खाते में सीधे जमा कर दिए जाएंगे। दिसंबर, 2018 से लागू इस योजना की 2000 रुपये की पहली किस्त फरवरी या मार्च महीने में ही उनके खाते में आ जाएगी।

भारत सरकार के नुमाइंदे के रूप में अटारी, हैदराबाद सरकारी योजनाओ को सफलीभूत करने हेतु निरंतर प्रयासरत है तथा किसानों की आकांक्षाओं पर खरा उतरने हेतु कोई कोर–कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहता। फिर भी, हम प्यासे घोड़े को तालाब तक ला सकते हैं, पानी उसे स्वयं ही पीना होगा। किसान भाई भी हमारे वैज्ञानिकों और प्रसार अधिकारियों के मार्गदर्शन में नवीनतम तकनीकियों को अपनाकर खेती करके अपनी फसलों से दोगुना उत्पादन लेने के सपनों को साकार कर सकते हैं।

संदर्भः अटारी वार्षिक रिपोर्ट एवं अन्य तकनीकी सामग्री।

विविध कला शिक्षा अमित ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू भाषा भौंहि प्रचार।।

अंग्रेजी अरू फारसी अरबी संस्कृत ढेर।
खुले खजाने तिनाहीं क्यों लूटत लावहु देर।।

—भारतेन्दु हरिशचन्द्र

अनुराग, यौवन, रूप या धन से उत्पन्न नहीं होता।
अनुराग, अनुराग से उत्पन्न होता है।

—प्रेमचंद

बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान की बढ़ती महत्ता

चेतना गंगवार*, एस.डी. खर्चे*, अनुज कुमार सिंह सिकरवार*, बी. राय एवं एम.एस. चौहान*

बकरियों की संख्या के आधार पर भारत का विश्व में द्वितीय स्थान है। भारत में बकरियों की लगभग 26 नस्लें हैं एवं बकरियों की सख्या 135 मिलियन है, इस प्रकार पूरे विश्व की बकरियों की संख्या का 17 प्रतिशत भाग भारत में है। इसके साथ ही 75 प्रतिशत बकरियों की नस्ल निर्धारित नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की बकरी पालन में विशिष्ट रूचि है क्योंकि बकरियां किसी भी वातावरण में आसानी से ढल जाती है, उन पर व्यय कम होने के साथ–साथ अधिक से अधिक बच्चे देती हैं। बकरियों में कम खाद्य प्रबंधन की आवश्यकता होती है और इस व्यवसाय में कम जोखिम भी रहता है। इस प्रकार बकरियों की संख्या को अधिकाधिक बढ़ाने में कृत्रिम गर्भाधान का महत्वपूर्ण योगदान है। यह एक ऐसी जनन तकनीक है जिसके द्वारा अच्छे चयनित एवं शुद्ध नस्ल के बकरे के वीर्य का उपयोग कर बकरी की प्रजनन दर को बढ़ाया जा सकता है। वस्तुतः कृत्रिम गर्भाधान तकनीक का प्रयोग गाय तथा भैंस प्रजाति में व्यापक रूप से किया जा रहा है परन्तु बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान का प्रचलन वर्तमान समय में बकरी पालकों के बीच तीव्र गति से विकसित हो रहा है।

भविष्य में इस तकनीक का प्रयोग बकरी की नस्ल सुधार एवं उत्पादन बढ़ाने में विस्तृत पैमाने पर किया जाएगा। प्राकृतिक गर्भाधान प्रणाली के मुकाबले कृत्रिम गर्भाधान प्रणाली से अनेक लाभ है, क्योंकि इस प्रणाली में अच्छी नस्ल के कम बकरों से ज्यादा से ज्यादा बकरियों का गर्भाधान कराया जा सकता है। जहाँ प्राकृतिक गर्भाधान विधि से एक बार में एक बकरा सिर्फ एक बकरी को ग्याभिन कर सकता है, वहीं कृत्रिम गर्भाधान तकनीक द्वारा एक बकरे से एक बार में वीर्य से कम से कम 15–20 बकरियों को गर्भधारण कराया जा सकता है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बकरों में बीमारी की जाँच उपयोग में लाने से पहले कर ली जाती हैं, इस कारण हमेशा अच्छे किस्म के वीर्य का ही उपयोग किया जाता हैं जो प्राकृतिक गर्भाधान में सम्भव नहीं है।

वीर्य का हिमीकृत संरक्षणः बकरों से वीर्य संग्रह विभिन्न तकनीकियों द्वारा किया जा सकता है। लेकिन कृत्रिम योनि

विधि का अधिक प्रचलन है। कृत्रिम योनि वीर्य संग्रहण करने के लिए एक ऋतुमयी बकरी का प्रयोग किया जाता है। तत्पश्चात चुने हुए नर प्रजनक बकरे को उसके पीछे खुला छोड़ दिया जाता है। बकरा जब बकरी के ऊपर चढ़ता है तो बकरे के शिश्न को हाथ में लेकर कृत्रिम योनि के अन्दर कर देते हैं। इस तरह बकरा वीर्य का स्खलन कृत्रिम योनि के अन्दर कर देता है। कृत्रिम योनि के दूसरे सिरे पर कांच के वीर्य संग्रहण प्याले में वीर्य आ जाता है। एक बकरा एक बार में 0.5 मि.ली. से 1.5 मि.ली. वीर्य स्खलित करता है। बकरों में वीर्य प्रदान करने की क्षमता बकरे के नस्ल,. ऋतु,उम्र पर निर्भर करती है। हिमीकरण और प्रजनन के लिए अच्छी गुणवत्ता का वीर्य प्राप्त करने के लिए वीर्य का संग्रह एक दिन छोड़कर करना अच्छा रहता है। वयस्क की तुलना में युवा बकरे कम मात्रा में और निम्न श्रेणी का वीर्य प्रदान करते हैं। उत्तम जनन द्रव्य को विभिन्न स्थानों में ले जाने के उद्देश्य से अधिक समय तक बकरे के वीर्य को संरक्षित हिमीकृत जमाव तकनीक द्वारा करते हैं। शुक्राणुओं का तनुकरण तनुकृत करने के बाद वीर्य को 0.25 मि.ली. क्षमता वाली स्ट्रा में भरा जाता है। तनुकृत वीर्य को स्ट्रास में भरने से पहले मशीन द्वारा इन बकरों की प्रजाति उनके नंम्बर, तारीख आदि अंकित कर दी जाती है। तनुकृत वीर्य से भरी हुई प्लास्टिक की स्ट्रास को ट्रे के ऊपर बिछा कर समतुल्यता

*केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मकदूम, फरह, मथुरा

के लिए कोल्ड हेन्डिलिंग केबीनेट में 5 डिग्री सेल्सियस तापमान में 2 घण्टे के लिए रखा जाता है। 2 घण्टे पश्चात प्लास्टिक स्ट्रास को निकालकर तरल नाइट्रोजन में दीर्घ काल के लिए संरक्षित कर देते हैं जिससे तनुकृत वीर्य का तापमान कम होकर उसका हिमीकरण हो जाता है।

बकरियों में कृत्रिम गर्भाधानः ऋतु में आयी बकरियों की उचित समय पर पहचान करना कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम के साथ जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। कृत्रिम गर्भाधान के लिए संग्रहित तनुकृत/हिमीकृत वीर्य को तरल नाइट्रोजन से निकालकर 40 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले पानी में 40 सेकेण्ड के लिए डालकर पिघला लिया जाता है। फिर वीर्य से भरी स्ट्रा को वीर्य सेचन पिचकारी की नली में रख देते हैं, सील को काट देते है। अन्त में उसके ऊपर रख कर सेचन कर देते हैं। वीर्य को गर्भाशय की ग्रीवा ओज पर जमा करने का प्रयास किया जाता है। वीर्य को ग्रीवा के अन्त भाग में डालने के लिए गहरी ग्रीवा वीर्य सेचन पिचकारी का इस्तेमाल करने से अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

बकरी पालकों को कृत्रिम गर्भाधान से होने वाले लाभः

- हिमीकृत वीर्य द्वारा अच्छी नस्ल के कम बकरों से ही ज्यादा से ज्यादा बकरियों का गर्भाधान कराया जाता है।
- जहाँ प्राकृतिक गर्भाधान विधि से एक बार में एक बकरा सिर्फ एक बकरी को ग्याभिन कर सकता है, वहाँ कृत्रिम गर्भाधान प्रणाली से एक बकरे से एक बार में लिए गए वीर्य से कम से कम 15–20 बकरियों को गर्भ धारण कराया जा सकता है।
- इस प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ यह है कि बकरों में बीमारी की जाँच उपयोग में लाने से पहले कर ली जाती हैं, इस कारण हमेशा अच्छे किस्म के वीर्य का ही उपयोग किया जाता हैं जो प्राकृतिक गर्भाधान में सम्भव नहीं है।
- वीर्य संरक्षण तकनीक से हिमीकृत वीर्य को बकरे के मरने के बाद भी लम्बे समय तक संरक्षित रखा जा सकता है।
- उत्तम जनन द्रव्य का हिमीकृत वीर्य के रूप में एक प्रदेश/देश के दूसरे प्रदेश/देश में आदान–प्रदान आसानी से किया जा सकता है।
- प्राकृतिक गर्भाधान में विभिन्न नस्ल के बकरे एवं बकरी की ऊँचाई में ग्याभिन करना बहुत मुश्किल होता हैं, जबकि कृत्रिम गर्भाधान में ऐसी कोई कठिनाई नहीं होती।

वर्तमान परिदृश्य में हिमीकृत वीर्य द्वारा कृत्रिम गर्भाधान सुधार के लिए महत्वपूर्ण तरीके –

- बकरे के वीर्य हिमीकरण करने के लिए एक सरल, शीघ्र एवं अल्प व्यय वाली तकनीक खोजने की आवश्यकता हैं, जिसमें शुक्राणु हिमीकरण द्वारा उसकी प्रजनन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव न हो।
- उच्च प्रजनन क्षमता के लिए गहरी ग्रीवा एवं गर्भाशय के भीतर गर्भाधान में कुशलता की आवश्यकता हैं।
- पर्याप्त प्रजनन क्षमता हेतु प्रत्येक स्ट्रा में न्यूनतम शुक्राणुओं की संख्या को स्थापित करने की आवश्यकता हैं।
- हिमीकरण की प्रत्येक अवस्था में जैसे उत्पादन, प्रसंस्करण, संग्रहण के दौरान गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
- वीर्य संग्रहण एवं प्रसंस्करण के दौरान बकरे की सफाई और उसके जनन अंगों की समय–समय पर जाँच करना भी जरूरी है।
- वीर्य संग्रहण से पहले प्रिपयूष को जीवाणु रहित लवण घोल से साफ करना चाहिए, जिससे हानिकारक जीवाणुओं की संख्या कम हो सके तथा प्रजनन क्षमता में वृद्धि हो।
- इस तकनीक का बड़े पैमाने पर विस्तार करने के लिए विस्तार कार्यकर्ताओं को उचित प्रशिक्षण एवं शिक्षा और

बकरी पालकों के बीच जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार बकरियों में आनुवंशिक क्षमता में सुधार लाने के लिए बकरी पालकों को सिद्धहस्त होना न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि प्रजनन क्षमता में सुधार करने के लिए भी आवश्यक है। कृत्रिम गर्भाधन ही अच्छी नस्ल के बकरों का कम समय में विस्तार का एकमात्र वैकल्पिक तरीका है। दो बकरों के तरल वीर्य से 200 प्रजनन योग्य मादा को ग्याभिन किया जा सकता है, लेकिन प्राकृतिक गर्भाधान के लिए 10 प्रजनन योग्य बकरों की आवश्यकता होगी। इसका तात्पर्य है कि आठ बकरों के पालन–पोषण और उनके रखरखाव में अतिरिक्त खर्च से कृत्रिम गर्भाधान विधि अपनाकर बचा जा सकता है। इस तकनीक को अपना कर बकरी पालन से अधिक से अधिक लाभ कमा सकते है। यह तकनीक विशेष रूप से छोटे एवं सीमान्त किसानों के लिए बेहद लाभकारी एवं प्रभावी है। इससे किसान अपने लागत मूल्य को काफी कम कर सकते है। इस तकनीक को अपना कर बकरी पालक एक–दो वर्ष की अवधि में अपनी आय को दोगुना कर सकते है। इसके लिए बेहतर प्रबन्ध, अच्छे बाजार, और बकरी के उत्पादों का मूल्य वर्धन करने के साथ–साथ, कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक भी अपनाई जा सकती है।

बरखा रानी आई कर सोलह श्रृंगार, आने से उसके छा गई बहार ही बहार।

मेघों की काली साड़ी में लगी अति सुंदर, बिजली की पायल पहने वह मनहर।

आषाढ़ के पहले बादल ने की उसकी अगवानी, सावन–भादों में की उसने भी मनमानी।

तोड़ दिए सारे तट बंध ऐसी छाई मस्ती, वैभव रूप का ऐसा सब मान गए हस्ती।

रह–रहकर बरसाती वह ऐसी रसधार, मगन हो जाएं सब नाच उठे सारा संसार।

–कवि चौधरी

काला–धोला बादल आया संग ये अपने बरखा लाया।

रिम–झिम का संगीत सुनाता खुशियों का संदेश लाया।

जंगल महका, चिड़िया चहकी, नाचा मोर, पपीहा गाया।

काला–धोला बादल आया वर्षा की बौछारें लाया।

– रामशंकर चंचल

समेकित कृषि प्रणाली (आई.एफ.एस.) - किसानों की सतत आय व रोजगार के लिए उत्तम विकल्प

अशोक कुमार*, मोहम्मद आरिफ**, आर. पी. यादव* व एस. के. सिंह***

भारत सरकार ने 2022 तक किसानों की आय दौगुनी करने की दिशा में विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों में कृषि एवं कृषि आधारित उद्यमों की उत्पादकता, गुणवत्ता एवं उनकी उचित कीमत पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया है जिसके फलस्वरूप न सिर्फ किसानों की आय में वृद्धि हुई है अपितु प्राकृतिक संसाधनों में भी सुधार हुआ है। किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण स्कीम इस दिशा में सराहनीय कदम है। आय के साथ–2, सीमांत एवं लघु काश्तकारों व ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर गाँव में ही मिल सकें इसके लिए वैज्ञानिक विधियों से खेती करना एक श्रेयस्कर पहल है इस दिशा में समेकित कृषि प्रणाली अथवा इंटीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम (आई.एफ.एस.) एक उत्तम विकल्प है।

हालांकि ग्रामीण युवाओं का कृषि क्षेत्र में बने रहना न सिर्फ युवाओं के लिए चुनौतीपूर्ण है अपितु देश के लिए भी एक चिंतन का विषय है परंतु युवाओं को यदि कृषि को व्यवसाय के तौर पर अपनाए जाने के लिए प्रेरित किया जाए एवं उन्हें कृषि से जुडने हेतु प्रोत्साहित किए जाने के लिए उपयुक्त कदम उठाए जाएं तो सकारात्मक परिणामों की उम्मीद की जा सकती है। इस दिशा में सरकार द्वारा ग्रामीण स्तर पर युवाओं मुख्यतः पढे–लिखे बेरोजगार कृषि स्नातकों को कृषि विकास से संबन्धित कार्यक्रमों की मुख्यधारा से जोड़ा जाए तो न सिर्फ उन्हें रोजगार मिलेगा अपितु किसानों को नवीन तकनीकों द्वारा खेती के तरीकों से अवगत कराकर उन्नत खेती द्वारा किसानों की आमदनी भी बढ़ाई जा सकेगी। इसके साथ–2 युवाओं का खेती की तरफ आकर्षण भी बढ़ेगा। इस तरह के ग्रामीण युवाओं को खेती के नवीन विषयों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में उनकी सक्रिय भूमिका के लिए उन्हें किसानों की आय बढ़ाने में उन्नत तरीकों को किसानों को अपनाए जाने के लिए प्रेरित करने वाले प्रहरी के रूप में नियुक्त किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कार्यक्रमों में युवाओं की भूमिका सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न प्रांतों में कृषि स्नातकों को कृषि संबंधी कार्यकलापों में आकर्षित करने पर जोर दिया जा रहा है। कृषि स्नातकों की भूमिका सरकारी स्कीमों जैसे ई–नाम, मृदा स्वास्थ्य कार्ड तथा कृषि बीमा योजना इत्यादि को किसानों में प्रचारित–प्रसारित में महत्वपूर्ण हो सकती है। इस तरह के कार्यक्रमों के लिए अन्य पढे–लिखे बेरोजगार ग्रामीण युवाओं को भी कृषक मित्र के तौर पर नियुक्त किया जाए ताकि किसानों की आय में बढ़ोतरी के साथ–साथ गाँव में ही रोजगार के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराये जा सकें।

भारत वर्ष में सीमांत एवं लघु किसानों की संख्या लगभग 85 प्रतिशत है एवं इस प्रकार की जोतें जलवायु परिवर्तन व उत्पादन संसाधनों में ह्रास के कारण लाभहीन होती जा रही हैं अतः इन परिस्थितियों में किसानो की आय सुनिश्चित करने हेतु रोजगार के अवसर प्रदान करना एवं उत्पादकता में वृद्धि करना चिंता का विषय है। इस परिदृश्य में समेकित कृषि प्रणाली को किसानों के लिए उम्मीद की किरण के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि यह न सिर्फ किसानों की आय बढ़ाने में अपितु उनके लिए पौष्टिक आहार एवं वर्षभर खेतों पर ही रोजगार सृजन करने में सहायक प्रणाली है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि समेकित कृषि प्रणाली अपनाने से कृषि से जुड़े जोखिमों को कम करने के साथ–साथ संसाधनों के उचित उपयोग की संभावनाएँ भी प्रबल होंगी। समेकित कृषि प्रणाली में एक कारक दूसरे कारक से अंतरसंबंधित होते हैं जिसके फलस्वरूप किसान उपलब्ध भूमि, श्रम, पूंजी व प्रबंधन का आवश्यकतानुसार आबंटन कर उनका सुनियोजित ढंग से उपयोग सुनिश्चित कर सकने में सक्षम हो सकेगा। इस प्रकार समेकित कृषि प्रणाली आधारित खेती आय में बढ़ोतरी करने में अहम भूमिका अदा कर सकती है चूँकि इसमें अपनायी गई पद्धतियाँ पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण होती है।

समेकित कृषि प्रणाली आधारित भूमि उपयोग न सिर्फ किसान के परिवार को वर्षभर रोजगार प्रदान करने में सक्षम है अपितु उनकी आय में बढ़ोतरी के साथ–साथ उनके जीवन–स्तर में

*राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली, ** केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, मथुरा, **राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर

भी अप्रत्याशित सुधार की संभावनाओं को प्रखर करने में अहम भूमिका निभाने में सक्षम है। अतः समेकित कृषि प्रणाली, सीमांत एवं लघु कृषकों की आजीविका के लिए एक बेहतर विकल्प होने के साथ–साथ ग्रामीण युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर उन्हें विभिन्न कृषि उद्यमों से जोड़ने में भी अहम भूमिका निभाने में सक्षम है। इसके अंतर्गत किसानों की आजीविका एवं रोजगार सुरक्षा हेतु मुख्य रूप से निम्नलिखित घटकों को शामिल किया जाता है।

समेकित कृषि प्रणाली के मुख्य घटक

फसल उत्पादनः कृषि वैज्ञानिकों के मतानुसार एवं विभिन्न शोध आंकड़ों से स्पष्ट है कि एकल उत्पाद प्रणाली के बजाय खेती का विविधिकरण बेहतर होता है जिससे फसलोत्पादन में स्थायित्व के साथ–साथ बेरोजगारी में कमी तथा कृषि मजदूरो के शहरों की तरफ पलायन में भी कमी आती है। इसके अलावा यह पर्यावरण प्रदूषण एवं गरीबी की समस्या से निजात पाने में मददगार कृषि प्रणाली साबित होगी। कृषि विविधीकरण के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न कार्य किये जा सकते है जिससे सीमांत एवं लघु कृषकों की फसलोत्पादन लागत में कमी होगी जिसके फलस्वरूप लाभ का अनुपात बढ़ेगा।

- प्रक्षेत्र तथा पशु अवशिष्ट पदार्थो का पुनर्चक्रण कर उनका कृषि उत्पादन में उपयोग
- प्रक्षेत्र तथा पशु अवशिष्ट पदार्थो के भूमि में पुनर्चक्रण द्वारा पोषक तत्वों के ह्रास की संभावना कम होगी एवं मृदा गुणवत्ता में वृद्धि होगी
- प्रक्षेत्र तथा पशु अवशिष्ट एवं उर्वरक तत्वों का साथ–साथ प्रयोग उनकी उपयोग क्षमता को बढ़ाने में मददगार साबित होगा
- फसलचक्र तथा फसलों का चयन वैज्ञानिक आधार पर करना चाहिए
- ऐसे कृषि उद्यमों का चयन करना चाहिए जोकि एक दूसरे के पूरक हो ताकि एक उद्यम के अवशिष्ट पदार्थों को दूसरे उद्यम के लिए इनपुट के रूप में प्रयोग किया जा सके।

पशुपालनः पशुपालन सीमांत एवं लघु किसानों के लिए एक वरदान है। अगर एक परिवार तीन गाय या भैंस दुग्ध उत्पादन के लिए पालता है तो वह औसतन रू 50,000–60,000 की वार्षिक आय प्राप्त कर सकता है। साथ ही साथ उपलब्ध गोबर को बायोगैस एवं भूमि सुधार के लिए उपयोग कर कम से कम 20–25 हजार रुपए तक बचाए जा सकते हैं।

औद्यानिकीः औद्यानिकी में प्रायः नर्सरी तैयार करना, पुष्प, सब्जी व फल उत्पादन की इकाइयां सम्मिलित होती हैं। अतः इनमें से कोई भी विकल्प जोकि वहाँ की बाजार मांग एवं भूमि क्षमता के अनुकूल हो का चयन कृषक द्वारा किया जा सकता है। इस प्रकार की कृषि प्रणाली से कृषक सब्जी व फल उत्पादन कर अच्छा लाभ कमाने के साथ–साथ अपनी आमदनी भी सुनिश्चित करने में सफल हो रहे हैं।

मुर्गीपालनः अंडा व मांस उत्पादन हेतु मुर्गीपालन कर किसान वर्षभर लाभ कमा सकता है। तथा उनकी बीट को खाद के रूप में मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने हेतु उपयोग में लिया जा सकता है जिससे फसलोत्पादन में वृद्धि होगी एवं फसल अवशेष एवं अनाज को मुर्गियों के खाद्य के रूप में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार समेकित कृषि प्रणाली से आय में वृद्धि एवं संसाधनों की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सकती है।

बकरी पालनः बकरी को गरीब की गाय कहा जाता है क्योंकि बकरी पालन में लागत बहुत कम आती है एवं उत्पादन भी अपेक्षाकृत शीघ्र होता है इसलिए इनके उत्पादों से आमदनी जल्दी प्राप्त होना शुरू हो जाती है। अच्छी नस्ल की बकरी से किसान को औसतन 30–40 हजार रुपए प्रतिवर्ष की कमाई हो सकती है जोकि किसान के जीविकोपार्जन में महत्वपूर्ण योगदान होगा।

वर्मीकम्पोस्टः किसान अपने खेत पर गोबर व कचरे को केचुओं की सहायता से सड़ा कर अच्छी गुणवत्ता का वर्मीकम्पोस्ट तैयार कर सकता है जिसके उपयोग से वर्षभर में वह अपने खेत पर 50 प्रतिशत तक रासायनिक खाद की मात्रा कम कर सकता है । वर्मीकम्पोस्ट से मिट्टी की गुणवत्ता वृद्धि के साथ–साथ पैदावार में भी बढ़ोतरी होगी जिससे किसान की आय में भी वृद्धि हो सकेगी।

समेकित कृषि प्रणाली आधारित खेती एवं इसके फायदे

- समेकित कृषि प्रणाली आधारित खेती अपनाकर प्रति इकाई क्षेत्र से प्रति इकाई समय में अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है जिससे किसानों की आय में वृद्धि संभव है।
- कृषि अपशिष्ट व गोबर इत्यादि को बायोगैस बनाने के उपयोग में ला कर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है।
- इसमें एक से अधिक उद्यमों जैसे कि, फसल+पशुपालन (दुग्ध उत्पादन), फसल+मुर्गीपालन, फसल+बकरी/भेड़ पालन, फसल+मधुमक्खी पालन, फसल (चावल) मछलीपालन, फसल+औद्यानिकी आदि का समावेश आसानी से किया जा सकता है जो कि किसानो को रोजगार प्रदान करने के साथ ही वर्षभर आय का सतत प्रवाह बनाये रखने में सहायक होते हैं।
- फसल अवशेषों का उपयोग पशु चारे के साथ–साथ मशरूम उत्पादन में भी किया जा सकता है उदाहरण के तौर पर चावल, गेहूं व गन्ने के अवशेषो से बटन व

ढींगरी मशरूम आसानी से उगाई जा सकती है जो कि किसानो को अतिरिक्त आय प्रदान करने में सहायक होगी।

- समेकित कृषि प्रणाली में फसलों के साथ–साथ खेतों की मेंढ़ों पर चारे वाले वृक्ष लगाकर या कृषि वानिकी द्वारा भूमि के हर भाग को प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है जो कि किसानो की अतिरिक्त आय के अलावा पशुओं के लिए चारे का भी अच्छा स्रोत होंगे।
- फसल+मुर्गीपालन+मछलीपालन में फसल के दानों और मुर्गियों की बींट को मुर्गीपालन के लिए उपयोग में लिया जाता है, मछलीपालन उपयोग में लिया जा सकता है एवं तालाब की सिल्ट को फसल उत्पादन में खाद के रूप में प्रयोग लिया जा सकता है। इस प्रकार समेकित कृषि प्रणाली सीमांत और छोटे किसानों के लिए कम लागत से अधिक लाभ कमाने का जरिया है।
- मधुमक्खी पालन को सहायक व्यवसाय के रूप में अपनाकर कृषक परिवार अतिरिक्त आय कमा सकता है क्योंकि इसमें कम निवेश की आवश्यकता होती है अतः यह सीमांत एवं लघु किसानों, भूमिहीन मजदूरों व शिक्षित बेरोजगार युवकों के लिए भी फायदे का व्यवसाय हो सकता है।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि समेकित कृषि प्रणाली न सिर्फ उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग सुनिश्चित करने में सक्षम है अपितु यह सतत कृषि उत्पादन व वर्षभर रोजगार एवं आमदनी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पर्यावरण संरक्षण में योगदान के कारण यह जलवायु परिवर्तन के जोखिमों से निपटने में भी अहम भूमिका निभाती है। उपरोक्त तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि समेकित कृषि प्रणाली आधारित खेती मॉडल अपनाकर किसान न सिर्फ अतिरिक्त आय व रोजगार प्राप्त कर सकता है बल्कि यह निश्चित तौर पर कृषि के क्षेत्र में किसानों की आमदनी दौगुनी करने की दिशा में क्रांतिकरी कदम सिद्ध होगा।

उत्तम खेती मध्यम बान।
अधम चाकरी भीख निदान।।
भूमि ल भुमियां छोड़िए, बड़ौ भूमि को वास।
भूमि बिहीनी बेल जो, पल में होत बिनास।।
खेती उत्तम काज है, इहि सम और न होय।
खाबे को सबको मिलै, खेती कीजे सोय।।
एक हर हत्या दो हर काज।
तीन हर खेती चार हर राज।।
दस हल राव, आठ हर राना।
चार हलों का, बड़ा किसाना।।
खेती तौ थोरी करै, मेहनत करै सवाय।
राम चहै बा मनुस खों, टोटौ कभऊन आय।।
असाड़ सावन करी गमतरी, कातिक खाये, पुआ।
मांय बहिनियां पूछन लागे, कातिक कित्ता हुआ।।
उत्तम खेती आप सेती, मध्यम खेती भाई सेती।
निक्कट खेती नौकर सेती, बिगड़ गई तो बलाय सेती।।
खुद करै तौ खेती, नई तौ बंजर हेती।
खेती उनकी कहें, जो हल अपने हांत गहें।।
आदी खेती उनकी कहें, जो नित हल के संग रहें।
बयें बीज उपजै नई तहां, जो पूंछें कै हर है कहां।।

कम उपयोगी जामुन फल के चमत्कारी एवं गुणकारी लाभ

प्रेरणा नाथ्, एस.जे.काले* एवं मृदुला डी**

परिचय

जामुन (*सिज़िगियम कमिनी* एल), मर्टेस परिवार का सदाबहार और उष्णकटिबंधीय पेड़ है। यह भारत और इंडोनेशिया का मूल है। यह मलेशिया, मयांमार, पाकिस्तान और अफनागिस्तान सहित दक्षिणपूर्व एशिया के अन्य क्षेत्रों में भी उगाया जाता है। जैसे भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया, फिलिपींस, इंडोनेशिया में पाया जाता है। भारत में भी जामुन की काफी पैदावार होती है। जामुन उत्पादन की दृष्टि से भारत को विश्व में द्वितीय स्थान प्राप्त है। हमारे देश में महाराष्ट्र राज्य जामुन उत्पादन में सर्वोपरि है। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात, असम आदि राज्यों में भी जामुन की अच्छी पैदावार होती है। यदि वैज्ञानिक ढंग से इसकी बागवानी की जाये तो इससे काफी मुनाफा मिल सकता है। इसकी खेती भारत में सामान्तयः महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, राजस्थान, कर्नाटक और गुजरात में की जाती है। जामुन के अन्य सामान्य नाम जावा प्लम, काली बेर जंबुल और भारतीय ब्लैकबेरी हैं (तालिका–1)।

तालिका–1: जामुन का विभिन्न क्षेत्रों में उच्चारण

नाम	भाषा
इंडियन ब्लैक बेरी/इंडियन ब्लैक प्लम	अंग्रेजी
जामुन	हिन्दी
जम्बुल	मराठी
जम्बु	गुजराती
नरेले हन्नु	कन्नड़
नगा पझम	तमिल
नेरेदुपनदु	तेलगू
नवल पझम	मलयालम
जाम	बंगाली

जामुन, एक काफी तेजी से बढ़ती प्रजाति है जो 30 मीटर की ऊंचाई तक पहुंच सकती है और 100 से अधिक वर्षों तक रह सकती है। सामान्यतया जामुन के वृक्ष को छाया अथवा वायुअवरोधक के उद्देश्य से उगाया जाता है। इसका फल खट्टे–मीठे कसैले स्वाद के साथ–साथ स्वास्थ्यवर्द्वक गुणों से परिपूर्ण होता है। जामुन एक व्यापक महत्व का फल है। इसके फल में काफी पोषक तत्व पाए जाते है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक तत्वों को प्रदान कर हमारे शरीर को विभिन्न प्रकार के रोगों से लड़ने के लिए प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करता है। इसके रस से कार्बोहाईड्रेट, शुगर, रेशा, वसा, प्रोटीन, विटामिन ओर खनिज तत्व पाये जाते है। जामुन के छिलके में उपस्थित एंथोस्यानिं का उपयोग प्राकृतिक रंग के रूप में किया जाता है जोकि कृत्रिम रंगों के दुष्प्रभावों से रहित होता है। इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने में किया जाता है जैसे कि जैम, जैली एंवम् शरबत जो बहुत स्फूर्तिदायक एंव स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभकारी होते हैं।

जामुन का पोषक महत्व

स्वास्थ्य की दृष्टि से जामुन एक उत्तम फल है, जिसका औषधीय महत्व है। जामुन का बीज, प्रोटीन और कार्बोहाईड्रेट में भी समृद्ध होता है और कैल्शियम भी कुछ मात्रा में पाया जाता है। जामुन के फलों में प्रचुर मात्रा में एंथेसायनिन तथा

*बागबानी फसल प्रसंस्करण प्रभाग, केन्द्रीय कटाई उपरान्त अभियांत्रिकी एंव प्रौद्योगिकी संस्थान, अबोहर, पंजाब
**अनाज और तिलहन प्रसंस्करण प्रभाग, लुधियाना, पंजाब

फिनोल पाए जाते हैं, जिसमें उच्च कोटि की प्रतिऑक्सिीकारक क्षमता पायी जाती है। ये पदार्थ शरीर को निरोंगी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभातें हैं। फलों में रेशे,फलेवेनॉयडस, विटामिन–सी लोहा, तथा अन्य खनिज व विटामिन भी पाए जाते हैं। जामुन के फल का 70 प्रतिशत भाग खाद्‌य होता है और पके हुए फलों में मुख्यतः ग्लूकोस और फ्रक्टोज़ पाई जाती है। सुक्रोज फलों से पूरी तरह अनुपस्थित होती है। फल कई खनिज तत्वों से भरपूर होता है, और अन्य फलों की तुलना में कम कैलोरी प्रदान करता है। जामुन की रासायनिक घटकों की रचना तालिका–2 में दर्शायी गई है।

तलिका–2: जामुन के रासायनिक घटकों की रचना

घटक	मात्रा
कार्बोहाईड्रेट	14–19 प्रतिशत
प्रोटीन	0.7 प्रतिशत
वसा	0.1 प्रतिशत
रेशा	0.9 प्रतिशत
नमी	81.2 प्रतिशत
राख	0.4 प्रतिशत
कैल्शियम	0.02 मि.ग्रा./100 ग्राम
मैगनीशियम	35 मि.ग्रा./100 ग्राम
सोडियम	26.2 मि.ग्रा./100 ग्राम
फॉस्फोरस	0.01 मि.ग्रा./100 ग्राम
लोहा	1.2 मि.ग्रा./100 ग्राम
विटामिन–सी	18 मि.ग्रा./100 ग्राम
फॉलिक एसिड	3 मि.ग्रा./100 ग्राम
विटामिन–बी	0.038 मि.ग्रा./100 ग्राम
थायमिन	0.03 मि.ग्रा./100 ग्राम
राइबोफलेविन	0.01 मि.ग्रा./100 ग्राम
नियासिन	0.25 मि.ग्रा./100 ग्राम

जामुन की किस्म

जामुन फल की सबसे अधिक प्रचलित विविधता अक्सर आयताकार होती है और इसमें नीला रंग लिए गहरे बैंगनी फल होते हैं। फलों के गूदे का रंग गुलाबी होता है और बीच में एक बीज या गुठली होती है। दूसरी किस्म बैंगनी से सफेद रंग की होती है जो कि एक बीजहीन विविधता है।

तालिका–3: जामुन फल के विविध उपयोग

- जामुन विटामिन–ए और विटामिन सी का समृद्ध स्रोत है और ताजे फलों को अगर नमक के साथ लिया जाता है तो खाने के लिए स्वादिष्ट होते हैं।
- जामुन को जैम, जैली और स्क्वैश के विशिष्ट स्वाद के रूप में प्रसंस्कृत किया जाता है।
- पका हुआ जामुन उत्कृष्ट गुणवत्ता वाली शराब बनाने के लिए किण्वित किया जाता है।
- कच्चे फल के रस का उपयोग सिरका बनाने के लिए किया जाता है।
- फल की उच्च प्रति ऑक्सीकारक क्षमता होने के कारण यह तरह तरह की बिमारियों के इलाज के लिए दवाएं तैयार करने के लिए उपयोग किया जाता है।

जामुन के औषधीय एवं आयुर्वेदिक गुण

पत्तियों और छाल का उपयोग रक्तचाप और मसूड को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। जामुन के फल, रस और बीज में जैबोलिन नाम का एक जैव रासायनिक पदार्थ होता है, जो ग्लूकोज के उत्पादन में बढ़ोतरी के कारण चीनी में सटार्च के रोग के संक्रमण को रोकने के लिए उपयोग किया जाता है। इसके अलावा, जामुन का फल, रक्त, बवासीरों में रक्त बहने और यकृत विकारों को ठीक करने के लिए भी एक प्रभावी फल है।इसके फलों का रस हर सुबह नमक के साथ दो या तीन महीने के लिए लिया जाना चाहिए और प्रत्येक ऋतु में इस तरीके से फल का उपयोग जीर्ण रोगों के इलाज को प्रभावित करता है और प्रयोक्ता को रक्तस्राव के ढेर से आजीवन बचाएगा।

जामुन के वृक्ष का न केवल फल अपितु उसकी गुठली (बीज), पत्ते एंवम् छाल भी औषधीय गुणों से भरपूर हैं। कई वैज्ञानिक शोधकर्ताओं ने बताया है कि इस फल के नियमित उपयोग से मधुमेह रोगियों के रक्त शर्करा और ग्लाइकोसुरिया के स्तर में कमी होती है। इसके अलावा सूखे बीज और छाल के मिश्रण को दस्त और पेचिश के इलाज में लाभकारी माना जाता है। वृक्ष की छाल में उच्च कसैले गुण होते हैं और इसका उपयोग मुंह–वाश के रूप में किया जाता है। जामुन के पत्तों में एंटी–बैक्टीरियल गुण होते हैं और दांतों और मसूड़ों को मजबूत करने के लिए दवाईयाँ बनाने के लिए उपयोग किए जाते है। पेड़ की छाल विरोधी हेलमेटिक गुणों में समृद्ध है, और कई हर्बल दवाईयाँ तैयार करने के लिए प्रयोग में लायी जाती हैं। जामुन के फल का रस बेहद सुखदायक एंवम् ठंडी प्रकृति का होता है। यह पाचन तंत्र को शक्तिशाली बनाने में मदद करता है और वृक्ष की पत्तियां रक्तचाप और मस्तिष्कशोथ को नियंत्रित करने में भी मदद करती हैं।

जामुन के आयुर्वेदिक गुणों का संक्षिप्त विवरण तालिका–4 में दर्शाया गया है।

तालिका–4: जामुन के आयुर्वेदिक गुणों का संक्षिप्त विवरण

- जामुन विशेषकर बीज, मधुमेह रोग में अत्यन्त लाभकारी है। यह रक्त में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित करता है। जामुन और इसके बीज में उपस्थित रसायन शरीर पर हाइपोग्लाइसेमिक प्रभाव डालते हैं तथा स्टार्च के शर्करा में परिवर्तन को काफी हद तक प्रभावित करते है।
- जामुन एक प्राकृतिक रक्त शोधक है। जामुन पेट एंव पाचन तंत्र के लिए अत्यन्त गुणकारी है। यह पेट दर्द, वात रोग, आंत ऐंठन तिल्ली एंव दस्त रोगों में काफी राहत देता है।
- यह आंख तथा त्वचा सम्बन्धी विकारों के लिए अत्यंत लाभप्रद है।
- जामुन का उपयोग गुर्दे में पथरी के इलाज में हितकारी है।
- यह संक्रामक रोगों के निदान में भी लाभदायक है।
- जामुन की पती व छाल का उपयोग मुख सम्बन्धी समस्याओं में किया जाता है।
- जामुन में उच्च मात्रा में प्रतिऑक्सीकारक तत्व पायें जाते हैं, जो शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढातें हैं। अतः कैंसर जैसी गंभीर बीमारी की रोकथाम में इसका अच्छा योगदान है।

जामुन के बीज का पाउडर तथा पत्ती की उपयोगिता

जामुन के फल ही नहीं अपितु बीज पत्ती तथा छाल भी काफी उपयोगी होते है। इसके बीज का उपयोग विभिन्न प्रकार की दवाओं को बनाने में किया जाता है। प्राचीनतम समय से दवा बनाने में इसकी गुठलियों का प्रयोग किया जाता रहा है विशेषतः मधुमेह रोग के लिए इसका सेवन अत्यन्त लाभकारी बताया गया है। बीज में उच्च मात्रा में रेशा, प्रोटीन तथा फिनोलिक्स पाये जाते है, जिसका औषधीय उपयोग है। इसी प्रकार पट्टी और छाल भी दवाओं के रूप में इस्तेमाल होती है। जामुन के बीज को सुखाकर उसका पाऊडर बनाया जाता है और इसे बनाने के लिए ताज़ा जामुन के बीज लें यह गूदे समेत या गूदा रहित हो सकते हैं। इन्हें अच्छी तरह से धो लें तथा ट्रे शुक्षक में 55 डिग्री सेल्सियस पर सुखाएं।

गुठलियों को तब तक सुखाना चाहिए जब तक इनकी नमी 7 से 8 प्रतिशत न हो जाए। सूखने के बाद इन्हें ठंडा कर मिक्सर मशीन की सहायता से पाउडर बना लें और किसी नमी रहित जगह पर भंडारित करें एवं सुबह और शाम एक चम्मच खाली पेट सादे पानी से सेवन करें और लाभ पाएँ। जामुन के बीज में उपस्थित रासायनिक घटकों को तालिका–5 में दर्शाया गया है। जामुन पाउडर कैल्शियम और विटामिन का एक समृद्ध स्रोत है। प्रतिऑक्सीकारक गुणों से भरपूर पाउडर मानव शरीर से हानिकार विषाकत पदार्थों को निकालने मे सहायक होता है। विभिन्न भारतीय, चीनी और यूनानी चिकित्सा पद्धतियों में मधुमेंह की दवाओं को बनाने में यह पाउडर उपयोग किया जाता है। इसके इस्तेमाल से शरीर में शर्करा की मात्रा को नियंत्रित किया जाता है। अतः प्राचीन समय से यह औषधि के रूप में मधुमेह के रोग से लड़ने के लिए रामबाण इलाज माना जाता है।

तालिका–5: जामुन के बीज में रासायनिक घटकों की रचना

घटक	मात्रा
प्रतिशत	
कार्बोहाईड्रेट	70–75
प्रोटीन	6.5–7.0
वसा	0.3–0.5
रेशा	2.5–3.0
नमी	45–50
राख	1.8–2.0

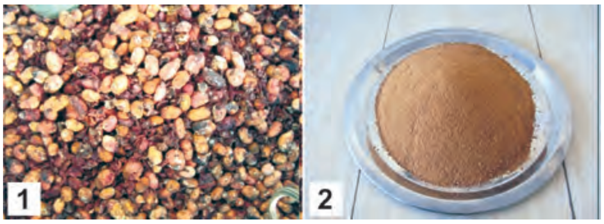

चित्र–2: जामुन का पाउडर बनाने की चित्रावली
(1) जामुन का बीज, (2) जामुन बीज पाउडर

निष्कर्ष

इस प्रकार यद्यपि जामुन की गिनती अल्प महत्व वाली व्यावसायिक फसलों में की जाती है, परन्तु अपने औषधीय गुणों के कारण इसका महत्व अन्य व्यावसायिक फसलों से कहीं अधिक है। जामुन का प्रसंस्करण लगभग नगण्य है। इस क्षेत्र में गंभीर प्रयास की आवश्यकता है।

पथरीली जमीन एवं जल कमी क्षेत्रों के लिए ड्रैगन फल की संभावनाएं

योगेश्वर सिंह*, धनंजय नांगरे*, महेश कुमार*, पी सुरेश कुमार*, पी.बी. तावरे* एवं एन पी सिंह*

ड्रैगन फल वाणिज्यिक रूप से एक लाभदायक पौधा है जिसमें अद्भुत स्वाथस्थ्यवर्धक गुण हैं परन्तु भारत के उत्पादकों का ध्यान आकर्षित नहीं कर सका है। ड्रैगन फल का उत्पादन सूखी कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्र वाले देशों जैसे आस्ट्रेलिया, चीन, इजरायल, मलेशिया, निकारगुवा, तायवान एवं वियतनाम में लोकप्रिय है। मृदीय रूप से विवश क्षेत्र विशेषकर दक्षिणी पठार के सूखा सम्भावित क्षेत्रों में इसकी क्षमता को ध्यान में रखते हुए भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान ने वर्ष 2013 में इसके वाणिज्यिक उत्पादन हेतु उपयुक्त प्रौद्योगिकी के विकास के लिए अनुसंधान कार्य प्रारम्भ किया, इन खेत परीक्षणों के परिणाम उत्साहवर्धक रहा और रोपण के दूसरे वर्ष से फल लगने लगे, आशा है कि पूर्ण उत्पादन सामर्थ्य पांच वर्षों में प्राप्त हो जाएगा। अन्य, क्षेत्रों में इसकी उत्पादन प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं जागरूकता की कमी को ध्यान में रखते हुए फल के बागानों को स्थापित करने हेतु कुछ दिशा निर्देश यहां दिए गए हैं।

वनस्पति एवं आकृति विज्ञान

वानस्पतिक रूप से ड्रैगन फल की तीन किस्में हैं नामतः रेड ड्रैगन संकर फल (*हायलोसेरियस पॉलीरिजस*), गहरा लाल ड्रैगन फल (*एच. केस्टीसेनसिस*) तथा व्हाइट ड्रैगन फल (*एच. अनडेटस*)। यह एक बारहमासी, तेजी से बढ़ने वाली लता है जिसका त्रिकोणाकार या कभी–कभी चार या पांच तरफा तना होता है। तना मांसलदार, बेल जैसा जिसके अनेक शाखाओं वाले खंड होते हैं। प्रत्येक खंड के तीन लहराने वाले पंख या सींग जैसे मार्जिन वाले रिब्से और 1–3 स्पाइन या कभी कभी स्पाइन नहीं भी होते है। ये वायवीय जड़ों का कार्य करते हैं और चढ़ाई में मददगार हैं। रंध्र (स्टोमेटा) बाहरी त्वचा में छिप जाते हैं और तना ऊतकों में काफी मात्रा में मूलोति (पैरेनकाइमा) भरा होता है। चूंकि यह फोटोपीरियड अनुकूल फसल है, अतः पुष्पण सामान्यतः मई से सितंबर के दौरान होता है, जब दिन लम्बे होते हैं। इसमें पुष्पण और फलन दोनों समकालीन हैं जो 6–8 फ्लैशेस में होता है। चूंकि फल रात के दौरान लगता है अतः चमगादड़, ऑक कीट तथा अन्य निशाचर कीटों के माध्यम से परागण होता है। यह फसल भारत के लिए नई है, अतः फ्रूट सेट की वृद्धि के लिए हाथ के द्वारा परागण लाभदायक है, चूंकि इस प्रजाति में आत्म–संगति कमजोर होती है। अतः निम्न स्तर के फ्रूट सेट से बचने के लिए यह सिफारिश की जाती है कि बहु–जीनप्ररूपों को उगाया जाए। यद्यपि, एच. अन्डेरटस के मामले में यह समस्या नहीं है, चूंकि यह आत्मज–संगति प्रजाति है। इसका फल लंबाकार इपिजियस बेरी और इसके छिलके लाल रंग के होते हैं जिन पर हरे रंग के स्केमल्स होते हैं तथा इनमें सफेद, लाल छोटे मुलायम काले बीज होते हैं। अंडाशय (पल्पम) और रिसेपटेकल (पील) दोनों से ही फल का विकास होता है। फल के विकास के 25 दिनों के बाद छिलके का रंग हरे से लाल हो जाता है। पुष्पण के लगभग 30 से 35 दिनों तथा फ्रूट सेट के 25–30 दिनों के बाद फलों की तुड़ाई की जा सकती है।

जलवायु

ड्रैगन फल के लिए उष्ण कटिबंधीय जलवायु उपयुक्त है। इसके लिए अनुकूलतम तापमान 20 से 30० से. है। ड्रैगन फल का मूल उन क्षेत्रों से है जहां पर्याप्ता बरसात (दक्षिणी और मध्य अमेरिका) है। पौधे के स्वस्थ विकास के लिए औसतन 500–1500 मि.मी. बरसात अनुकूल है। तथापि, सूखे क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाएं सुनिश्चित होने पर इसकी खेती की जा सकती है। अत्यधिक वर्षा से फूल झड़ सकते हैं तथा जल निकासी न होने पर कभी–कभी तना और फल सड़ भी सकते हैं।

सस्य/पालन पद्धतियां

ड्रैगन फल की व्युत्पति बीज या वनस्पतिक रूप, जैसे कटिंग्स के उपयोग से होती है। परिपक्व तने के 15 से 30 सें.मी. लंबे कटिंग्स का उपयोग किया जाता है ताकि बेहतर पौधे उगाए जा सके और परिपक्व कटिंग्स को कीटो से क्षति

*राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, मालेगाँव, बारामती, पुणे

देने का समय	उर्वरक का प्रकार	प्रति घोल अनुप्रयोग की दर
अंतिम फसल के तुरंत बाद	नाइट्रोजन	200 ग्रा.
	फास्फोरस	250 ग्रा.
	गोबर की खाद	25ा ग्रा.
दो महीने बाद	नाइट्रोजन	200 ग्रा.
	फास्फोरस	200 ग्रा.
	पोटेशियम	150 ग्रा.
फूल आने से ठीक पहले	नाइट्रोजन	150 ग्रा.
	फास्फोरस	200 ग्रा.
	पोटेशियम	100 ग्रा.
तीसरे आवेदन के एक महीने बाद	नाइट्रोजन	100 ग्रा.
	फास्फोरस	100 ग्रा.
	पोटेशियम	75 ग्रा.
चौथे आवेदन के एक महीने बाद	नाइट्रोजन	100 ग्रा.
	फास्फोरस	100 ग्रा.
	पोटेशियम	75 ग्रा.
पांचवे आवेदन के एक महीने बाद	नाइट्रोजन	100 ग्रा.
	फास्फोरस	100 ग्रा.
	पोटेशियम	75 ग्रा.

कम होती है। रोग रोकथाम (विशेषकर सड़न रोग से) के लिए, कटिंग्स को रोपण से 5–7 दिन पूर्व कवकनाशियों से ठंडे एवं सूखे क्षेत्र में उपचार किया जाता है। नर्सरी में 30–40 दिनों में जड़ निकले कटिंग्स मुख्य खेत में प्रतिरोपण के लिए तैयार हो जाते हैं। पौधों के लिए पूर्ण सूर्य प्रकाश अनुकूल है अतः रोपण के लिए खुले क्षेत्र उपयुक्त हैं। पौधों के बीच 4 x 3 मीटर की दूरी हवा के संचरण के लिए पर्याप्त है और रोग प्रकोप के अवसर कम रहते है जबकि कम उपजाऊ वाले सूखे क्षेत्र में सघन रोपण (3 x 3 मी.) की सिफारिश की जाती है ताकि प्रति यूनिट क्षेत्र की उपज कमी की क्षतिपूर्ति की जा सके। ड्रैगन फल का पौधा ऊपर की ओर चढ़ने वाला एक एपिफाइटिक कैक्टस है, अतः इसे ऊपर की ओर बढ़ने के लिए कांक्रीट, लकड़ी या दीवार का सहारा आवश्यक है। अपरिपक्व तने को कॉलम के साथ बांध दिया जाता है ताकि वायवीय जड़ों का विकास हो सके। पार्श्व तने को प्रतिबंधित किया जाता है और केवल दो या तीन मुख्य तने को विकसित होने दिया जाता है। चयनित कॉलम टिकाऊ तथा मजबूत होना चाहिए ताकि 100 कि.ग्रा. तक वजन की बेल के बोझ को उठा सके। अतः कंक्रीट या मजबूत लकड़ी के कॉलमों की सिफारिश की जाती है। इसके लिए 100–150 मि.मी. व्यास के 2 मीटर लंबे कॉलम को 40 से.मी. तक जमीन में गाड़ दिया जाता है। भारत के दक्षिणी प्रदेश में मिट्टी की गहराई उथली है वहां भारी पोकलेन मशीनों द्वारा किए गए गड्ढो में कांक्रीट के कॉलम लगाए जाते हैं, चूंकि मशीन से कॉलम के सटीक गड्डे बनाये जाते है जिससे कॉलमों को आसानी से गाड़ दिया जाता है।

स्टील का तार या फ्रेम का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे बेल को क्षति पहुंच सकती है। रोपण से पूर्व ही कॉलम को खड़ा कर दिया जाना चाहिए ताकि बेल इस पर आसानी से चढ़ सके। प्रत्येक कॉलम के निकट चार पौधे लगाए जाने चाहिए। रोपण कार्य सामान्यतः वर्षाकाल में किया जाता है और इसके बाद पौधे को सहारा देने हेतु 50 से.मी. ऊंची मेड़ बनाई जाती है। चूंकि बेल तेजी से बढ़ती हैं अतः जमीन पर गिरने की संभावनाएं अधिक होती हैं। अतः इस समस्या को दूर करने के लिए बेलों को बांधने तथा नियमित रूप से पार्श्व शाखाओं की छंटाई आवश्यक परिचालन कार्य है। एक बार बेल कॉलम तक पहुंच जाने पर शाखाओं को मुक्त रूप से बढ़ने दिया जाता है परन्तु तब तक मुख्य बेल को ही बढ़ने दिया जाता है जिसे संरचनात्मक छंटाई (प्रूनिंग) कहा जाता है। काटी गई सामग्रियों का उपयोग नई पौध बनाने में किया जा सकता है जिससे अतिरिक्त आय

होती है। गुच्छे का घनत्व बढ़ने पर कीट और रोग की समस्या उत्पन्न होती है। इसके निवारण के लिए शाखाओं की संख्या को अवांछित शाखाओं की छंटाई के माध्यम से कम करते हुए 30 से 50 के बीच रखना चाहिए जिसे प्रॉडक्शन ट्रेनिंग कहा जाता है। कटाई के उपरांत मुख्य शाखा पर एक या दो गौण शाखाओं वाले 50 मुख्या शाखाओं को रखकर तृतीय और त्रैमासिक शाखाओं को काटकर उनका कवकनाशियों से उपचार किया जाता है।

लंबी अवधि तक सूखा पड़ने पर सिंचाई का उपयोग किया जाता है। हालांकि, फूल खिलने से पूर्व की अवधि में सूखापन ही रखा जाता है ताकि अधिक फूल खिल सकें। मृदा की नमी को बनाए रखने हेतु सूक्ष्म सिंचाई उपयोगी होती है। रोपण के दौरान सामान्यतः 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर की खाद तथा 100 ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति पौध की आवश्यकता होती है। प्रथम दो वर्षों में प्रत्येक पौधे को प्रति वर्ष 500 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. फास्फोरस एवं 500 ग्रा. पोटेशियम दिया जाता है। प्रत्येक पोल अथवा चार परिपक्व पौधे को प्रतिवर्ष 800 ग्रा. नाइट्रोजन, 900 ग्रा. फास्फोरस तथा 550 ग्रा. पोटेशियम दिया जाना चाहिए। इस परिमाण को कम से कम चार किस्तों में बांटकर तीन माह के अंतराल पर दिया जाता है।

इंटरमीडियट (मध्यम) जोन में पुष्पण अप्रैल–मई माह के दौरान प्रारंभ होता है। रोपण से 6–9 माह पश्चात् ड्रैगन फल लगते हैं। इसमें प्रथम वर्ष से ही फल लगने लग जाते हैं जबकि तीसरे वर्ष से संभावित औसत उपज 12 से 15 टन प्रति हे. प्राप्त की जाती है। एक फल का औसत भार 250 से 350 ग्रा. होता है। अतिरिक्त फूलों एवं फलों को छांट दिया जाना चाहिए ताकि फल के अच्छे आमाप एवं गुणवत्ता बनी रहे। फलों को हवादार बैगों से ढक दिया जाना चाहिए ताकि सूर्य की तेज किरणें उन पर सीधे तौर पर न पड़ें जिससे फल के रंग की क्षति होती है और इससे पक्षियों से भी रक्षा होती है।

रोपण पैटर्न

जाली

पुष्पन

कच्चा फल

पका हुआ फल

झूलना

कपड़ा पहनाना

फल

कटे हुए फल का दृश्य

भा.कृ.अनु.प.–राअस्ट्रैप्रसं, बारामती में खेती की जाती पिताया फल की फसल स्थापना और विकास के चरण

कटाई और भंडारण

अधिकांशतः कटाई जुलाई–नवंबर में होती है जो 6–8 फ्लैशेस में होता है। फल के प्रारम्भिक विकास काल में अपरिपक्व फल का बाहरी छिलका चमकदार हरा होता है और जैसे–जैसे फल पकने लगता है तो यह लाल रंग में बदल जाता है। इस फसल में एक और सुविधा यह है कि बाजार की मांग के अनुसार कटाई की जा सकती है। स्थानीय बाजारों के लिए छिलके के रंग हरे से लाल गुलाबी रंग बदलने के 3–4 दिन बाद कटाई की जा सकती है जब कि दूर के बाजारों के लिए रंग बदलने के एक दिन बाद कटाई की जा सकती है। ड्रैगन फल के शैल्फ लाइफ पर अनुसंधान कार्य भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती में किया गया है। भंडारण अध्ययन के प्रारम्भिक दौर में देखा गया है कि फल की गुणवत्ता बनाए रखने की सम्भावनाएं अच्छी हैं, 5–7 दिनों तक परिवेशी तापमान पर, शीत भंडारण में 10–12 दिनों तक 180 से. तापमान पर और 20–21 दिनों तक 80 से. के तापमान में रखा जा सकता है।

सफलता की गाथा एवं निष्कर्ष

दक्षिणी पठार क्षेत्र के कुछ नवोन्मेषी किसानों ने ड्रैगन फल के उत्पादन को मनी–स्पिनिंग व्यावसाय के रूप में रू 6.0 से 7.5 लाख प्रारम्भिक लागत से आरम्भ किया। चूंकि इस फसल में गहन प्रबंधन अन्तः सस्य क्रियाओ की आवश्यकता नहीं होती है, और इससे निकट के शहरी बाजारों से खुदरा मूल्य रू 150–250 प्रति कि.गा. प्राप्त होता है, अतः किसान दूसरे एवं तीसरे वर्ष के दौरान रू 3–4 लाख वर्ष/हे. तथा चौथे वर्ष से रू 6–7 लाख की आय अर्जित कर सकता है। इसके अलावा किसान रोपण के एक वर्ष बाद ही पौधों से छंटाई की गई सामग्री को पौध के रूप में तथा दूसरे वर्ष से फल बेचकर अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं। चूंकि इस फसल को विपरीत स्थितियों में कम निवेशों के साथ अपनाया जा सकता है, अतः इसे पथरीली जमीन में अपनाने एवं विस्तार करने की अपार सम्भावनाएं हैं। इससे न केवल दक्षिणी प्रदेश के अनुपयोगी पथरीली जमीन का उपयोग होगा बल्कि किसानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। एक बार यह फसल बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक फसल के रूप में स्थांपित हो जाने पर निर्यात की भी अच्छी सम्भावनाएं हैं।

आज की सबसे पहली और सबसे बड़ी समाज सेवा यह है कि हम अपनी देशी भाषाओं की ओर मुड़े और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करें। हमें अपनी सभी प्रादेशिक कार्रवाइयां अपनी–अपनी भाषाओं में चलानी चाहिए तथा हमारी राष्ट्रीय कार्रवाइयों की भाषा हिन्दी होनी चाहिए। जब तब हमारे स्कूल और कॉलेज विभिन्न देशी भाषाओं में शिक्षा देना आरंभ नहीं करते, तब तक हमें आराम लेने का अधिकार नहीं है।

–राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुंदर हार सृजन करेगा।

–डॉ. जाकिर हुसैन

आय उत्सर्जन में कृषि प्रसंस्करण की स्थापना एवं उपयोगिता

निधि अग्रवाल*

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। यहां करीब 65 प्रतिशत जनसंख्या कृषक या उससे संबंधित कार्य करती है। भारत लगभग 285 करोड़ टन खाद्यान्न का उत्पादन कर अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है। परन्तु कटाई उपरान्त फसल का नुकसान भी भारत में बहुत होता है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग 92 हजार करोड़ रूपये का कृषि उत्पाद नष्ट हो जाता है। इस नुकसान का मुख्य कारण है कटाई उपरान्त उचित देखभाल या प्रसंस्करण नही करना।

भारत देश में कई किसान ऐसे है जिन्हें कटाई एवं गहाई के बाद अनाज को कैसे सुरक्षित रखना है, इसकी जानकारी नहीं होती।

कई बार तो किसानों को इसका उचित मूल्य बाजार में नहीं मिल पाता। अनाज बोने से लेकर कटाई एवं गहाई में लगी लागत से भी कम लागत में अनाज मंडी में आता है। और कर्ज चुकता न होने के कारण कई किसान आत्महत्या कर लेते है।

आय में बढ़ोतरी हेतु गांव में ही एक कृषि प्रसंस्करण केन्द्र की स्थापना की जा सकती है। जिसमें अनुमानित वर्ग मीटर में निम्नलिखित कृषि प्रसंस्करण संबंधित मशीनरी रखने की उपयुक्त जगह बनाई जा सकती है।

- पैर एवं मोटर चालित सफाई एवं श्रेणीकरण मशीन
- दाल मिल
- बहुउद्देशीय चक्की
- आटा मिल
- मूंगफली दाना निकालने का यंत्र
- गेहूँ का छिलका निकालने की मशीन
- पल्वराईजर
- पत्थर निकालने की मशीन

पैर एवं मोटर चालित सफाई एवं श्रेणीकरण मशीनः इस मशीन से किसी भी तरह का अनाज जैसे; गेहूँ, चना, तुअर, मक्का, मूंग, उड़द, ज्वार एवं मसूर की सफाई एवं श्रेणीकरण किया जा सकता है। इसकी क्षमता 300–800 कि.ग्रा. प्रति घंटा है। बिजली से चलने के लिए 0.5 हार्स पावर की मोटर लगाकर दो श्रमिक इसे आसानी से चला सकते है। इसकी कीमत लगभग 20,000/– (मोटर सहित) है। इसकी बिजली खपत 0.4 इकाई/घंटा है। इस यंत्र को केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल से प्रापत किया जा सकता है।

दाल मिलः इस मशीन से तुअर, मसूर, उड़द एवं मूंग की दाल के छिलके की छिलाई की जा सकती है। कच्ची तुअर की पहली छिलाई करने के बाद मोटर चालित सफाई एवं श्रेणीकरण यंत्र में इसके छिलके को अलग कर कच्ची तुअर का श्रेणीकरण किया जाता है। तुअर का श्रेणीकरण करने के बाद दो भागित तुअर को एक डिब्बे में डालकर आधा से पौन घण्टा पानी में छानकर अलग कर दिया जाता है एवं तगाड़ी की सहायाता से त्रिपाल पर बड़े ड्रायिंग यार्ड में दो दिन के लिये सुखाया जाता है। समय–समय पर तुअर की उलट–पलट की जाती है, जिससे हर दाने को हवा लग सके। तुअर की

*वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, केन्दीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, नबीबाग, भोपाल

आर्द्रता जब 9–10 प्रतिशत आ जाये, तब बड़े डिब्बे में भरकर दाल मिल में दूसरी छिलाई की जाती है, इसके बाद मोटर चलित सफाई एवं श्रेणीकरण यंत्र में इसे श्रेणीकृत किया जाता है छिलका एवं टूटन पशु आहार में रखा जाता है एवं तुअर दाल को एकत्रित कर बिना पॉलिशिंग के एक, दो या पाँच कि.ग्रा. के पैक में पैकिंग की जाती है। यह तुअर दाल मार्केट में आसानी से दे सकते है।

बहुउद्देशीय चक्की: इस मशीन/यंत्र से किसी भी अनाज का दलिया या आटा बनाया जा सकता है। यह एक सिंगल फेस, एक हॉर्स पॉवर की मोटर से चलती है। इसकी क्षमता अनाज अनुसार 11–20 कि.ग्रा./घण्टा है। मोटर सहित इसकी कीमत लगभग 20,000/– है। पाटो के द्वारा अनाज को मोटा एवं बारीक किया जा सकता है।

आटा मिल: इस मशीन/यंत्र से साफ सुथरा अनाज का आटा बनाया जाता है। इसके पाटो का आकार 18 इंच है। इस मशीन की कीमत मोटर सहित 22,000/– है। इसकी क्षमता 70–100 कि.ग्रा./घण्टा है जो कि अनाज की श्रेणी पर निर्भर करती है। यह 7.5 हॉर्स पॉवर की क्षमता से चलती है। इसमें बिजली का खर्च 6–8 इकाई/घंटा है।

मूंगफली छिलके से दाने अलग करने का यंत्र: यह एक हस्तचालित यंत्र है इससे मूंगफली दाना एवं छिलका अलग किया जाता है। बाद में मूंगफली को सूपा से अलग कर फली दाना एक, दो या तीन कि.ग्रा. में पैक किया जाता है।

इन्डो सॉ दाल मिल: इस मशीन से दलहन जैसे तुअर, मूंग, मसूर, उड़द एवं चना की पहली एवं दूसरी मिलिंग द्वारा पॉलिश की दाल बनाई जा सकती है। इसकी क्षमता अनाज अनुसार 80–120 कि.ग्रा./घण्टा है इसकी कीमत लगभग रू. 1,42,000/– है। यह एक हॉर्स पॉवर एवं सिंगल फेस की मोटर से चलती है। इसकी बिजली खपत 1 इकाई/घंटा है।

पलवराईजर: इस मशीन से किसी भी प्रकार के साबुत मसालों को पीसा जा सकता है। उचित रखरखाव के द्वारा इस मशीन से खड़ी धनिया, हल्दी, जीरा, काली मिर्च एवं अन्य औषधीय जड़ी बूटियां भी पीसी जा सकती है इसकी क्षमता 70–120 कि.ग्रा./घंटा है। यह 7.5 हॉर्स पॉवर की मोटर से चलाई जाती है। इसकी कीमत 65,000/– रू. है।

पत्थर निकालने की मशीन: इस मशीन से साबुत अनाजों से पत्थर (डीस्टोनर, कंकड) निकाल सकते है।

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

राष्ट्रभाषा का प्रचार करना, मैं राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूं।

जब तक देशों में अंग्रेजी का अधिपत्य है तब तक स्वतंत्रता पर जनता का अधिकार अधूरा है।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

देश के विभिन्न भागों के निवासियों के व्यवहार के लिए सर्वसुगम और व्यापक तथा एक स्थापित साधन के रूप में हिंदी का ज्ञान आवश्यक है।

–सी.पी. रामस्वामी अय्यर

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिंदी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिंदी को प्राप्त है, वह किसी और भाषा को नहीं मिल सकता है।

–महात्मा गांधी

भारत के बहुतायत लघु किसानों को एकत्रित करने की जरूरत एवं रणनीतियां

विनायक निकम* एवं अबिमन्यु झाझड़िया*

भारत की आबादी का करीब 70 फीसदी हिस्सा गांवों में रहता है, जहां 52 फीसदी लोग कृषि क्षेत्र में कार्यरत है। भारत मे कुल 82 फीसदी लघु और सीमांत भूमि वाले किसान हैं जिनके पास देश के खेती योग्य क्षेत्र लगभग 44 फीसदी है। कृषि जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2000–01 में भारत में लगभग 121 मिलियन कृषि जोते थीं, जिनमें से लगभग 99 मिलियन छोटे और सीमांत किसान थे। वर्ष 2000–01 में औसत आकार घट कर 1.37 हेक्टेयर रह गया है जो कि वर्ष 1970–71 में 2.3 हेक्टेयर था। इससे पता चलता है कि दिनो दिन छोटे और सीमांत किसानों की संख्या बढ़ रही है। इसलिए, सतत कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा के लिए एवं राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए समाज के इस विशाल तबके का विकास आवश्यक है।

इसके लिए हमे विकास के ऐसे स्वरूप की जरूरत है जो कि किसानों के नेतृत्व मे बना हो, विकेन्द्रीकृत हो क्षेत्र और स्थान विशिष्ट हो और जहां पर निजी एवं गैर–सरकारी संगठनों की भागीदारी हो। इन लघु किसानों को जुटाने और संगठित करने की आवश्यकता है जिससे उनकी संसाधनों की बाधाओं को दूर किया जा सकता है और वे बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था एवं अधिक सौदेबाजी की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। कुछ महत्वपूर्ण रणनीतियां जिनके माध्यम से इन छोटे और सीमांत किसानों को जुटाया जा सकता है और संगठित किया जा सकता है वे इस प्रकार हैः

किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ)

किसान आधारित संगठनों में शामिल होने से लघु किसानों को उनके उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन गतिविधियों के लिए इनपुट, क्रेडिट और बाजार की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सकती है। ज्यादातर किसानों के संगठन अपनी खपत के लिए केवल उत्पादन के मुकाबले बाजार के लिए उत्पादन या फसल पर अधिक ध्यान देते है जो कि लघु किसानों के कल्याण को बेहतर बनाने के लिए अच्छा हैं। किसान उत्पादक संगठन के साथ जुड़कर किसानों को निम्नलिखित लाभ प्राप्त हो सकते हैंः

- किसान अपने कृषि साधनो को संग्रह करके, अपनी मोल–भाव की शक्ति को मजबूत कर सकते हैं।
- किसान अपने कृषि साधनो को संग्रह करके, खेती गतिविधियों से जुड़े जोखिम को कम कर सकते हैं।
- अपने कृषि साधनो को संग्रह करके, किसान विपणन की विभिन्न प्रणालियों तक पहुंच सकते हैं।
- अपने कृषि साधनो को संग्रह करके, किसान अर्थव्यवस्था के स्तर में सुधार से लाभान्वित हो सकते हैं।
- किसान अपने कृषि साधनो को संग्रह करके, निवेश के साथ जुड़ी औसत तय लागत और लेनदेन की लागत को कम करने में सक्षम हो जाते हैं।

अनुबंध खेती

यह बाजार में तीन महत्वपूर्ण खिलाड़ियों किसान, निजी कंपनी या कंपनी और उपभोक्ता के एकीकरण की प्रक्रिया है। यह लघु एवं सीमांत किसानों के श्रम और प्रभावकारिता, निजी कंपनियों के प्रबंधन कौशल एवं पूंजी और उपभोक्ताओं की पसंद एवं विकल्पों को जोड़ती है, जो कि तीनों के लिए फायदेमंद है। यह कृषि उत्पादों का किसानों को निर्धारित बाजार मूल्य प्रदान करके उत्पादक सामग्री, प्रौद्योगिकी, सलाहकार और जोखिम प्रबंधन में मदद कर सकते हैं इसलिए समुचित स्तर पर लघु एवं सीमांत किसानों को जुटाने और उन्हें संगठित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। यह आपूर्ति श्रृंखला और मूल्य श्रृंखला को सुधारता है और फसल जोखिमों को कम कर देता है। इस तरह से लघु एवं सीमांत किसानों को अधिक आय देने में मदद करता है। विशेषज्ञों ने अनुबंध खेती को कृषि क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश को बढ़ाने के एक अवसर के रूप में भी देखा है।

*केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, नबीबाग, भोपाल–462038

सहकारी समितियां

जमीनी स्तर पर सहकारी समिति विभिन्न आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में लगे असुरक्षित और असंगठित लोगों को संगठित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सहकारी आंदोलनों ने साहूकारों से लोगों के शोषण को रोकने और विशेष रूप से लघु किसानों, ग्रामीण कारीगरों, भूमिहीन श्रमिकों, निराश्रय महिलाओं आदि की आर्थिक स्थिति को सुधारने में मदद की है। सहकारी समिति के माध्यम से किसान अपने संसाधनों को संग्रहित करके अर्थव्यवस्था के स्तर एवं मोल–भाव की शक्ति में सुधार कर सकते हैं। महाराष्ट्र राज्य में, महाग्रेप ने सहकारी समितियों की इस क्षमता का इस्तेमाल करके 15 अंगूर उत्पादक सहकारी सोसायटी को विपणन भागीदार बनाकर एकत्रित किया, जिससे लघु किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार से जुड़ सकें, जो लघु एवं सीमांत किसानों के लिए व्यक्तिगत रूप से संभव नहीं था।

स्वयं सहायता समूह/किसान हित समूह

विभिन्न कृषि जरूरतों को पूरा करने के लिए एसएचजी/एफआईजी के माध्यम से समूह संग्रह और संगठन में लघु किसानों की ताकत देखी गयी है। ऐसा करके वे अपनी बचत एकत्र करके और खपत एवं निवेश दोनों के लिए ऋण के लिए अवसर पैदा कर सकते है। कृषि गतिविधियों में उनके प्रमुख योगदान के बावजूद कृषक महिलाओं की विस्तार, पूंजी, सूचना और बाजार तक पहुंच बहुत सीमित है। एसएचजी/एफआईजी का गठन महिलाओं और युवाओं के वित्तीय समावेशन में मदद करेगा, उन्हें सूक्ष्म उद्यमों, कृषि में निवेश करने और उनकी आय एवं जीवन स्तर में सुधार के लिए अधिक पैसा देगा।

नई विपणन प्रणाली

हमे ऐसी नई विपणन प्रणाली की जरूरत है, जो आपूर्ति श्रृंखला में मध्यस्थ की संख्या को कम करने और आधुनिक सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ किसानों और उपभोक्ताओं के बीच संपर्क को बढ़ाती हो, इससे लघु एवं सीमांत किसानों की आय में वृद्धि करने में मदद हो सकती है। ई–चौपाल जैसी पहल ने संसाधन विहीन लघु एवं सीमांत किसानों को बाजार की आसूचना से कीमतों के बारे में सही सूचना देकर अपने उत्पाद को बाजार में उच्च मूल्य पर बेचने में मदद की है। आंध्र प्रदेश के रथू बाजार और महाराष्ट्र के शेतकारी बाजार नए विपणन पहल के अन्य उदाहरण हैं जो किसानो को उपभोक्ता से जोड़ने हैं।

इस तरह, भारतीय कृषि में लघु एवं सीमांत किसानो की विशाल उपस्थिति को देखते हुए उपरोक्त उपाय, उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते है।

हताश न होना सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह मनुष्य को कर्मों में प्रेरित करता है और उत्साह ही कर्म को सफल बनाता है।

–वाल्मिकी

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है और उद्यम सबसे बड़ा मित्र, जिसके साथ रहने वाला कभी दुखी नहीं होता।

–भर्तृहरि

जीवन की जड़ संयम की भूमि में जितनी गहरी जमती है और सदाचार का जितना जल दिया जाता है उतना ही जीवन हरा भरा होता है और उसमें ज्ञान मधुर फल लगता है।

–दीनानाथ दिनेश

प्राकृतिक संसाधन प्रबंध प्रभाग का परिचय

भाकृ.अनु.प. का प्राकृतिक संसाधन प्रबंध प्रभाग प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रबंध तथा टिकाऊ उपयोग के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने हेतु मूलभूत तथा नीति–विषयक अनुसंधान करके देश में खाद्य, पोषण तथा पर्यावरणीय सुरक्षा प्रदान कर रहा है। विभिन्न विषय–वस्तुओं यथा मृदा सूची एवं लक्षण–वर्णन, मृदा–जल–पोषक–तत्व समेकित प्रबंधन, जल–संभर प्रबंधन, संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ, फसल विविधीकरण, समेकित खरपतवार प्रबंधन, कृषि–वानिकी, बारानी कृषि, शुष्क, तटीय तथा पर्वतीय कृषि, अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन, जलवायु अनुकूल कृषि, संरक्षण कृषि, अपशिष्ट जल प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सहित समेकित कृषि पद्धति और पोषक–तत्वों तथा जल के उपयोग की दक्षता को बढ़ाने के लिए नैनो–प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग के परिप्रेक्ष्य में, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध अनुसंधान कार्यक्रमों की प्राथमिकता का निर्धारण किया गया है। यह प्रभाग कृषकों की सहभागिता पर आधारित प्रणाली से अनुसंधान आयोजित कर रहा है और आधारभूत स्तर पर मुद्दों का समाधान कर रहा है तथा कृषकों के पास उपलब्ध संसाधनों, परंपरागत देशी प्रौद्योगिकीय जानकारी एवं आधारभूत स्तर पर कृषि–नवोन्मेषों को ध्यान में रखते हुए स्थान–विशिष्ट, किफायती, पर्यावरण हितैषी, सामाजिक रूप से स्वीकार्य विज्ञान–सम्मत कृषि पद्धतियों को विकसित कर रहा है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंध के अनुसंधान के परिणामों को सरकार की विभिन्न विकासपरक योजनाओं के माध्यम से संवर्धित किया गया है और ये देश में कृषि उत्पादकता में वृद्धि करने में योगदान कर रही है।

विजन

देश में खाद्य, पोषण,पर्यावरणीय और आजीविका सुरक्षा के लिए प्राकृतिक संसाधनों का टिकाऊ प्रबंधन।

मिशन

निवेशों के प्रयोग की उच्चतर दक्षता, कृषि उत्पादकता तथा लाभप्रदता के लिए, प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना स्थान–विशिष्ट, कम लागत की पर्यावरण हितैषी संरक्षण और प्रबंधन प्रौद्योगिकियों का विकास

अधिदेश

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के क्षेत्र में टिकाऊ कृषि उत्पादन और संसाधन संरक्षण के लिए अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों का नियोजन, समन्वयन एवं निगरानी तथा प्राकृतिक संसाधनों के क्षेत्र में ज्ञान भंडार के रूप में सेवा प्रदान करना।

संगठनात्मक ढांचा

सहयोगी केन्द्रों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के व्यापक नेटवर्क के साथ 15 अनुसंधान केन्द्रों, 10 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं, 3 नेटवर्क परियोजनाओं एवं जल तथा संरक्षण कृषि पर 2 अनुसंधान सहायता–संघों (कन्सोर्शिया) के माध्यम से प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन से जुड़े मुद्दों का समाधान किया जाता है।

उप महानिदेशक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध	
सहायक महानिदेशक, मृदा एवं जल प्रबंधन	15 अनुसंधान संस्थान
सहायक महानिदेशक, सस्य विज्ञान एवं जलवायु परिवर्तन	10 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं 3 नेटवर्क परियोजनाए 2 अनुसंधान सहायता–संघ (कन्सोर्शिया) मंच

प्राथमिकता क्षेत्र

प्राकृतिक संसाधन प्रबंध प्रभाग की प्रमुख चिंताएँ कम कृषि उत्पादकता और लाभप्रदता, भूमि का निम्नीकरण, जल की निम्न उत्पादकता, मृदा की उर्वरता में कमी होना तथा पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता का कम होना, जलवायु विपथन (असामान्यता), वृक्ष आच्छादन की क्षति तथा पर्यावरणीय–प्रणाली सेवाओं में गिरावट सहित अजैविक तनाव (स्ट्रैस) का होना है। इन मुद्दों का समाधान करने के लिए, प्रभाग ने अनुसंधान के निम्नलिखित प्राथमिकता क्षेत्र निर्धारित किए हैं:

- भू–संसाधन सूची एवं लक्षण–वर्णन,
- समेकित जल प्रबंधन

प्राकृतिक संसाधन प्रबंध (एनआरएम) (कृषि अनुसंधान–।।) के अंतर्गत कार्यरत अनुसंधान संस्थान

संस्थानों के नाम
भाकृअप–केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान
भाकृअप–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान
भाकृअप–केंद्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान
भाकृअप–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान
भाकृअप–केंद्रीय मृदी लवणता अनुसंधान संस्थान
भाकृअप–खरपतवार विज्ञान अनुसंधान निदेशालय
भाकृअप–भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान
भाकृअप–पूर्वी क्षेत्र के लिए भाकृअप का अनुसंधान परिसर
भाकृअप–राष्ट्रीय समेकित कृषि अनुसंधान केंद्र
भाकृअप–राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो
भाकृअप–राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन
भाकृअप–केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान
भाकृअप–भारतीय जल प्रबंधन संस्थान
भाकृअप–उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए भाकृअपका अनुसंधान परिसर
भाकृअप–राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान

- समेकित पोषण प्रबंधन
- समस्यापरक मृदा प्रबंधन
- मृदा एवं जल प्रबंधन–सहभागिता आधारित जल–संभर प्रबंधन
- फसल विविधीकरण
- वर्षाधीन/बारानी कृषि को मुख्य कृषि पद्धतियों से जोड़ना
- जलवायु–अनुकूल (क्लाइमेट रेसिलिएंट) कृषि
- अजैविक तनाव (स्ट्रैस) प्रबंधन
- संसाधन संरक्षण, जोखिम प्रबंधन तथा कृषि लाभप्रदता के लिए कृषि–वानिकी
- समेकित खरपतवार प्रबंधन
- समेकित कृषि पद्धतियो के मॉडल्स का विकास
- शुष्क भूमि प्रबंधन
- संरक्षण कृषि तथा संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ
- पर्वतीय तथा तटीय कृषि

उपलब्धियां

- देश के मृदासंसाधन मानचित्र तैयार किए गए (1:1 मिलियन स्केल), राज्य (1:250,000 स्केल) और 55 जिले (1:50,000 स्केल); व देश में मृदा निम्नीकरण का मानचित्र तैयार किया गया (1:4.4 मिलियन स्केल) तथा राज्यों के मृदा क्षरण के मानचित्र तैयार किए गए (1:250,000 स्केल)।

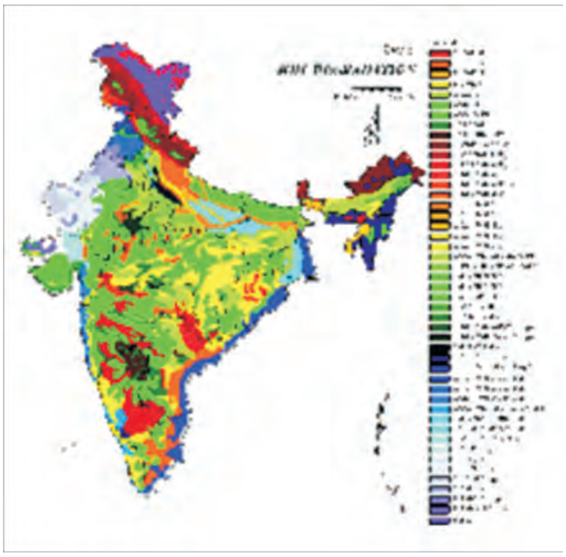

- देश के 20 कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों और 60 कृषि पारिस्थितिकी उपक्षेत्रों का चित्रण करके उनका मानचित्रण 1:4.4 मिलियन स्केल पर किया गया।

- स्थान–विशिष्ट मृदा तथा जल संरक्षण उपायों के साथ 75 मॉडल जल–संभर विकसित किए गए।
- वायु क्षरण तथा निर्जनीकरण को नियंत्रित करने के लिए बालू टिब्बों के स्थिरीकरण तथा आश्रय–मेखलाओं (शेल्टर बेल्ट्स) रोपण प्रौद्योगिकियों को विकसित किया गया।
- अम्लीय मृदाओं को सुधारने के लिए चूना मिलाने की किफायती प्रौद्योगिकी, लवण प्रभावित मृदाओं के लिए पुनरुद्धार प्रौद्योगिकी तथा जल–प्लावित लवणीय मृदाओं के लिए उप–सतही जल–निकासी प्रौद्योगिकी का विकास किया गया।
- चावल, गेहूं, सरसों, चना, सौंफ तथा धनिया के लिए आशावान लवण–सहिष्णु किस्में विकसित की गई। .
- तटीय क्षेत्रों के लिए लवणीय जल को ढकने वाले ताजा जल की फेन हटाने के लिए डोरोवु प्रौद्योगिकी को परिपूर्ण बनाया गया।

- उर्वरक के उपयोग हेतु मृदा परीक्षण आधारित सिफारिशें प्रदान करने के साथ कृषकों के द्वार पर मृदा परीक्षण की सेवा प्रदान करने के लिए डिजिटल पोर्टेबल मृदा परीक्षण–सह–छोटी प्रयोगशाला (मृदापरीक्षक) विकसित की गई जिसमें मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दर्शाए गए 12 मानदंडों को मापने की क्षमता है।
- मृदा क्षरण को कम करने के लिए, जल भंडारण क्षमता सृजित करने के लिए, भूमिगत जल के पुनर्भरण को बढ़ाने के लिए तथा गाद को तेजी से तथा सुरक्षित ढंग से हटाने के लिए रबड़ के बहु–उद्देश्यीय बांध विकसित किए गए। ये बांध संकटपूर्ण अवस्था में सिंचाई की सुविधा प्रदान करने हेतु परंपरागत रोक–बांधों की तुलना में 20 से 25% अधिक जल का भंडारण कर सकते हैं।

- एक संभाव्य मृदा–कंडीशनर तथा जैव विकास–बीआईओ विकसित किया गया जिसमें जड़ों तथा टहनियों की वृद्धि को सुगम बनाने के लिए, फसल उत्पादकता तथा गुणवत्ता में वृद्धि करने, लवण प्रभावित मृदाओं में जल और पोषक तत्वों की दक्षता बढ़ाने के लिए दो अनुकूल एवं आशाजनक जीवाणु–विभेदों (बेक्टीरियल स्ट्रेन्स) का प्रावधान है।

- पूर्व उद्भव शाकनाशी (प्री एमेर्जेंस हर्बीसाइड) के उपयोग के साथ बीज की बुआई और उर्वरक के सटीक उपयोग के लिए सटीक रोपक–सह–शाकनाशी साधित्र (प्रीसीशन प्लांटर–कम–हर्बीसाइड एप्लीकेटर) विकसित किया गया।
- लिग्नों–सेल्लुलोलिटिक थर्मोफिलिक जीवों की सह–व्यवस्था (कंसोर्शियम) का प्रयोग करके 45 दिनों के भीतर रसोईघर से निकलने वाले कचरे तथा सब्जियों के अवशिष्टों का अपघटन करने के लिए रेपो–कम्पोस्ट तकनीक विकसित की गई है।

- कृषि उत्पादकता को बढ़ाने तथा लघु और सीमांत कृषकों की आय को प्रति वर्ष रुपए 1.5 से 3.6 लाख तक बढ़ाने के लिए 45 समेकित कृषि पद्धति मॉडल विकसित किए गए।
- एनसीओएफ/पीकेवीवाई/एनएचएम के अंतर्गत संवर्द्धित 51 फसलों/फसल पद्धतियों के लिए पद्धतियों का जैविक खेती पैकेज विकसित किया गया।
- जलवायु परिवर्तन के प्रति सुभेद्यता को न्यूनतम करने के राष्ट्रीय नवोन्मेषी जलवायु अनुकूल कृषि (निक्रा) के तहत देश के सर्वाधिक सुभेद्य 151 जिलों में जलवायु तन्यक (क्लाइमेट रेसिलिएंट) प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।
- प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में कृषकों को उपयुक्त कृषि परामर्श जारी करने के लिए उक्त अवधि के दौरान 648 जिलों के लिए आकस्मिक फसल योजनाएं विकसित की गई।

अनुसंधान के भावी क्षेत्र

- कृषि भूमि के उपयोग की ब्लॉक स्तरीय योजना तैयार करना
- मृदा गुणवत्ता का सेन्सर आधारित आकलन
- अपशिष्ट जल का उपयोग
- जैविक अपशिष्ट प्रबंधन
- संरक्षण कृषि
- सूक्ष्मता–मापी/यथार्थमापी खेती (precision farming)
- जलवायु का प्रतिकार करने में सक्षम (क्लाइमेट स्मार्ट) कृषि
- फसल अवशेष प्रबंधन
- पोषक तत्वों और जल के उपयोग की दक्षता बढ़ाने के लिए नैनो प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग
- बहु–उद्यमी कृषि प्रणाली मॉडल्स

एक राष्ट हो, एक राष्ट्रध्वज, एक राष्ट्र की भाषा।

रहे राष्ट्र में सदा एकता, जन–जन की अभिलाषा।।

–अज्ञात

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से प्राप्त राजभाषा संबंधी गतिविधियां

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़ा

परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों आदि में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिन्दी सप्ताह, पखवाड़ा/चेतना माह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय कृषि मंत्री जी का प्रेरणाप्रद संदेश जारी किया गया तथा महानिदेशक महोदय ने भी एक अपील जारी करके सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया।

परिषद मुख्यालय में 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2018 तक 'हिन्दी पखवाड़े' के दौरान हिन्दी को बढ़ावा देने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। इसके तहत प्रश्न–मंच, हिन्दी निबंध, हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, काव्य पाठ, आशुभाषण, वाद–विवाद, हिन्दी टंकण, शब्द परिचय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शब्द परिचय प्रतियोगिता के तहत विजेताओं को उसी समय पुरस्कृत किया गया।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के हिन्दी अनुभाग द्वारा एन. ए. एस. सी. परिसर, नई दिल्ली में दिनांक 29.11.2018 को 'वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह' एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री प्रदीप टम्टा, सांसद, राज्यसभा एवं सदस्य संसदीय राजभाषा समिति का डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. ने स्वागत किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कृषि और कृषि शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी को स्थापित करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की भूमिका को रेखांकित किया तथा उपलब्धियों के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने कहा कि हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए राजभाषा समिति प्रतिबद्ध है।

श्री छबिलेन्द्र राऊल, विशेष सचिव, डेयर एवं सचिव, भा.कृ.अ.प. ने हिन्दी की प्रगति के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा हिंदी में काम–काज के चलन को बढ़ावा देने के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने कहा कि, हालाँकि कृषि क्षेत्र की अपनी तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली है, लेकिन परिषद द्वारा अपने काम–काज में जिस तरह से हिंदी को अपनाया गया है, वह काबिले–तारीफ है।

श्री बिम्बाधर प्रधान, अपर सचिव एवं वित्त सलाहकार, भा.कृ.अ.प., ने याद दिलाया कि 14 सितंबर, 1949 के दिन हिन्दी को राजभाषा की मान्यता मिली। उन्होंने हिंदी को तकनीकी दृष्टिकोण से सक्षम और समृद्ध बताते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अधिक से अधिक प्रशासनिक कार्य हिंदी में करने और उसे समृद्ध बनाने के लिए आग्रह किया।

श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक, राजभाषा, भा.कृ.अ.प. ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पिछले एक वर्ष में हिंदी के विकास व उसकी प्रगति के लिए किए गए कार्यों व उपलब्धियों को सिलसिलेवार ढंग से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि द्वारा विजेता प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए। दूसरे चरण में, हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

परिषद मुख्यालय में दिनांक 27 फरवरी, 2018 को परिषद के तकनीकी सेवा के समस्त कार्मिकों के लिए 'वैज्ञानिक लेखन में सूचना प्रौद्योगिकी "विषय पर वर्ष 2018 की प्रथम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में डॉ. अनुराग शर्मा (पत्रकार) को व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया गया था। उक्त कार्यशाला में तकनीकी वर्ग के कुल 24 तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

परिषद मुख्यालय द्वारा दिनांक 24–25 अप्रैल, 2018 को केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में "राजभाषा प्रबंधन की नई दिशाएं" विषय पर राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला का

उद्‌घाटन उप महानिदेशक (अभियांत्रिकी) द्वारा किया गया तथा निदेशक, क्रीड़ा ने कार्यशाला में अपना पूर्ण योगदान दिया। उक्त कार्यशाला में परिषद के अधीनस्थ संस्थानों में कार्यरत कुल 101 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में राजभाषा प्रबंधन, नीति एवं कार्यान्वयन, ई–ऑफिस, यूनिकोड, संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली, जीएफआर 2017 आदि विषय पर अलग–अलग सत्रों का आयोजन किया गया तथा विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण एवं व्याख्यान दिए गए। राष्ट्रीय कार्यशाला अपने उद्देश्यों में सफल हुई तथा हिन्दी अधिकारियों सहित राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों की अपेक्षाएं/आकांक्षाओं को वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन देकर पूरा किया गया।

परिषद मुख्यालय में दिनांक 24 अगस्त, 2018 को परिषद के अनुभाग अधिकारियों/वित्त एवं लेखा अधिकारियों/विधि अधिकारियों एवं समकक्ष अन्य अधिकारियों के लिए 'राजभाषा कार्यान्वयन का सकारात्मक पहलू' विषय पर वर्ष 2018 की तीसरी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में डॉ. प्रेम सिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार को मुख्य व्याख्याता के रूप में आमंत्रित किया गया। डॉ. प्रेम सिंह ने सभी प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन के विषय में महत्व पूर्ण जानकारी प्रदान की। उक्त कार्यशाला में कुल 41 अधिकारियों ने भाग लिया।

दिनांक 18 दिसम्बर, 2018 को परिषद के तकनीकी सेवा के समस्त कार्मिकों के लिए 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली

का मानकीकरण" विषय पर वर्ष 2018 की चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। उक्त कार्यशाला में कुल 24 तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला प्रारंभ करते हुए श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा) ने विषय विशेषज्ञ अतिथि वक्ता प्रो. अवनीश कुमार का स्वागत किया। इस कार्यशाला में फसल विज्ञान तथा बागवानी विज्ञान प्रभाग से विषय विशेषज्ञों के रूप में डॉ. एस.के. झा, प्रधान वैज्ञानिक तथा डॉ. विक्रमादित्य पाण्डे, प्रधान वैज्ञानिक को भी आमंत्रित किया गया था जिससे संबंधित विषयों के मानक शब्दों पर विशेष रूप से चर्चा की जा सके। निदेशक (राजभाषा) ने तकनीकी शब्दावली के महत्व को रेखांकित किया। तत्पश्चात अतिथि वक्ता निदेशक (राजभाषा) द्वारा "वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण" विषय पर विस्तार से चर्चा की गई।

राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना

परिषद द्वारा वर्ष 1998–99 से अपने अधीनस्थ संस्थानों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु "राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना" चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2016–17 के दौरान हिन्दी में अपना सर्वाधिक कार्य करने वाले बड़े संस्थानों, "क" और "ख" क्षेत्र के छोटे संस्थानों तथा "ग" क्षेत्र में स्थित संस्थानों/केन्द्रों को पुरस्कार प्रदान किए गए जिसमें प्रथम स्थान पाने वाले संस्थान को शील्ड और द्वितीय को ट्रॉफी प्रदान की गई। इस क्रम में दिनांक 16.7.2018 को भाकृअप के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में निम्नालिखित संस्थानों को पुरस्कार प्रदान किए गए:

I.	**बड़े संस्थानों का पुरस्कार**	**पुरस्कार**	
	1. भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	प्रथम	
	2. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	द्वितीय	
II.	**'क' और 'ख' क्षेत्र के छोटे संस्थानों/केन्द्रों का पुरस्कार**		
	1. केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर	प्रथम	
	2. राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	द्वितीय	संयुक्त रूप से
	3. केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर	द्वितीय	
III.	**'ग' क्षेत्र में स्थित अन्य संस्थानों/केन्द्रों का पुरस्कार**		
	1. केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन	प्रथम	
	2. केन्द्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, गोवा	द्वितीय	

गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार

परिषद के अधीनस्थ क, ख एवं ग क्षेत्र में स्थित संस्थानों द्वारा हिन्दी में प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं को स्तरीय तथा प्रतिस्पर्धात्मक बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2004–2005 से "गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार" योजना शुरू की गई। वर्ष 2016–17 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाओं के लिए प्राप्ति प्रविष्टियों का मूल्यांकन करने के पश्चात निम्नलिखित पत्रिकाओं को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया गया, जिसके अंतर्गत प्रथम स्थान पाने वाले संस्थान को शील्ड तथा द्वितीय और तृतीय को ट्रॉफी प्रदान की गई। यह पुरस्कार भी 16.7.2018 को भाकृअप के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में निम्नलिखित संस्थानों को प्रदान किए गए:

क्र.सं.	चयनित पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम ('क' एवं 'ख' क्षेत्र के संस्थानों के लिए)	पुरस्कार
1.	पूसा सुरभि	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	प्रथम
2.	स्वर्णिमा	भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल	द्वितीय
3.	लाक्षा	भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, रांची	तृतीय
		संस्थान का नाम ('ग' क्षेत्र के संस्थानों के लिए)	
1.	नीलांजलि	केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर	प्रथम
2.	मसालों की महक	भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थापन, कोझिकोड	द्वितीय
3.	बागवानी	भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरू	तृतीय

भा.कृ.अ.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिंदी चेतना मास

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सितंबर महीने को संस्थान में हिंदी चेतना मास के रूप में मनाया गया। आयोजन के दौरान पूरे माह संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने के प्रति नवीन चेतना व उत्साह का सृजन करने के लिए विविध प्रतियोगिताओं जैसे काव्य–पाठ, श्रुतलेख, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, आशुभाषण, हिंदी टंकण, अनुवाद प्रतियोगिता, प्रश्न–मंच एवं कुशल सहायी वर्ग के लिए सामान्य–ज्ञान का आयोजन किया गया। श्रुतलेख प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रतियोगियों की शुद्ध एवं मानक वर्तनी की परीक्षा ली गई। एक अन्य लोकप्रिय प्रतियोगिता प्रश्न–मंच में हिंदी सामान्य ज्ञान के अलावा विविधरंगी प्रश्न पूछे गए जिनमें भारतीय संस्कृति, सामान्य ज्ञान, अद्यतन संचेतना, खेलकूद, विज्ञापन एवं मनोरंजन से संबंधित प्रश्न शामिल थे। कुशल सहायी कर्मचारियों के लिए विशेष रूप से सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विषयों पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे गए। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान मुख्यालय स्थित निदेशक कार्यालय एवं विभिन्न संभागों/इकाइयों के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

हिंदी वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 19 दिसंबर, 2018 को आयोजित हिंदी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं और वर्षभर चलने वाली विभिन्न पुरस्कार योजनाओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व निदेशक भा.कृ.अ.सं., नई दिल्ली, प्रो. आर.बी. सिंह थे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान निदेशक डॉ.ए.के. सिंह ने की तथा संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) डॉ.ए.के. सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान के उप निदेशक (राजभाषा) श्री केशव देव ने वर्ष 2017–18 की संस्थान की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। समारोह के अंत में कवि सम्मेलन व नुक्कड़ नाटक का भी आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा राजभाषा के संदर्भ में की जा रही प्रगति की सराहना की। समारोह का समापन इस संकल्प के साथ किया गया कि संस्थान के दैनिक सरकारी कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे।

हिंदी वार्षिकोत्सव–2018 के अवसर पर संस्थान की गृह पत्रिका पूसा सुरभि का विमोचन

हिंदी कार्यशालाएं

संस्थान के विभिन्न वर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। वर्ष 2018 के दौरान संस्थान मुख्यालय में कुल तीन कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

- संस्थान के राजभाषा नोडल अधिकारियों के लिए दिनांक 24 मार्च, 2018 को यूनिकोड की जानकारी विषय पर

संस्थान के सेस्करा सभा भवन में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजभाषा विभाग के तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने गूगल इनपुट का प्रयोग कर हिंदी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया साथ ही वायस टाइपिंग की भी जानकारी दी जिसे प्रतिभागियों द्वारा खूब सराहा गया।

- दिनांक 28 सितंबर, 2018 को संस्थान के वैज्ञानिक व तकनीकी वर्ग के लिए एक पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता सह कार्यशाला आयोजित की गयी जिसमें उक्त वर्ग के 26 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 19 दिसंबर, 2018 को संस्थान में हिंदी वार्षिकोत्सव सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आमंत्रित मुख्य अतिथि पूर्व निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, डॉ. आर.बी. सिंह ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए किस प्रकार सरल हिंदी को विज्ञान के प्रयोग में लाया जाए, विषय पर अपने विचार साझा किए। उक्त कार्यशाला में संस्थान के 225 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

पुरस्कार व सम्मान

वर्ष 2017–18 में कर्मचारियों को हिंदी में अपना अधिकाधिक सरकारी कामकाज करने के लिए प्रेरित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएं/प्रोत्साहन योजनाएं चलाईं गई। रिपोर्टाधीन अवधि में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं/पुरस्कार योजनाओं का आयोजन किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज के लिए नकद पुरस्कार योजना (2017–18)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले संस्थान के 04 कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

अधिकारियों द्वारा हिंदी में डिक्टेशन देने के लिए पुरस्कार प्रोत्साहन योजना (2017–18)

यह पुरस्कार योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार चलाई गई जिसमें अधिकारियों द्वारा अधिक से अधिक हिंदी में डिक्टेशन देने हेतु अधिकारी द्वारा किए गए कुल कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए यह पुरस्कार दिया गया। रिपोर्टाधीन अवधि में डॉ. जे.पी.एस. डबास, अध्यक्ष कैटेट इकाई को यह पुरस्कार दिया गया।

हिंदी में पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्मिकों के लिए आयोजित की गई जिसका विषय जैविक बनाम रासायनिक खेती रखा गया। जिसमें वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्मिकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में विजयी प्रतियोगियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम क्रमशः रु.10,000 रु. 7000, रु. 5000 एवं रु. 3000 के कुल बारह पुरस्कार प्रदान किए गए।

राजभाषा पत्र व्यवहार प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता संभाग व अनुभाग स्तर पर आयोजित की गई जिसमें वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले दो संभाग क्षेत्रीय केंद्रों को तथा दो अनुभाग/इकाइयों को शील्ड से सम्मानित किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि में वर्षभर हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए संभाग स्तर पर खाद्य विज्ञान एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी संभाग को प्रथम तथा कृषि रसायन संभाग को द्वितीय तथा क्षेत्रीय केन्द्र स्तर पर संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र इंदौर को प्रथम तथा क्षेत्रीय केंद्र शिमला को द्वितीय पुरस्कार तथा इकाई/अनुभाग स्तर पर कैटेट इकाई को प्रथम तथा फोसू इकाई को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राजभाषा पत्र व्यवहार प्रतियोगिता के अंतर्गत पुरस्कार प्रदान करते संस्थान के निदेशक व मुख्य अतिथि

विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी में कृषि विज्ञान लेखन के लिए पुरस्कार

इस पुरस्कार योजना के तहत कैलेण्डंर वर्ष 2017–18 में

विभिन्न वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों के प्रकाशित लेखों के लिए प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः 7000/– रु., 5000/– रु. एवं 3000/– रु. प्रदान किए गए।

संस्थान की राजभाषा उपलब्धियां

- संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2017–18 का राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार का द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- इसी प्रकार संस्थान की गृह पत्रिका पूसा सुरभि को उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु दिया जाने वाला गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार का वर्ष 2017–18 का प्रथम पुरस्कार दिया गया।
- नराकास (उत्तरी दिल्ली) की तरफ से संस्थान को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2017–18 का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।
- संस्थान की गृह पत्रिका पूसा सुरभि को उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु नराकास (उत्तरी दिल्ली) की तरफ से भी पुरस्कृत किया गया।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

हिन्दी पखवाड़ा/हिन्दी चेतना मास

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के मुख्यालय तथा इसके कल्याणी व बेंगलुरू स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों में पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी चेतना मास मनाया गया। संस्थान के निदेशक डॉ. आर.आर.बी. सिंह की अध्यक्षता एवं डॉ. रणधीर सिंह, अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद व विभागाध्यक्ष, दयाल सिंह कॉलेज, करनाल के मुख्य आतिथ्य में दिनांक 14 सितंबर, 2018 को हिन्दी दिवस समारोह का भव्य आयोजन

एनडीआरआई में 10.10.2018 को संपन्न वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधन करते हुए निदेशक डा. आर.आर.बी. सिंह

किया गया। इस अवसर पर संस्थान प्रमुख ने माननीय कृषि मंत्री जी का हिन्दी दिवस पर जारी संदेश सबको पढ़ कर सुनाया। इस मास के दौरान संस्थान के द्वारा हिन्दी हस्ताक्षर अभियान, हिन्दी अनुभव लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी खुला प्रश्न–मंच प्रतियोगिता, हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता, हिन्दी ईमेल प्रोत्साहन प्रतियोगिता, उत्कृष्ट प्रभाग/अनुभाग (वैज्ञानिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, उत्कृष्ट अनुभाग (प्रशासनिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता सहित 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के द्वारा 10.10.2018 को वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक डा.आर.आर.बी. सिंह की अध्यक्षता एवं श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा), परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली के मुख्य आतिथ्य में संस्थान के डा. एन.एन. दस्तूर सभागार में वार्षिक राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। संयुक्त निदेशक प्रशासन व कुलसचिव श्री सुशांत साहा ने अपने संबोधन में राजभाषा नीति एवं नियमों के प्रावधानों से अवगत कराते हुए सभी को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए अभिप्रेरित किया। नियंत्रक श्री डी.डी. वर्मा ने अपने संबोधन में राजभाषा की महत्ता बताते हुए बल दिया कि राजभाषा हिन्दी के चेतना मास को राजभाषा उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के निदेशक डॉ. आर. आर.बी. सिंह ने संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में एवं भारत सरकार, राजभाषा विभाग के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास करने की अपील की। उन्होंने अपने संबोधन में सभी को बताया कि विज्ञान, कृषि विज्ञान, शिक्षण एवं प्रशिक्षण को जन–मानस तक पहुंचाने का साधन राजभाषा हिन्दी ही है। मुख्य अतिथि श्रीमती सीमा चोपड़ा ने राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन की दिशा में किए जा रहे अनुकरणीय कार्यों को मुक्तकंठ से सराहा और उन्होंने सभी पदाधिकारियों व कर्मचारियों से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने का भी अनुरोध किया। संस्थान प्रमुख डा. आर.आर.बी. सिंह एवं मुख्य अतिथि श्रीमती चोपड़ा के द्वारा वर्ष भर आयोजित विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं के 157 विजेताओं को प्रमाण–पत्र/पारितोषिक से सम्मानित किया गया। साथ ही उत्कृष्ट वैज्ञानिक प्रभाग पुरस्कार के

लिए डेरी विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष डा.के.एस. कादियान को, उत्कृष्ट वैज्ञानिक अनुभाग पुरस्कार के लिए चारा उत्पादन अनुभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा.आशुतोष एवं उत्कृष्ट प्रशासनिक अनुभाग पुरस्कार के लिए सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री रामपाल को राजभाषा चल वैजयन्ती एवं प्रमाण–पत्र से भी सम्मानित किया गया।

हिन्दी कार्यशालाएं

वर्ष 2018 के दौरान राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के द्वारा 7 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। पहली कार्यशाला 14 मार्च, 2018 को संस्थान व नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारियों के लिए हिन्दी निबंध लेखन का अभ्यास विषय पर आयोजित की गई। दूसरी कार्यशाला 14 मई, 2018 को संस्थान के पशु जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग के वैज्ञानिकों व कर्मचारियों के लिए ''युनिकोड को सक्रिय करना और हिन्दी में ईमेल कैसे लिखें'' विषय पर आयोजित की गई। तीसरी कार्यशाला 01 अगस्त, 2018 को संस्थान के मंत्रालयिक एवं प्रशासनिक स्टाफ के लिए ''हिन्दी में ईमेल कैसे लिखें/हिन्दी में कार्यालय टिप्पणी व पत्र कैसे तैयार करें'' विषय पर आयोजित की गई। चौथी हिन्दी कार्यशाला 24 अगस्त, को संस्थान के मंत्रालयिक स्टाफ के लिए हिन्दी टाइपिंग का अभ्यास विषय पर आयोजित की गई। पाँचवी पूर्ण कार्य दिवसीय कार्यशाला 15 अक्तूबर, को संस्थान के प्रशासनिक स्टाफ हेतु हिन्दी इस्क्रिप्ट मंगल टाइपिंग का अभ्यास विषय पर आयोजित की गई। छठी तीन कार्य दिवसीय हिन्दी कार्यशाला 29–31 अक्तूबर, 2018 को आयोजित की गई जिसमें केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली के सहायक निदेशक श्री राकेश वर्मा ने संस्थान के पत्राचार माध्यम से हिन्दी टाइपिंग की परीक्षा में शामिल होने वाले 26 कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग में आने वाली समस्याओं का निराकरण विषय पर प्रशिक्षण प्रदान किया एवं अभ्यास करवाया। सातवीं पूर्ण कार्य दिवसीय हिन्दी कार्यशाला 19 दिसंबर, 2018 को आयोजित की गई जिसमें संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी इण्डिक की बोर्ड पर हिन्दी टाइपिंग का डेस्क प्रशिक्षण विषय पर प्रशिक्षित किया गया। पूरे वर्ष में आयोजित 7 कार्यशालाओं में संबंधित वर्ग के 104 अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

एनडीआरआई में 29.10.2018 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान करते के.हि.प्रशि.सं. नई दिल्ली के अधिकारी श्री राकेश वर्मा

उपलब्धियां

- संस्थान के सभी 38 प्रभागों व अनुभागों को नियम 8(4) के अंतर्गत अपना समस्त प्रशासनिक कार्य शतप्रतिशत हिन्दी में निष्पादित करने के लिए विनिर्दिष्ट किया गया।
- संस्थान के शोधरत छात्र–छात्राओं के शोधपत्रों के सारांश को हिन्दी में अनुवाद कर प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था की गई है। इसी प्रकार संस्थान के मास्टर्स और पी.एचडी. छात्र–छात्राओं के लिए हिन्दी नॉन क्रेडिट कोर्स की कक्षाओं का पाठ्यक्रमानुसार नियमित रूप से संचालन किया गया।
- संस्थान प्रमुख की अध्यक्षता में गठित की गई संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चार तिमाही बैठकों का समय पर आयोजन किया गया। बैठकों के कार्यवृत्त समय पर सर्वसंबंधितों को जारी करते हुए बैठक में निर्णित बिन्दुओं पर अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित की गई।
- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी रिपोर्टें एवं बैठकों के कार्यवृत्त परिषद मुख्यालय को भी प्रेषित किए गए। तिमाही हिन्दी बैठकों के कार्यवृत्तों एवं तिमाही प्रगति रिपोर्टों पर परिषद मुख्यालय से प्राप्त हुई अभ्युक्तियों एवं मार्गदर्शन के अनुसार अक्षरशः अनुपालन की गई तथा इंगित की गई कमियों को दूर किया गया।
- संस्थान के डेरी कैलेण्डर को विगत वर्षों की भाँति कृषकों व पशुपालकों के हित को ध्यान में रखकर उनसे संबंधित उपयोगी जानकारी को संक्षिप्त रूप में केवल हिन्दी में तैयार कर प्रकाशित किया गया।
- संस्थान का कोई भी अधिकारी या कर्मचारी हिन्दी भाषा एवं आशुलिपिक के प्रशिक्षण के लिए शेष नहीं है। संस्थान के 26 कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग के पत्राचार प्रशिक्षण कोर्स में नामित किया गया। संस्थान के राजभाषा एकक के द्वारा समय–समय पर हिन्दी टाइपिंग के लिए यूनिकोड पर प्रशिक्षण भी दिया गया।
- सरकारी कामकाज में अधिकाधिक हिन्दी के प्रयोग के लिए संस्थान में चल रही वर्ष 2017–18 की नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत 10 पात्र कर्मचारियों को नकद पुरस्कार राशि व प्रमाण–पत्रों से सम्मानित किया गया।

- वर्ष 2017–18 की वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की मूल हिंदी लेखन प्रतियोगिता के अंतर्गत पात्र वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों आदि को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।
- संस्थान के विभिन्न प्रभागों द्वारा किसानों व जन सामान्य के लिए आयोजित किए जाने वाले सभी कार्यक्रमों में हिन्दी भाषा में प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सभी प्रचार–सामग्री, प्रशिक्षण सामग्री भी हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में प्रकाशित की गई।

सम्मान/पुरस्कार

- नराकास करनाल के द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान को नराकास वार्षिक पुरस्कार (2017–18) के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार के रूप में राजभाषा ट्राफी सम्मान एवं उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार प्रतियोगिता में राडेअनुसं की पत्रिका दुग्ध गंगा (2017–18) को द्वितीय पुरस्कार व ट्राफी का सम्मान प्राप्त हुआ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल द्वारा संस्थान को वार्षिक नराकास राजभाषा पुरस्कार 2017–18 पुरस्कार योजना के अंतर्गत प्रथम स्थान व राजभाषा शील्ड से सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक डा. आर.आर.बी. सिंह को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।
- नराकास करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक (राजभाषा) को वर्ष 2017–18 में अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार व कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कार्य करने पर दिनांक 12.06.2018 को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

वर्ष 2018 के दौरान प्रकाशित हिन्दी प्रकाशन

- संस्थान की वर्ष 2017–18 की वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका दुग्ध–गंगा
- वार्षिक डेरी कैलेण्डर–2018
- तिमाही हिन्दी न्यूज लैटर डेरी समाचार

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

हिंदी चेतना मास

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति नवीन चेतना और जागृति उत्पन्न करने तथा अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान मुख्यालय में प्रतिवर्ष की भांति रिपोर्टाधीन वर्ष में सितम्बर माह को हिंदी चेतना मास के रूप में मनाया गया। हिंदी चेतना मास के दौरान अनेक विविधरंगी प्रतियोगिताओं जैसे काव्य–पाठ, वाद–विवाद, टिप्पण व मसौदा लेखन, निबंध लेखन, कम्प्यूटर पर शब्द प्रसंस्करण, प्रश्न–मंच, अंताक्षरी का आयोजन किया गया। उक्त सभी प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी वर्गों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी चेतना मास के उद्‌घाटन अवसर पर परियोजना निदेशक डॉ. एन.के. सिंह दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 16 अक्तूबर, 2018 को आयोजित हिंदी पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता संस्थान के परियोजना निदेशक डॉ. एन.के. सिंह ने की तथा श्रीमती संगीता जैन सहायक ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

परियोजना निदेशक ने संस्थान द्वारा राजभाषा के संदर्भ में की जा रही प्रगति की सराहना की। समारोह का समापन

हिंदी वार्षिकोत्सव समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. एन.के. सिंह परियोजना निदेशक राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए संस्थान के हिंदी आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. पी.के. जैन

इस संकल्प के साथ किया गया कि संस्थान के दैनिक सरकारी कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग बढ़ाए जाने के सार्थक प्रयास किए जाएंगे।

हिंदी कार्यशालाएं

संस्थान के विभिन्न वर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यों में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित करने के लिए चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। 01 जनवरी, 2018 से 31 दिसम्बर, 2018 के दौरान संस्थान मुख्यालय में कुल चार कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

- संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 24 मार्च, 2018 को संस्थान में कम्प्यूटर में हिंदी वाईस टाइपिंग एवं यूनीकोड विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य व्याख्यानकर्ता के रूप में श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, एन.आई.सी.विंग., नई दिल्ली थे। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कम्प्यूटर में हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करना था ताकि कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में कर सकें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 18 अधिकारियों एवं 08 कर्मचारियों सहित कुल 26 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए दिनांक 26 जून, 2018 को संस्थान में कम्प्यूटर में यूनिकोड आधारित हिंदी टाइपिंग विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य के प्रति प्रेरित करना था ताकि कृषि वैज्ञानिक अपने किए गए शोध को हिंदी में लिख सकें। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 18 अधिकारियों एवं 06 कर्मचारियों सहित कुल 24 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 26 सितम्बर, 2018 को संस्थान में कम्प्यूटर में यूनिकोड आधारित हिंदी टाइपिंग विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुमारी सुनीता, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने प्रशिक्षक के रूप में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 19 अधिकारियों एवं 06 कर्मचारियों सहित कुल 25 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।
- संस्थान के सभी वैज्ञानिकगण/अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण के लिए दिनांक 29 दिसम्बर, 2018 को संस्थान में मोबाइल में हिंदी टाइपिंग विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुमारी सुनीता, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने प्रशिक्षक के रूप में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 22 अधिकारियों एवं 11 कर्मचारियों सहित कुल 33 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

भा.कृ.अ.प.—राष्ट्रीय प्राकृतिक रेशा एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14—29 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी वाद—विवाद प्रतियोगिता, हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता, हिन्दी में सर्वाधिक कार्य प्रतियोगिता एवं हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रशासनिक एवं तकनीकी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 29 सितम्बर, 2018 को सभी प्रतियोगिताओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे विजयी प्रतिभागियों को यथोचित पुरस्कार और अन्य दो प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 24.03.2018 को कम्प्यूटर पर हिन्दी एवं राजभाषा के रूप में हिन्दी की विकास यात्रा विषय पर एक दिवसीय

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल 24 प्रतिभागियों (04 अधिकारी और 20 कर्मचारी) ने भाग लिया।

दिनांक 23.06.2018 को भारत सरकार की द्विभाषी नीति एवं राजभाषा के बढ़ते कदम विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल 30 प्रतिभागियों (07 अधिकारी और 23 कर्मचारी) ने भाग लिया।

दिनांक 25.08.2018 को हिन्दी भाषा का सरलीकरण एवं कम्प्यूटर पर हिन्दी विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल 29 प्रतिभागियों (04 अधिकारी और 25 कर्मचारी) ने भाग लिया।

दिनांक 22.12.2018 को हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन एवं भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं अनुपालन विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल 18 प्रतिभागियों (02 अधिकारी और 16 कर्मचारी) ने भाग लिया।

संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रकाशन

संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''देवांजलि'' का अंक–3 प्रकाशित किया गया तथा वार्षिक रिपोर्ट एवं निरजैफ्ट समाचार भी हिन्दी में प्रकाशित किया गया।

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर

हिन्दी पखवाड़ा

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र, अजमेर में राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा 14 से 28 सितम्बर, 2018 के मध्य मनाया गया। पखवाड़े का शुभारम्भ 14 सितम्बर, 2018 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के साथ हुआ, जिसमें केन्द्र के निदेशक डॉ. गोपाल लाल नें बैठक व पखवाड़े के शुभारंभ की अध्यक्षता की। हिन्दी पखवाड़े में कार्यालय में हिन्दी के अधिकतम प्रयोग पर सभी लोगों को ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। राजभाषा हिंदी पखवाड़े के उद्घाटन कार्यक्रम में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु अनेक सुझावों पर चर्चा की गयी। 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2018 तक बच्चों की हिन्दी में अभिरुचि हेतु बाल प्रतियोगिता तथा संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिकों, अधिकरियों तथा कर्मचारियों के लिए शुद्ध लेखन, शब्द अनुवाद एवं गद्य अनुवाद, हिन्दी कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन (बच्चों के लिए), वाद–विवाद प्रतियोगिता, तत्काल/आशु भाषण, प्रदत्त विषय पर निबंध लेखन एवं प्रश्न मंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान में कार्यरत वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी, एवं अनुसंधान अध्येता वर्ग ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया। डॉ. गोपाल लाल, निदेशक, ने संस्थान के सभी लोगों को हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेषतौर पर प्रेरित किया तथा मानक वर्तनी के प्रयोग को वैज्ञानिक लेखों में बढ़ावा देने पर बल दिया। डॉ. पी.एन. दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, राजभाषा अधिकारी ने विभिन्न कार्यक्रमों के सफल आयोजन हेतु केन्द्र के निदेशक डॉ. गोपाल लाल के मार्गदर्शन को रेखांकित करते हुए निर्णायक मण्डल के सदस्यों का विशेष आभार व्यक्त किया। सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए और समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापन किया गया। दिनांक 30 सितम्बर, 2018 को हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार राशि का वितरण डॉ. गोपाल लाल, निदेशक, द्वारा किया गया।

निरीक्षण बैठक

दिनांक 24.11.2018 को श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक, (राजभाषा), मुख्यालय, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक निरीक्षण बैठक का आयोजन किया गया,

जिसमें डॉ. गोपाल लाल, निदेशक, डॉ. पी.एन. दुबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. रविन्द्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ.बी.के. मिश्र, प्रधान वैज्ञानिक, श्री एस. पी. महेरिया, सीटीओ, श्री भीम सिंह, स.प्र.अ., श्री राजकुमार कांवरिया, व.लि. एवं श्री प्रदीप कुल्हारी, सहायक ने भाग लिया। बैठक में राजभाषा हिन्दी के कार्यालयीन प्रयोग पर चर्चा की गई। धारा 3(3) के अंतर्गत भेजे जाने वाली तिमाही रिपोर्ट पर भी प्रकाश डाला गया। कार्यालय में कार्यसाधक ज्ञान तथा प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों के विषय में भी चर्चा की गई।

केन्द्र के हिन्दी प्रकाशन

- केन्द्र, द्वारा अर्ध–वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका–"मसाला सुरभि" के द्वितीय अंक का सफल प्रकाशन जुलाई 2018 में किया गया। इस पत्रिका के अगले अंक (दिसम्बर, 2018) को शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है। मसाला सुरभि पत्रिका का प्रकाशन डॉ. गोपाल लाल, निदेशक के मार्गदर्शन में डॉ. बृजेश कुमार मिश्र एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा किया जा रहा है।
- केन्द्र का वार्षिक प्रतिवेदन–2017–18

हिन्दी पखवाड़े से संबंधित छायाचित्र नीचे प्रस्तुत किये गये हैं।

भा.कृ.अ.प.– केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

हिन्दी सप्ताह

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में दिनांक 14.09.2018 से 22.09.2018 तक हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया जिसका शुभारम्भ दिनांक 14.09.2018 को दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री खेमराज चौधरी, आई.ए.एस. एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव पशु पालन, राजस्थान सरकार मुख्य रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर उन्होंने सभागार में उपस्थित सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आह्वान किया कि राजस्थान हिंदी भाषी क्षेत्र में आता है इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में करने का प्रयास करना चाहिए। आज विज्ञान की किताबें आसानी से हिंदी में उपलब्ध हैं। उन्होंने संस्थान में किए जा रहे हिंदी के कार्य एवं अनुसंधान की भरपूर प्रशंसा की। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर ने अपने संबोधन में सभी से आग्रह किया कि वो अपने दैनिक सरकारी कार्य मुख्य रूप से हिंदी में ही करें। उन्होंने आगे कहा कि भाषाएं देश की संस्कृति से जुड़ी होती हैं तथा भाषाओं का ज्ञान होना देश के लिए अच्छी बात है। हिंदी जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। इसलिए हमारा दायित्व हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए और अधिक बनता है। हिंदी सप्ताह के दौरान, अंताक्षरी प्रतियोगिता, प्रश्न मंच प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर यूनिकोड में हिंदी टंकण प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, हिंदी शोध पत्र एवं पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता, स्वरचित कविता प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई।

हिंदी सप्ताह के उद्घाटन सत्र के दौरान श्री अजय कुमार आर्या, उपखण्ड मजिस्ट्रेट मालपुरा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री का संदेश श्री सुरेश कुमार, कार्यालय अध्यक्ष ने पढ़कर सुनाया। इस अवसर पर डॉ. ए. साहू एवं डॉ राघवेन्द्र सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी सप्ताह का पुरस्कार वितरण दिनांक 22.09.2018 को संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर द्वारा किया गया।

इसी के साथ–साथ संस्थान के उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्रीय केन्द्र, गड़सा द्वारा भी दिनांक 14.09.2018 से 22.09.2018 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन मुख्य अतिथि महामण्डलेश्वर श्री राम शरण दास जी, व्याकरणाचार्य श्री राधाकृष्ण मन्दिर द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर

उन्होंने हिंदी में काम करने को बोझ एवं बाध्यता न समझते हुए अपनी राष्ट्र भाषा को बढावा देने के साथ–साथ हिंदी को गोस्वामी तुलसीदास, कबीरदास, सूरदास, मीराबाई, रसखान आदि महान कवियों एवं लेखकों के उस स्वर्णिम युग की वर्तमान में कामना की एवं राजभाषा हिंदी को शीर्ष स्तर पर पहुँचाने का आह्वान किया। हिन्दी सप्ताह के समापन अवसर पर डा. एस.एस. सामान्त, प्रभारी वैज्ञानिक, हिमाचल इकाई गोबिन्द बल्लभ पन्त राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान हिमाचल इकाई, मौहल–कुल्लू (हि.प्र.) ने मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिन्दी देश का गौरव है। उन्होंने इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र के अध्यक्ष एवं प्राचार्य वैज्ञानिक डा. ओमहरी चतुर्वेदी ने कहा कि हमारी पहचान हमारे देश एवं भाषा से की जाती है। उन्होंने कहा कि हमारा अधिकांश पत्र–व्यवहार हिन्दी में होना चाहिए। उन्होंने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे प्रश्नमंच, प्रशासनिक शब्दावली, श्रुतलेख, निबन्ध लेखन इत्यादि के बारे में भी जानकारी दी।

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान मरू क्षेत्रीय परिसर बीकानेर में दिनांक 14.09.2018 से 20.09.2018 तक हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. एन.वी.पाटिल निदेशक, रा.उ.अनु.के. बीकानेर ने बताया कि देश की उतरोत्तर प्रगति मौलिक भाषा के द्वारा ही संभव है। हिंदी जानने वालों को हिन्दी में ही कार्य करना चाहिए तथा अंग्रेजी के दिखावे से दूर रहना चाहिए। विशिष्ट अतिथि डॉ. बृज रतन जोशी, वरिष्ठ व्याख्याता डूंगर महाविद्यालय बीकानेर ने हिंदी, हिन्दुस्तान व हिन्दू सम्बन्धों पर चर्चा की।

उद्घाटन समारोह में प्रभागाध्यक्ष डॉ. एच.के. नरूला ने बताया कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी स्वतः ही हिंदी में काम करते है साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि हिंदी को बढ़ावा देने में मनोरंजन व विज्ञापन का बहुत योगदान है। उन्होंने हिंदी सप्ताह में आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में प्रतियोगिताओं में बताया एवं आग्रह कर अधिक से अधिक भाग लेने का आह्वान किया। हिंदी सप्ताह के दौरान हिंदी स्व–रचित कविता, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी श्रुतलेख, हिंदी में सामान्य ज्ञान, हिंदी टिप्पण लेखन, हिंदी टंकण, एक दिवसीय हिंदी में शोध–पत्र (पोस्टर) प्रदर्शन, हिंदी टिप्पण लेखन के कार्यक्रम आयोजित किए गए। दिनांक 20.09.2018 को हिंदी सप्ताह के समापन समारोह के मुख्य अतिथि निदेशक डॉ. पी.एल. सरोज केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर एवं विशिष्ठ अतिथि डॉ. एन.डी. यादव, प्रभागाध्यक्ष, काजरी बीकानेर, विशिष्ट अतिथि डॉ. आर.के. सावल प्रधान वैज्ञानिक रा.उ.अनु. बीकानेर, ने वर्तमान में तकनीकी का हिंदी भाषा में महत्व विषय पर व्याख्यान में बताया कि तकनीकी प्रचार व प्रसार के लिए वैज्ञानिकों को हिंदी भाषा का ज्ञान जरूरी है। इसी के द्वारा शोध का लाभ हर व्यक्ति तक पहुंच सकता है। सभी प्रगतिशील देश जापान, फ्रांस, जर्मनी, रूस अपने अनुसंधान को सिर्फ स्वयं की भाषा में प्रचारित करते हैं न कि अंग्रेजी में। प्रभागाध्यक्ष डॉ. एच.के. नरूला ने हिंदी सप्ताह के समापन पर आयोजित शोध पत्र प्रदर्शनी के बारे में बताया।

संस्थान की हिन्दी की प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों को परिषद से प्राप्त राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम 2018–19 जारी किया गया।

- वार्षिक कार्यक्रम के दिशा निर्देशानुसार संस्थान के सभी प्रभागों/अनुभागों एवं क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र गड़सा, मन्नावनूर एवं बीकानेर को राजभाषा संबंधी निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिपत्र जारी किए गए।
- संस्थान की हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट निर्धारित समय पर परिषद को भिजवाई गई।
- संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की निर्धारित तिमाही बैठकें आयोजित की गई।
- नराकास को समय पर छःमाही हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट भेजी गई।
- नराकास के द्वारा आयोजित हिन्दी बैठकों में निदेशक एवं हिन्दी अधिकारी द्वारा सहभागिता की गई।
- परिषद के निर्देशानुसार संस्थान में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।
- संस्थान के कर्मचारियों के लिए हिन्दी प्रोत्साहन योजना को परिषद द्वारा निर्धारित राशि के अनुसार कार्यान्वित किया गया।
- संस्थान में हिन्दी पुस्तिका/फोल्डर एवं वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी/द्विभाषी में प्रकाशित किए गए।
- संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों के द्वारा हिन्दी शोध पत्र विभिन्न हिन्दी जर्नलों में भेजे गए।

संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- भेड़ पालन अपनाए अधिक मुनाफा पाएं
- मृदा स्वास्थ्य सलाह पत्र
- किसान सलाह पत्र
- भेड़ पालक की सफलता की कहानी
- वार्षिक भेड़ पालन कार्यक्रम
- वैज्ञानिक पद्धति द्वारा भेड़ पालन से कई गुना बढ़ी किसानों की आय
- मालपुरा भेड़ (मेगा शीप सीड़ परियोजना) फोल्डर
- भेड़ पालक डायरी
- अविपुंज पत्रिका 2016–18

द्विभाषी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18
- मालपुरा भेड़ पालक जानकारी पुस्तिका
- राष्ट्रीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम वैज्ञानिक पद्धति से भेड़, बकरी व खरगोश पालन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

हिंदी सप्ताह का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में 'हिंदी सप्ताह (06–14 सितंबर, 2018) समारोह' का विधिवत उद्घाटन दिनांकः 06 सितम्बर, 2018 को डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया ।

डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 'हिंदी सप्ताह (दिनांकः 06–14 सितंबर, 2018) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी भाव–गीत, हिंदी प्रश्न–मंच, हिंदी शुद्ध लेखन, निबंध, चित्र आधारित कहानी, वाद–विवाद, शब्दानुवाद एवं हिंदी काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं) की जानकारी देते हुए उनसे हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने का आह्वान किया।

सर्वप्रथम विशेष आमंत्रित डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू ने राजभाषा हिंदी के महत्व एवं उसकी गरिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी में काम करना हमारे लिए राष्ट्रीय गौरव की बात है। तत्पश्चात डॉ. (श्रीमती) नंदिता साहू ने अपने एक सुमधुर हिंदी भाव–गीत से हिंदी भाव–गीत प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। डॉ. ब्लेज डिसुजा, विभागप्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में हिंदी को सरल एवं सुबोध भाषा बताते हुए कहा कि हिंदी देश के बड़े भू–भाग में बोली जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और इस स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम राष्ट्र हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग

कर इसका मान बढ़ाएं। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, ने संस्थान में राजभाषा (हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, ताकि सही अर्थों में संस्थान में राजभाषा (हिंदी) का बहुमुखी विकास हो सके।

हिंदी सप्ताह समापन समारोह के "मुख्य अतिथि" डॉ. प्रमोद रामेश्वर शर्मा, विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं उर्दू विभाग, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर थे।

अपने मुख्य सम्बोधन में मुख्य अतिथि ने हिंदी को एक बहुत ही सशक्त एवं बहुआयामी भाषा बताते हुए उसके साहित्यिक

पक्ष को सभा के सामने रखा और सभा को यह बताया कि आज हिंदी अपनी इन्हीं बहुआयामी विशेषताओं के कारण हर क्षेत्र में लोकप्रिय है और सही अर्थों में राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, ने कहा की हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक से अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है ।

तदोपरांत मुख्य अतिथि महोदय इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष निदेशक, के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2018 के अंतर्गत आयोजित हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों पुरस्कार वितरित किए गए।

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली के ए.पी. शिंदे सभागार में 16 जुलाई, 2018 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 90 वें स्थापना दिवस के सुअवसर पर भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर को 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत वर्ष 2016–2017 के दौरान सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान देने हेतु समारोह के मुख्य अतिथि श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं

किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के करकमलों द्वारा ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार'' (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। संस्थान की ओर से यह पुरस्कार डॉ विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने ग्रहण किया। संस्थान को यह पुरस्कार श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली, श्री छबिलेन्द्र राऊल, विशेष सचिव (डेयर) एवं सचिव भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली एवं श्री बिम्बाधर प्रधान, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, डेयर/भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली की गणमान्य उपस्थिति में प्रदान किया गया।

हिंदी कार्यशाला

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. जय प्रकाश, हिंदी अनुवादक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नागपुर की मुख्य उपस्थिति में तथा मंचासीन श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा) की उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक एवं

दिनांक 12.03.2018 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला का दृश्य

तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का 12.03.2018 को सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 35 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा में हिंदी कार्यशाला' का आयोजन

25 सितम्बर, 2018 को डॉ. डी. मोंगा, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा की अध्यक्षता में तथा अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा) एवं श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की उपस्थिति में केंद्र में प्रशासनिक, वैज्ञानिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला का संचालन केंद्र के प्रभारी अधिकारी (हिन्दी) डॉ. राम चरण मीणा, प्रधान वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा ने किया और इस हिन्दी कार्यशाला में प्रशासनिक,वैज्ञानिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 32 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि

हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी दिवस समारोह का शुभारंभ परिषद गीत से किया गया। सर्वप्रथम सभा का स्वागत करते हुए डॉ. जे. रेणुका, उप निदेशक (राजभाषा) ने रेखांकित किया कि केरल में विनाशकारी बाढ़ के कारण केवल हिन्दी दिवस मनाया जा रहा है। कार्यक्रम में समारोह के मुख्य अतिथि श्री ए.के. चौधरी, निदेशक, सिफ्नेट, कोच्चि और डॉ. रविशंकर सी.एन., निदेशक का हार्दिक स्वागत किया गया। डॉ. रविशंकर सी.एन., निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि भारत सरकार की भाषा नीति के सक्रिय अनुपालन में हमारे सार्थक प्रयास जारी रहेंगे।

डॉ. पी. शंकर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक महोदय द्वारा इस राष्ट्रीय सुअवसर पर जारी अपील के पठन के उपरांत मुख्य अतिथि श्री ए.के. चौधरी, निदेशक, सिफ्नेट, कोच्चि ने अपने संबोधन में सरकारी भाषा नीति के अनुपालन में सभी के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी का कार्य विशेषकर हिन्दी अनुभाग का नहीं बल्कि संपूर्ण कार्यालय का है।

राजभाषा कार्यशाला

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार इस संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिकों के लिए एक हिन्दी कार्यशाला दिनांक 16 मार्च 2018 को आयोजित की गई। डॉ. रेणुका, उपनिदेशक (राजभाषा) ने इस अवसर पर निदेशक महोदय, संकाय सदस्य के साथ सभी का स्वागत किया। निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में सभी युवा वैज्ञानिकों को सूचित किया कि आने वाले समय में अपने कामकाज में हिन्दी के प्रयोग पर स्कोर कार्ड में अंक दिए जा सकते हैं। अतः इस कार्यशाला को गंभीरता से लें और अधिक से अधिक अपना कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करें। श्री रमेश प्रभु, मुख्य राजभाषा अधीक्षक, एच.पी.सी.एल., कोचिन द्वारा 'कम्प्यूटर में यूनिकोड और मोबाइल के द्वारा हिन्दी' विषय पर कक्षा का संचालन किया गया।

कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला

2 जून, 2018 को संस्थान के कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्रीमती शीला एम.सी., सहायक निदेशक (राजभाषा), बी.एस.एन.एल., कोचिन, कार्यशाला में संकाय सदस्य थी।

राजभाषा डेस्क कार्यशाला

29 सितम्बर, 2018 को संस्थान के बिल अनुभाग के कर्मचारियों के लिए एक राजभाषा डेस्क कार्यशाला आयोजित की गई। राजभाषा अनुभाग के तीनों अधिकारियों ने बिल अनुभाग में राजभाषा की स्थिति का आकलन किया तथा सुधार के बिंदुओं पर सुचारू मार्गदर्शन किया। इसमें एक अधिकारी (आहरण एवं संवितरण अधिकारी) एवं 4 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में मंजूरी आदेश, कार्यालयीन फाइलों में टिप्पणियों पर चर्चा, मानक द्विभाषिक प्रपत्रों का प्रयोग, खाता बही की द्विभाषिकता आदि पर चर्चा हुई। राजभाषा डेस्क कार्यशाला में सभी ने आश्वासन दिया कि राजभाषा कार्यान्वयन के अनुपालन में अपना सुनिश्चित योगदान देंगे।

श्रीमती शीला एम.सी., सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा कार्यशाला का संयोजन

प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए राजभाषा कार्यशाला

संस्थान के प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए 8 अक्तूबर 2018 को विशेष रूप से "कार्यालयीन प्रशासनिक कार्य में राजभाषा का व्यावहारिक प्रयोग'' विषय पर कार्यशाला संपन्न हुई। इस कार्यशाला का संयोजन डॉ. जे.रेणुका, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

डॉ. सुशीला मैथ्यू, प्रभागाध्यक्षा, जैव रसायन एवं पोषण एवं प्रभारी निदेशक ने सहभागियों को राजभाषा में विशेष रूचि के साथ कार्य करने के प्रति प्रेरित किया। श्री पी.जी. डेविस,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने इस अवसर पर सभी को बधाई दी। इस कार्यशाला में 24 प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया।

राजभाषा कार्यशाला

डॉ. जे. रेणुका, उप निदेशक (राजभाषा) द्वारा के स.मा.अनु.सं, कोच्चि में दिनांक 20 जून 2018 को हिन्दी कार्यशाला में संकाय के रूप में सहाभागियों को संबोधित किया।

डॉ. जे. रेणुका, उप निदेशक (राजभाषा), भाकृअप–के.मा.प्रौ. सं., कोचिन का संस्थान में कक्षा का संचालन किया।

श्रीमती नम्रता शर्मा, उप सचिव, भाकृअप, नई दिल्ली का प्रस्तुतिकरण

भाकृअप–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान में हिन्दी शिक्षण योजना के तहत प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन

हिन्दीं भाषा के प्रशिक्षण के लिए संस्थान में शेष बचे कार्मिकों को दिसंबर 2018 तक हिन्दी में प्रशिक्षित कराने के उद्देश्य से संस्थान में हिन्दी शिक्षण योजना के तहत प्रबोध प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन दिनांक 12 जुलाई, 2018 से किया जा रहा है। संस्थान के कुल 13 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया

श्री पी.जे. डेविस, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी द्वारा प्रशिक्षण कक्षाओं का उद्घाटन

संगोष्ठी का उद्घाटन

प्रकाशन

- जलधि 2017
- अंग्रेजी– हिन्दी मात्स्यिकी शब्दावली
- कार्यालयीन द्विभाषिक टिप्पणियां
- अनुसंधान उपलब्धियां 2017 – 2018
- भाकृअप–के.मा.प्रौ.सं. समाचार पत्र के चार अंक लीफ्लेट

- सिफ्टेस्ट
- परिरक्षण और मूल्य जोड के लिए कम दाम वाले, ऊर्जा क्षम्य और पर्यावरणानुकूल मत्स्य डिस्केलिंग मशीन
- प्योरस्मार्ट
- आधुनिक और स्वच्छ मोबाइल मत्स्य विक्रय कियॉस्क
- आह – एमो भारतीय बांगड़े से एक प्रजातीय खाने के लिए तैयार मत्स्य उत्पाद (रेस्टूलीगट कनागुर्टा)

भा.कृ.अ.प–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद

हिन्दी सप्ताह

निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में 14–20 सितंबर, 2018 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी प्रारूप लेखन, वाद–विवाद व काव्यपाठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

हिन्दी सप्ताह की शुरूआत हिन्दी दिवस 14 सितंबर, 2018 को किया गया। हिन्दी अधिकारी डॉ. राम प्रसन्न मीना ने हिन्दी भाषा का महत्व बताते हुए निदेशालय में हिन्दी सप्ताह का आयोजन करने तथा इस दौरान की जाने वाली प्रतियोगिता के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। इस अवसर पर निदेशालय के कार्यकारी निदेशक डॉ. पी. मणीवेल ने हिन्दी दिवस समारोह की अध्यक्षता की। समारोह के दौरान हिन्दी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अंत में निदेशक महोदय ने सभी विजेताओं को पुरस्कार दिया। हिन्दी समापान समारोह 20 सितंबर, 2018 को आयोजित किया गया। स्वागतीय भाषण के पश्चात् व्याख्यान व काव्यपाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनका संचालन व मूल्यांकन मुख्य अतिथि महोदय ने किया।

हिन्दी कार्यशाला

वर्ष के दौरान निदेशालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा तीन कार्यशाला आयोजित की गईं। दिनांक 30 जून, 2018 को "राष्ट्रीय उत्थान एवं शिक्षा के क्षेत्र में राजभाषा का योगदान विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरूआत में डॉ. राम प्रसन्न मीना, हिन्दी अधिकारी ने कार्यशाला के बारे में जानकारी प्रदान की। तत्पश्चात मुख्य वक्ता श्री रामलाल मेनारिया ने अमीर खुसरो, भारतेन्दू हरिशचन्द्र का हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार में योगदान तथा अन्य लोगों का उदाहरण देते हुए हिन्दी के विकास के बारे में विस्तार से बताया और उन्होंने यह भी कहा की देश की आजादी में हिन्दी भाषा ने लोगों को एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है और राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने देश के विभिन्न संस्थानों का लगातार अवलोकन कर हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने के लिए काफी योगदान दिया है। निदेशक डॉ. पी. मणिवेल के भाषण के पश्चात सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए।

दिनांक 20 सितंबर, 2018 को "राष्ट्र की समरसता व सामंजस्य में राजभाषा हिन्दी का महत्व" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. सत्यजित रॉय, प्रधान वैज्ञानिक ने हिन्दी में चल रहे कार्यों की सराहना की। मुख्य वक्ता सुश्री सरिता सिंह, हिन्दी अध्यापक, एसएनवी इंटरनेश्नेल स्कूल, आईसीएससी बोर्ड, भुमेल, नडियाद ने हिन्दी के विस्तार पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए बताया की हिन्दी देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो सभी वर्ग, धर्म व क्षेत्र के लोग के बीच समरसता व सामंजस्य बनाती है।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में "औषधीय एवं सगंधीय पादप के प्रचार–प्रसार में महत्व" विषय पर मुख्य वक्ता डॉ. राम प्रसन्न मीना, वैज्ञानिक ने कहा की हिन्दी भाषा सरल होने के साथ–साथ ग्रामीण परिवेश में समझी जाने वाली भाषा है, जो कि औषधीय व सगंधीय फसलों के प्रचार–प्रसार का प्रमुख माध्यम है। इनसे संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम भी हिन्दी भाषा में ही करवाए जाते रहे हैं।

दिनांक 24 दिसंबर, 2018 को "निदेशालय के दैनिक कार्यों में हिन्दी का प्रसार" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रथम वक्ता डॉ. सत्यांशु कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकुअनुप–औसपाअनुनि, बोरीआवी ने राजभाषा हिन्दी के महत्व को विस्तार देते हुए निदेशालय के दैनिक कार्यों में हिन्दी के प्रसार के लिए विस्तृत जानकारी प्रदान की। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. सत्यजित रॉय, निदेशक, भाकुअप–औसपाअनुनि, बोरीआवी ने विषय से संबंधित हिन्दी की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया की हिन्दी भाषा सरल होने के कारण आसानी से सीखी जा सकती है और निदेशालय में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी में कार्य करने वालों को पुरस्कृत करने का सुझाव दिया।

पुरस्कार

हिन्दी कार्य 20 हजार शब्द के लिए निदेशालय द्वारा श्री रघुबीर प्रजापति को प्रथम पुरस्कार दिया गया और हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर, 2018 की अवधि में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन मुख्य अतिथि–प्रो. अनिल शुक्ल जी, माननीय कुलपति, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली द्वारा किया गया। संस्थान के निदेशक, डा. आर. के. सिंह के दिशा–निर्देश में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

सर्वप्रथम दिनांक 14.9.2018 को उद्घाटन के बाद हिन्दी प्रश्न मंच का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता की। दिनांक 15.9.2018 को सभी वर्गों के कार्मिकों के लिए हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता कार्रवाई गई। दिनांक 17.9.2018 को हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी कार्मिकों के लिए अलग–अलग आयोजित की गई। इसी प्रकार दिनांक 18.9.2018 को हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता आयोजित कार्रवाई गई। दिनांक 19.9.2018 को प्रशासनिक वर्ग/तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के मध्य कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता हुई। वैज्ञानिकों/छात्रों तथा अन्य कर्मचारियों के मध्य हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20.9.2018 को किया गया। मंचीय प्रतियोगिताओं के क्रम में दिनांक 22.9.2018 को महिला हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता हुई। हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी वर्ग के कर्मचारियों के लिए शुद्ध हिन्दी भाषण प्रतियोगिता दिनांक 24.9.2018 सम्पन्न की गयी। हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता दिनांक 25.09.2018 को सम्पन्न हुई। इसके अतिरिक्त दिनांक 26.09.2018 को स्टाफ के बच्चों के लिए बाल काव्य पाठ/अंताक्षरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन का आयोजन दिनांक 28.09.18 को हुआ जिसमें स्थानीय कवियों द्वारा काव्य पाठ किया गया। दिनांक 29.09.2018 को समापन समारोह के अवसर पर हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता के आयोजन सहित समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपरोक्त सभी कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को निदेशक महोदय एवं मुख्य अतिथि श्री रणवीर प्रसाद जी, आयुक्त, बरेली मंडल द्वारा पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

हिंदी चेतना मास

संस्थान में 14 सितंबर, 2018 को हिंदी चेतना मास समारोह का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ परिषद–गान से हुआ। इस अवसर पर डॉ. विलास ए टोणपि, निदेशक ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। इसके अलावा उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संस्थान में चेतना मास (14 सितंबर–13 अक्तूबर, 2018) के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान को सफल बनाने की अपील की। इस अवसर पर डॉ. मृदुला सिन्हा, माननीय राज्यपाल, गोवा सरकार द्वारा रचित 'हिंदी, भारत मां की बिंदी' नामक कविता का भी प्रस्तुतीकरण किया गया। डॉ. महेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) ने हिंदी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज भारत ही नहीं संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी हिंदी के महत्व को समझते हुए अपने समाचार एवं उद्घोषणाएं हिंदी में भी करना प्रारंभ कर दिया है। अतः हमें इस समारोह के प्रयोजन, राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति को सफल बनाना है।

संस्थान में 14 सितंबर से 13 अक्तूबर, 2018 के दौरान आयोजित हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान हिंदी में 11 विभिन्न प्रतियोगिताओं (वर्णमाला, बारहखड़ी व संधि विच्छेद, हिंदी पाठ वाचन, स्मरण शक्ति परीक्षण, हिंदी कवि सम्मेलन, श्रुत–लेखन (शुद्ध लेखन), टिप्पण एवं आलेखन/निबंध–लेखन, मूक शब्द पहेली, अंग्रेजी के छोटे शब्दों एवं पदों तथा सामान्य अंग्रेजी पाठ का हिंदी में अनुवाद, हिंदी में पोस्टर प्रस्तुतीकरण, अंताक्षरी, प्रश्न–मंच) एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक

तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने भाग लिया। इसके अलावा उक्त चेतना मास के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

संस्थान में 13 अक्तूबर 2018 को हिंदी चेतना मास के समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का प्रारंभ परिषद गान से हुआ। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक, डॉ. विलास ए टोणपि ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ. घनश्याम, प्रधानाचार्य, नलगोंडा महिला डिग्री कॉलेज, नलगोंडा का पुष्पगुच्छ तथा शॉल से सम्मान किया। डॉ. जिनू जेकब, वैज्ञानिक एवं प्रभारी अधिकारी, हिंदी कक्ष ने संस्थान में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों पर वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात डॉ. महेश कुमार ने हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा समारोह को सफल बनाने के लिए संस्थान में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. घनश्याम ने संस्थान में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए तथा डॉ. टोणपि ने प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को कलम एवं प्रमाण–पत्र तथा मुख्य अतिथि व प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। डॉ. घनश्याम ने अपने संबोधन में कहा कि मैंने अधिकांश संस्थानों में हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह तथा हिंदी पखवाड़ा समारोह होते देखे हैं, परंतु यहां पर हिंदी चेतना मास का आयोजन होते देख मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। उन्होंने 'चेतना' शब्द की व्याख्या करते हुए भाषा, विशेषकर हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन ही नहीं है, वह मनुष्य की एक विशिष्ट पहचान भी है। हम अपनी भाषा से जितना दूर होते जाएंगे, हमारे संस्कार व संस्कृति हमसे उतनी ही दूर होती जाएगी। इसके अलावा उन्होंने बताया कि कुछ विदेशी लोगों का मानना है कि भारत में विज्ञान पर्याप्त उन्नत अवस्था में नहीं है। इस पर उन्होंने बताया कि भारत में प्राचीन काल से ही विज्ञान उन्नत अवस्था में रहा है परंतु हमारे विद्वानों ने उनका कभी पैटेंट नहीं करवाया। उनका मानना था कि हमारा ज्ञान सार्वभौमिक है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि आज हमारे प्रधानमंत्री भी अपनी भाषा की प्रवाहमयता एवं शब्दों के चयन के कारण पूरे विश्व में छाप छोड़ रहे हैं। अतः हमें अपनी संस्कृति से जुड़े रहने हेतु अपनी भाषाओं का ज्ञान एवं विज्ञान में उनका उपयोग आवश्यक है।

डॉ. टोणपि ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हम राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु चेतना जागृत करने के

कार्य में पूरी तरह से जुड़े हुए हैं । हमारा विश्वास है कि अगले वर्ष तक हमारे संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन में अवश्य ही समुचित प्रगति देखने को मिलेगी एवं इसमें हमें सफलता भी प्राप्त होगी।

हिंदी कार्यशालाएं

संस्थान में 22 जून, 2018 तथा 22 सितंबर, 2018 के दौरान दो हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशालाओं में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय प्रशिक्षण उप संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार तथा डॉ. महेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) विषय–विशेषज्ञ व अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे ।

श्री तिवारी ने हिंदी में आलेखन/मसौदा लेखन विषय पर अतिथि व्याख्यान देते हुए कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले पत्रों के विभिन्न प्रकारों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा उक्त पत्रों को हिंदी में तैयार करने में आने वाली समस्याओं का निराकरण करते हुए उन पत्रों को आसानी के साथ हिंदी में तैयार करने हेतु उनमें प्रयुक्त की जाने वाली हिंदी अभिव्यक्तियों पर प्रकाश डाला। डॉ. महेश कुमार ने राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सूचना प्रौद्योगिकी औजारों के उपयोग पर व्याख्यान दिया तथा अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने बताया कि आधुनिक औजारों का उपयोग करके आसानी से राजभाषा कार्यान्वयन को उसके लक्ष्यों तक पहुंचाया जा सकता है।

हिंदी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 प्रकाशनाधीन
- जुलाई, 2018 तक आई.आई.एम.आर. हैपनिंग्स (मासिक) के हिंदी में सारानुवाद का तथा अगस्त, 2018 से उक्त समाचार पत्र का पूर्ण रूप से हिंदी में प्रकाशन।
- मूल्य–वर्धित पौष्टिक धान्य, स्वाद के साथ स्वास्थ्य नामक पुस्तक।

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय अर्न्तस्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता

सप्ताह समारोह

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं प्रोत्साहन की कड़ी के रूप में हिंदी सप्ताह समारोह दिनांक 14 सितम्बर, 2018 से 20 सितम्बर, 2018 तक मनाया गया। हिंदी सप्ताह कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को माननीय निदेशक महोदय के कर कमलों से हुआ। इस कार्यक्रम की शुरूआत परिषद् के स्वागत गीत से की गई।

इस मौके पर निदेशक महोदय डॉ. बी.के. दास ने सभी कर्मचारियों को हिन्दी सप्ताह की बधाई दी। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से कार्यालय कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया। उन्होंने संस्थान के कर्मचारी–परिवार से अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह से निभाने एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी उत्तरदायित्व पर सतर्क बनने को कहा तथा उन्होंने हिंदी कक्ष को निर्देश दिया कि प्रत्येक महीने संस्थान के अनुभागों को पत्र लिखकर राजभाषा हिंदी कार्य की प्रगति का जायजा लिया जाए। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने ही कक्ष के कर्मचारियों को निर्देश दिया कि निदेशक कक्ष से अधिकतम पत्र–व्यवहार हिंदी में करें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. एन. सिंह, निदेशक, विवेकानन्द मिशन, पांसकुड़ा को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने व्याख्यान का प्रारंभ संस्थान के निदेशक डा. बी. के. दास को हिन्दी सप्ताह पर बधाई देते हुए हर्ष प्रकट किया कि वे संस्थान में हो रहे हिन्दी के कार्यों से बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने अपने सम्बोधन कहा कि कार्यालय के कामकाज में सरल हिन्दी का प्रयोग करें। लच्छेदार, साहित्यिक भाषा की कार्यालय में कोई उपयोगिता नहीं है। ऐसी भाषा का प्रयोग करें, जिसे सभी आसानी से समझ सके। उन्होंने कहा कि सामान्य रूप से प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने के साथ ही अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का बेहिचक प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि जहां कठिन शब्द हो वहां मूल अंग्रेजी शब्द को देवनागरी लिपि में लिख दें। उन्होंने यह भी कहा कि इंटरनेट पर उपलब्ध सभी सर्च इंजन और आज की युवा पीढ़ी के ऐप्स जैसे फेसबुक, ब्लॉग और ट्विटर आदि भी हिंदी में उपलब्ध हैं। संस्थान के डॉ. वी. आर. सुरेश, प्रभागाध्यक्ष एवं श्री राजीव लाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, ने राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए अपने–अपने मार्ग दर्शाये। डा. श्रीकान्त सामन्ता, प्रधान वैज्ञानिक एवं सर्वकार्यभारी, हिंदी कक्ष ने संस्थान में हो रहे हिंदी कार्य का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा जारी राजभाषा हिंदी से संबंधित अपील भी अधिकारियों व कर्मचारियों के बीच पढ़कर सुनाई गयी।

हिंदी सप्ताह का समापन समारोह दिनांक 20 सितम्बर, 2018 को अपराह्न 2.30 बजे प्रभारी निदेशक एवं प्रभागाध्यक्ष डा. बी. पी. मोहन्ति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री राजीव लाल ने स्वागत भाषण दिया और हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने अपने व्याख्यान में राष्ट्रभाषा और राजभाषा का अंतर बताते हुए कहा कि विभिन्न जाति, धर्म और संप्रदाय के लोग पारस्परिक संवाद करते हैं तो उसे राष्ट्रभाषा और केन्द्र तथा राज्य सरकार शासकीय पत्र–व्यवहार, राजकाज, सार्वजनिक कार्यों के लिए जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उसे राजभाषा कहते हैं। यह पूरे देश को जोड़ने वाली संपर्क भाषा है। उन्होंने

कार्यालय का अधिकाधिक काम हिन्दी में करने का आह्वान किया। डा. यू.के. सरकार, प्रभागाध्यक्ष ने भी अधिकारियों व कर्मचारियों को कार्यालय में राजभाषा हिंदी के महत्व के बारे में दर्शया। हिंदी सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता, हिंदी शब्द्वली प्रतियोगिता, प्राज्ञ पास अधिकारियों के लिए प्रश्नोतरी, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता एवं कविता पाठ का आयोजन किया गया। कार्यालयीन काम मूलरूप से हिंदी में करने पर प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कर्मचारियों को नकद पुरस्कार भी वितरित किए गए। इस अवसर पर सम्पन्न हुई प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। डॉ. बी.पी. मोहन्ति ने विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि सप्ताह के दौरान हिंदी में काम करने की जो ऊर्जा मिली है, इसे साल भर बनाए रखें। अपने साथियों को भी हिंदी में काम करने और सप्ताह के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। इस अवसर पर प्रभारी निदेशक, डा. बी. पी. मोहन्ति ने हिंदी में वैज्ञानिक पत्रिका निकालने के लिए भी निर्देश दिए।

कार्यशाला

संस्थान मुख्यालय में समस्त वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 15 सितम्बर, 2018 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी में पावर पाइंट बनाने एवं कम्प्यूटर पर यूनिकोड में काम करने की सुविधा आदि विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण श्री एस. के. साहू, वैज्ञानिक, श्री प्रवीण मौर्य, वैज्ञानिक एवं श्रीमती सुचेता मजूमदार, मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा दिया गया। इसके अतिरिक्त टिप्पण तथा मसौदा लेखन आदि विषय पर भी व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

प्रकाशन

- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 पूर्ण रूप से हिंदी में प्रकाशित किया गया।
- संस्थान द्वारा प्रत्येक माह हिंदी में मासिक समाचार प्रकाशित किया जाता है।
- सिफरी न्यूजलेटर
- नीलांजलि अंक–9, वर्ष 2018 (प्रकाशनार्थ)
- मात्स्यिकी विकास पर हिंदी राज्यों के मत्स्य कृषकों को दिए गए प्रशिक्षण सामग्री को हिंदी में तैयार किया गया।
- किसान संगोष्ठी में समस्त पोस्टर/बैनर हिंदी में प्रदर्शित किए जाते है।

पुरस्कार

संस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका नीलांजलि को वर्ष 2016 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रथम पुरस्कार 'गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी कृषि पत्रिका पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया। उक्त पत्रिका को दूसरी बार प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय पशुपोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बंगलौर

हिन्दी पखवाड़ा

14 सितंबर 2018 को "हिन्दी गान प्रतियोगिता" के साथ "हिन्दी पखवाड़े" का शुभारंभ हुआ। इस आयोजन को सफल एवं रोचक बनाने के लिए संस्थान में हिन्दी दिवस उद्घाटन, हिन्दी मौखिक प्रश्नोत्तरी, हिन्दी अनुभाग, हिन्दी लिखित प्रश्नोत्तरी, हिन्दी नारा लेखन, हिन्दी पत्र लेखन, हिन्दी अंताक्षरी, हिन्दी पेपर प्रस्तुति, हिन्दी कविता वाचन एवं हिन्दी पिक एंड चूज प्रतियोगिताओं के साथ एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 28.09.2018 को सम्पन्न हुए हिन्दी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, कोरमंगला, बेंगलूर के सहायक निदेशक, श्री आई.सी. मिश्रा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत परिषद गीत से हुई। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आशिष मिश्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा प्रभारी राजभाषा डॉ. अंजुमणि मेच ने समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि तथा अन्य सभी को औपचारिक रूप से स्वागत किया और हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के बारे में बताया। संस्थान के निदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्टा ने सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा

देने एवं संस्थान में दिन–प्रतिदिन के कार्य में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग के लिए जोर दिया तथा इसके प्रोत्साहन के लिए प्रतिवर्ष हिन्दी पखवाड़े में अधिक से अधिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करने का सुझाव दिया। इसके उपरांत मुख्य अतिथि और निदेशक द्वारा संस्थान के हिंदी न्यूज लेटर का विमोचन किया गया। तदोपरांत प्रतियोगिता के विजेताओं को मुख्य अतिथि के कर कमलों द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। मुख्य अतिथि श्री आई. सी.मिश्रा ने अपने भाषण में व्यक्तिगत जीवन के साथ–साथ कार्यालय के काम में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए सबकी भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने हिंदी कार्यान्वयन में अच्छे काम के लिए संस्थान के निदेशक और कर्मचारियों की सराहना की।

हिन्दी कार्यशाला

वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार इस संस्थान में प्रति तिमाही में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

- दिनांक 28.03.2018 को विजया बैंक, बेंगलूरु के राजभाषा प्रबंधक श्री अंबरीश वर्मा, ने कार्यालयीन कामकाज में कंप्यूटर का प्रयोग विषय पर प्रस्तुति दिया। इस कार्यशाला में कुल 14 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 27.06.2018 को इसरो उपग्रह केंद्र, बेंगलूरु के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्रीमती सीना राजेन्द्रन को कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन और हिन्दी में काम करने के लिए कंप्यूटर के उपयोग विषय पर प्रस्तुति दी। इस कार्यशाला में कुल 20 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 25.09.2018 को टिप्पण और मसौदा विषय पर भारतीय स्टेट बैंक, बेंगलूरू की वरिष्ठ प्रबन्धक श्रीमती इन्दु त्रिपाठी द्वारा कार्यशाला का संचालन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 17 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 14.12.2018 को डेयर, सीवी रमन नगर, बेंगलूरू के राजभाषा प्रभारी श्री जी.आर. चौधरी, को आमंत्रित किया गया था। कार्यशाला का विषय ''राजभाषा कार्यान्वयन सरल एवं ई–कार्यान्वयन'' था। इस कार्यशाला में कुल 29 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी प्रकाशन

- संस्थान के जनवरी – जून, वर्ष 2018 के हिन्दी न्यूज लेटर।
- वर्ष 2017–2018 के संस्थान की हिन्दी वार्षिक रिपोर्ट।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय मांस अनुसंधान केंद्र, हैदराबाद

हिन्दी चेतना सप्ताह

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी केंद्र में "हिन्दी चेतना सप्ताह" का आयोजन 14 सितंबर से 20 सितंबर 2018 तक की अवधि के दौरान किया गया। हिन्दी चेतना सप्ताह का शुभारंभ हिन्दी कार्यशाला द्वारा किया गया जिसमें श्रीमति अनीता पांडे, सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद मुख्य अतिथि रहीं और हिन्दी चेतना सप्ताह में विभिन्न कार्यक्रमों जैसे हिन्दी विचार गोष्ठीन एवं हिन्दी कार्यशाला, श्रुतलेख, हिन्दी में हस्ताक्षर, गायन एवं कविता पाठ जिसमें भारत रत्न एवं पदम विभूषण प्राय स्वसर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी भूत पूर्व प्रधान मंत्री की कविताओं का पाठ किया गया, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (शीर्षक–स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत), चित्रकारी प्रतियोगिता (बच्चों हेतु), हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया जिसका वर्णन इस प्रकार है।

प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, आर.ए.एस., आर.एफ.जे.आर.एफ. विद्यार्थीगण एवं संविदा कर्मचारियों ने भाग लिया और प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किए। हिन्दी चेतना सप्ताह का समापन 20 सितंबर 2018 को किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. आर एस सर्राजु, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी दिवस 14 सितंबर 2018 के पावन अवसर पर केंद्र में एक हिन्दी की कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा हिन्दी का कार्यालयी अनुप्रयोग के महत्व को समझाया गया। मुख्य अतिथि श्रीमति अनीता पांडे, सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान,

राजेन्द्रनगर, हैदराबाद द्वारा राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक कार्यालय कार्यों में प्रयोग हेतु जानकारी दी गई। केंद्र के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी के सरल अनुप्रयोगों के माध्यम से कार्य करने पर प्रकाश डाला गया और हिन्दी राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग के लिए अभिप्रेरित किया। संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक टिप्पणी/प्रारूप लेखन हिन्दी शिक्षण योजना के तहत सभी को प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत की शिक्षा लेने, सभी को हिन्दी में हस्ताक्षर करना, सभी बैठकों और ट्रेनिंग में हिन्दी में बातचीत करना, संस्थान के सभी परिपत्र एवं आदेश पत्रों का हिन्दी में रूपान्तरण करने की दिशा में प्रयास करने हेतु बल दिया गया।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, केरल

हिन्दी सप्ताह

संस्थान में दिनांक 14–22 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। उद्घाटन समारोह में संस्थान के निदेशक डा. के. निर्मल बाबू एवं अन्य सभी सदस्यों द्वारा हिन्दी में अधिकाधिक काम करने की शपथ ली गई।

हिन्दी सप्ताह के अवसर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी रिपोर्टर, हिन्दी शब्द भण्डार प्रश्नोत्तरी, अनुशीर्षक लेखन, हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, हिन्दी आशु भाषण एवं हिन्दी गीत आयोजित किए। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के स्टाफ सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। दिनांक 22 सितम्बर, 2018 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह आयोजित किया गया। समापन समारोह में श्री जितेन्द्र गुप्त, महाडाकपाल, कोशिक्कोड मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया। समापन समारोह में जामूरिन्स गुरूवायूरप्पन कालेज के स्नातक छात्रों द्वारा हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार श्री प्रेमचन्द की कहानी बूढ़ी काकी का दृश्याविष्कार प्रस्तुत किया।

हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान में वर्ष 2018 में चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गईं। संस्थान में दिनांक 7 फरवरी, 2018 को श्रीमती मृदला सी, सहायक निदेशक राजभाषा भारत संचार निगम लिमिटेड, कोशिक्कोड ने हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। दिनांक 28 जून 2018 को श्रीमती प्रवीणा, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, कोशिक्कोड ने हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। दिनांक 15 सितम्बर, 2018 को श्रीमती बिन्दु वर्मा, हिन्दी अनुवादक, महाडाकपाल कार्यालय, कोषिक्कोड ने हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा लेखन के बारे में व्याख्यान दिया। दिनांक 15 दिसम्बर, 2018 को सुश्री जमुना पी. पर्यवेक्षक, कालिकट अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा मलप्पुरम ने पारिभाषिक शब्दावली के बारे में व्याख्यान दिया।

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया जाता है। वर्ष के दौरान संस्थान के श्री. वी. सी. सुनिल, सहायक ने दस हजार से अधिक हिन्दी शब्दों को लिख कर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। संस्थान में हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री जितेन्द्र गुप्त, महाडाकपाल, महाडाकपाल कार्यालय, कोशिक्कोड ने यह पुरस्कार प्रदान किया।

- संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयुक्त हिन्दी समारोह के अवसर पर हिन्दी गीत, देशभक्ति गीत, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, सुलेख आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इनमें हिन्दी प्रश्नोत्तरी को तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- वर्ष के दौरान संस्थान में चार तिमाही बैठक आयोजित की गई। इसका कार्यवृत्त भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को भेज दिया।
- संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन संबन्धी तिमाही रिपोर्ट एवं वार्षिक रिपोर्ट भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को भेजी गई।
- संस्थान में दिनांक 22 दिसंबर, 2018 को आयोजित समारोह में डा. त्रिलोचन महापात्र, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक का विमोचन किया।

राजभाषा पत्रिका मसालों की महक का विमोचन

पुरस्कार

संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार 2016–17 योजना के अन्तर्गत द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डा. राशिद परवेज, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी पत्रिका पुरस्कार 2016–17 ग्रहण करते हुए

हिन्दी प्रकाशन

वर्ष 2018 में संस्थान द्वारा निम्नलिखित हिन्दी प्रकाशनों को प्रकाशित किया:

- वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17
- अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना की वार्षिक रिपोर्ट का सारांश
- मसाला समाचार जुलाई–सितम्बर, 2017 तथा अक्तूबर–दिसम्बर, 2017
- मसालों की महक 2018–राजभाषा पत्रिका
- हल्दी पर मोबाइल एप
- अदरक पर मोबाइल एप

भा.कृ.अ.प.–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के लुधियाना में स्थित भारतीय मक्का अनुसन्धान संस्थान में 14–28 सितम्बर 2018 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारम्भ 14 सितम्बर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान कुल छः प्रतियोगिताएं जैसे निबंध लेखन, भाषा प्रवीणता, हिंदी भाषा में सर्वाधिक कार्य करना, शब्द ज्ञान, आशु–भाषण और सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी को शामिल किया गया। संस्थान के सभी कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

इस पखवाड़े का समापन समारोह 28 सितम्बर को मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ सौरभ कुमार, प्रोफेसर, हिंदी और संस्थान राजभाषा कार्यन्वन समिति के अध्यक्ष डॉ सुजय रक्षित निदेशक, भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान ने शिरकत की। प्रतियोगिताओं में निर्णायक मंडल द्वारा चुने गए विजेताओं को निदेशक महोदय और मुख्य अतिथि के कर कमलों से

28 सितम्बर 2018 को राजभाषा पखवाड़े समापन समारोह का आयोजन

प्रमाण–पत्र प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि ने संस्थान के उपस्थित अधिकारियों से अपील की वो हिंदी भाषा को केवल संपर्क भाषा ही न समझें अपितु राजभाषा को अपनी जीवन शैली में ढाल लें। निदेशक महोदय ने कहा कि 'ख' और 'ग' क्षेत्र से संबंध होने के बावजूद संस्थान के अधिकारी और कर्मचारी हिंदी भाषा का प्रयोग करने की कोशिश करते हैं। यह अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

भारतीय मक्का अनुसन्धान संस्थान में 21 दिसम्बर, 2018 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रशिक्षण देने हेतु नराकास, लुधियाना की सदस्य सचिव एवं सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती किरण साहनी को आमंत्रित किया गया। इस कार्यशाला में पारिभाषिक शब्दावली पर उन्होंने दो व्यक्तव्य दिए और उसके तुरंत बाद उनका अभ्यास करवाया। इस प्रशिक्षण में कुल 08 वैज्ञानिकों और 03 प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने बड़ी सरलता से पारिभाषिक शब्दावली से जुड़े सभी वाक्यों को ठीक किया और सही उत्तर भी दिया। संस्थान के निदेशक ने भी सहायक निदेशक (राजभाषा) श्रीमती किरण साहनी का धन्यवाद किया।

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियां

वर्ष के दौरान प्राप्त पुरस्कारों का संक्षिप्त विवरण:

- हिंदी पत्रिका प्रकाशित करने पर नराकास द्वारा सम्मानित
- "छोटे कार्यालय" की श्रेणी में सर्वाधिक कार्य का निष्पादन हिंदी में करने पर नराकास द्वारा तृतीय पुरस्कार

वर्ष के दौरान प्रकाशित हिंदी प्रकाशनों की सूची

- कृषि चेतना
- संस्थान का प्रोफाइल

भा.कृ.अ.प.–केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

पखवाड़े का आयोजन

संस्थान में दिनांक 14–28 सितंबर, 2018 को हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसका समापन समारोह दिनांक 28 सितंबर, 2018 को हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत परिषद गीत से की गई। समापन समारोह में विशेष अतिथि के रूप में कवि पंडित किरण प्रताप मिश्र, कवि एवं गीतकार और मुख्य अतिथि के रूप में डा. सी.डी. माई, भूतपूर्व अध्यक्ष, ए.एस.आर.बी. नई दिल्ली उपस्थित थे। डा. पी.जी. पाटील, निदेशक ने अपने स्वागत भाषण में संस्थान में वर्षभर में हुई हिंदी कार्यान्वयन की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने देश के सभी राज्यों को एक सूत्र में बांधने हेतु हिंदी की उपयोगिता की सराहना की।

डा. डी.एम. कदम, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, हिंदी दिवस पखवाड़ा आयोजन समिति ने पखवाड़े का वृत्तांत एवं पखवाड़े

मुख्य अतिथि श्रीमती अमला रुईया, आकार चेरिटेबल ट्रस्ट की प्रमुख उद्घाटन दिवस पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए

मुख्य अतिथि डा. सी.डी. माई, भूतपूर्व अध्यक्ष, ए.एस.आर.बी., नई दिल्ली का डा. पी.जी. पाटील, निदेशक समापन समारोह में स्वागत करते हुए

के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी प्रस्तुत की। इसके बाद कविता पठन का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा. सी.डी. माई ने अपने संबोधन में संस्थान द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। विशेष अतिथि पंडित किरण प्रताप मिश्रा ने अपने संबोधन के दौरान स्वरचित कविताओं का पठन किया। प्रतियोगिताओं में विजेता कर्मचारियों को विशेष अतिथि के कर कमलों से पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

कार्यशाला का आयोजन

- ''हिंदी का प्रयोग और हमारी मानसिकता'' विषय पर सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 9 मार्च, 2018 को व्याख्याता डा. (श्रीमती) सुलभा कोरे, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) एवं संपादक हिंदी पत्रिका, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 89 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया।
- सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 23 जून, 2018 को ''भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसके अनुपालन में समस्याएं और समाधान'' विषय पर व्याख्याता डा. सुशील कुमार शर्मा, सदस्य सचिव नराकास एवं उप–महाप्रबंधक (राजभाषा), चर्चगेट ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 58 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया।
- ''हिंदी व्याकरण समस्या और समाधान'' विषय पर सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 1 सितंबर, 2018 को व्याख्याता डा. अनंत श्रीमाली, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 95 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया ।

- 22 दिसंबर, 2018 को ''राजभाषा कार्यान्वयन एवं कार्यालयीन हिंदी'' विषय पर सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए व्याख्याता डा. महेंद्र जैन, प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया जिसका लाभ कुल 65 अधिकारियों/कर्मचारियों ने लिया।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

संस्थान एवं इंडियन फाइबर सोसायटी (आई.एफ.एस) के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 2 जून, 2018 को 'प्राकृतिक रेशों की उन्नत प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी एवं उनके मूल्यवर्धित उत्पाद' विषय पर हिंदी में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन संस्थान के ज्युबिली हॉल में किया गया। डा. पी. अल्लि रानी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, मुख्य अतिथि एवं उपाध्यक्ष कॉटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया, श्री विनय कोटक, संगोष्ठी में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। डा. पी.जी. पाटील, निदेशक, कें.क.प्रौ. अनु.सं. ने अपने स्वागतीय भाषण में वर्तमान में प्राकृतिक रेशों के महत्व तथा संस्थान द्वारा कपास एवं अन्य प्राकृतिक रेशों के क्षेत्र में किए गए कार्य एवं इस संगोष्ठी को हिंदी में आयोजित करने के उद्देश्य को बताया। डा. आर.पी. नाचणे, चेयरमैन, आय.एफ.एस. ने इंडियन फायबर सोसायटी के उद्देश्य एवं गतिविधियों के बारे में बताया। श्री विनय कोटक ने अपने भाषण में भारतीय कपास को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता के बारे में बताया। श्री आर. के. गुप्ता, महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा), भा.क.नि. ने भारतीय कपास निगम का इतिहास एवं उसकी भूमिका के बारे में प्रस्तुतीकरण किया। डा. पी. अल्लि रानी ने उद्घाटन भाषण में इस संगोष्ठी के माध्यम से कपास और अन्य प्राकृतिक रेशों पर कार्यरत विविध संगठनों के एक साथ आने पर खुशी व्यक्त करते हुए प्राकृतिक रेशों के बड़े पैमाने के उत्पादन का फायदा देश के किसानों को मिलने की आवश्यकता पर जोर दिया। संगोष्ठी में प्राप्त लेखों के संकलन को संस्थान की गृह पत्रिका अंबर के विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया जिसका विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र का समापन डॉ. पी.के. मध्यान, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं आयोजन सचिव के धन्यवाद के साथ हुआ।

इसके पश्चात दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम तकनीकी सत्र का विषय था ''गुणवत्ता, विपणन एवं वस्त्र निर्माण'' जिसकी अध्यक्षता श्री मुंतजीर अहमद, पूर्व विभाग प्रमुख, यांत्रिकी प्रक्रिया विभाग, भा.कृ.अनु.प.–कें.क. प्रौ.अनु.सं. द्वारा की गयी। इस सत्र में 5 लेखों का प्रस्तुतीकरण किया गया। द्वितीय तकनीकी सत्र ''प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन'' विषय पर था जिसकी अध्यक्षता डा. एम.एस. कैरों, भूतपूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–कें.क.अनु.सं., नागपुर एवं

डा. पी.जी. पाटील, निदेशक, स्वागतीय भाषण देते हुए

मुख्य अतिथि डा. पी. अल्लि रानी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड द्वारा गृह पत्रिका अंबर का विमोचन

डा. आर.पी. नाचणे, भूतपूर्व विभाग प्रमुख, गु.मू. वि. वि., भा.कृ.अनु.प.–कें.क.प्रौ.अनु.सं. द्वारा की गई । इस सत्र में 6 लेखों का प्रस्तुतीकरण किया गया। संगोष्ठी का समापन डा. सुजाता सक्सेना, प्रधान वैज्ञानिक एवं संयुक्त सचिव, आय.एफ.एस. के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18
- गृहपत्रिका अंबर (अंक–4) 2017

भा.कृ.अ.प.–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

हिंदी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान में दिनांक 14–29 सितंबर, 2018 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान संस्थान में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के आयोजन किए गए। जैसे पूरे वर्ष के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 'मिठास' ट्राफी हेतु चयन, हिंदी कार्य की समीक्षा, यूनिकोड में हिंदी टंकण, अंताक्षरी प्रतियोगिता, टिप्पणी परिपत्र लेखन, कार्यालय ज्ञापन समझौता ज्ञापन लेखन, गन्ना या राजभाषा हिंदी पर आधारित विषय पर आशुभाषण, हिंदी के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी, हिंदी कार्यशाला एवं कवि सम्मेलन इत्यादि का आयोजन किया गया। दिनांक 17 सितम्बर, 2018 को हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें डा. जितेंद्र नाथ पाण्डेय, भूतपूर्व आचार्य, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने हिंदी काव्य में नाटक का स्वरूप विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर डॉ ए. के. साह, प्रभारी राजभाषा द्वारा हिंदी पखवाड़े का ब्यौरा एवं संस्थान द्वारा राजभाषा में उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। दिनांक 22 सितम्बर, 2018 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में "स्वच्छ्ता एवं इसका दैनिक जीवन में महत्व" विषय पर डॉ. अभिषेक कुमार शुक्ला, हृदय रोग विशेषज्ञ द्वारा व्याख्यान दिया गया। दिनांक 27 सितम्बर, 2018 को संस्थान के प्रेक्षागृह में श्री गोपाल दास नीरज एवं श्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि देते हुए उनको समर्पित एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में ख्याति प्राप्त कवियों ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया।

पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में संस्थान के लगभग 350–400 कार्मिकों ने भाग लिया तथा मूल्यांकन के उपरांत 87 कार्मिकों को समापन कार्यक्रम दिनांक 29 सितंबर, 2018 को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना पुरस्कार मुख्य अतिथि श्री जसबीर सिंह संधु, उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, लखनऊ के द्वारा प्रदान किया

गया। पुरस्कार में प्रमाण पत्र के साथ पारितोषिक राशि भी प्रतिभागियों को दी गई।

संस्थान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

- 22 मार्च, 2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 30 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में श्रीमती उषा सिन्हा, पूर्व विभागाध्यक्ष, भाषा–विज्ञान, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने अपना व्याख्यान दिया।
- 12 जून, 2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 49 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में श्री पीयूष वर्मा, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय ने व्याख्यान दिया।
- 22 सितम्बर, 2018 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 46 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें अजन्ता हॉस्पिटल से डॉ. अभिषेक शुक्ला ने व्याख्यान तथा प्रतिभागियों के साथ विचार–विमर्श किया गया।
- 29 दिसम्बर, 2018 को आयोजित हिंदी कार्यशाला में 125 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशाला में अजन्ता हॉस्पिटल से डॉ. अभिषेक शुक्ला एवं डॉ. ऋषि द्विवेदी ने "स्वस्थ तन, स्वस्थ मन" विषय व्याख्यान तथा प्रतिभागियों के साथ विचार–विमर्श किया।

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान में सभी चार त्रैमासिक कार्यशालाएँ समय से आयोजित की गईं।
- 15–17 जनवरी, 2018 को पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- 16 फरवरी, 2018 को संस्थान का स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में किसान, विद्यार्थियों को संपूर्ण जानकारी हिंदी में दिया गया।
- 14 मार्च, 2018 को एक दिवसीय किसान सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय खाद्य एवं कृषि परिषद, नई दिल्ली द्वारा किया गया।
- 19 अप्रैल, 2018 को नराकास (कार्यालय–1, कार्यालय–2 एवं कार्यालय–3) के 45 कार्यालयों की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि श्री प्रभास कुमार झा, भा. प्र. सेवा, सचिव, राजभाषा विभाग थे।
- 6 अगस्त, 2018 को संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र एवं उपनिदेशक (कृषि), लखनऊ द्वारा संयुक्त रूप से खरीफ फसलों के उत्पादन में वृद्धि हेतु जैविक कृषि तथा किसानों की आय को दोगुना करने हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री रणवेन्द्र प्रताप सिंह, माननीय कृषि राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया गया।
- 16–31 दिसम्बर, 2018 तक स्वच्छता पखवाड़े के रूप में मनाया गया, जिसमें संस्थान में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

संस्थान को प्राप्त पुरस्कार/सम्मान

- 17 मार्च, 2018 को नई दिल्ली में प्रधान मंत्री महोदय द्वारा संस्थान के कृषि विज्ञान केंद्र को उत्तर जोन का द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।
- 6 मार्च, 2018 को नई दिल्ली में संस्थान को महिंद्रा समृद्धि अवार्ड से नवाजा गया।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के 90वें स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई, 2018 को आयोजित पुरस्कार समारोह में संस्थान को राजभाषा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने हेतु बड़े संस्थानों की श्रेणी में प्रतिष्ठित राजश्री टंडन पुरस्कार के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी के द्वारा नई दिल्ली में प्रदान किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री जी से संस्थान के निदेशक डॉ ए. डी. पाठक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केंद्र डॉ एस. एन. सिंह कृषि विज्ञान केंद्र का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी से निदेशक डॉ ए. डी. पाठक, राजभाषा प्रभारी डॉ ए.के. साह एवं तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) श्री अभिषेक कुमार सिंह राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त करते हुए

हिंदी प्रकाशनों की सूची

- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्षः 6 अंकः 1 (किताब)
- किसान ज्योति संस्करणः 6 अंकः 1 (किताब)
- इक्षु राजभाषा पत्रिका अंकः वर्षः 6 अंकः 2 (किताब)
- किसान ज्योति संस्करणः 6 अंकः 2 (किताब)
- पशुपालन एवं प्राथमिक पशुचिकित्सक हेतु प्रशिक्षण पुस्तिका (किताब)
- गन्नेल में सहफसली खेतीः गन्ना् किसानों की आय का प्रमुख आयाम (किताब)
- गन्नब में कटाई उपरांत शर्करा ह्ास एवं प्रबंधन (द्विभाषी) (फोल्डर)
- स्वनस्थं गाय–भैंस पालन के लिए महत्व पूर्ण जानकारियां (फोल्डर)
- गन्नेल की फसल से रस चूसने वाले प्रमुख कीट व उनका प्रबंधन (फोल्डर)
- गन्नेल एवं शर्करा उपज बढ़ाने हेतु पौध वृद्धि नियामकों (पीजीआर) का उपयोग (फोल्डंर)

भा.कृ.अ.प.–उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र के लिए भा.कृ.अ.प का अनुसंधान परिसर, उमियम, मेघालय

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 07 से 14 सितंबर, 2018 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन निदेशक डॉ. नरेन्द्र प्रकाश द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। तत्पश्चात् संस्थान में कार्यरत हिन्दी अनुभाग द्वारा संस्थान गीत का गायन किया गया। इस अवसर पर डॉ. नरेन्द प्रकाश, निदेशक, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अंजनी कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष, प्रभारीगण, वैज्ञानिक, अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। सर्वप्रथम प्रभारी उप निदेशक (रा.भा) एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री कृष्णकान्त कुलश्रेष्ठ ने वर्ष 2017–18 की हिन्दी कार्यान्वयन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अंजनी कुमार झा, प्र. वैज्ञानिक एवं प्रभारी प्रभागाध्यक्ष ने हिन्दी को बढ़ाने के लिए अपने विचार रखे। अन्य प्रवक्ताओं ने भी अपने उदगार प्रकट किए। तत्पश्चात संस्थान निदेशक डॉ. नरेन्द्र प्रकाश ने अपने सम्बोधन में हिन्दी को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया तथा वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होनें कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है और जिनको हिन्दी का ज्ञान प्राप्त नहीं है, वे शीघ्र ही भारत सरकार के प्रशिक्षण केन्द्र से प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होकर हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करें। इसके बाद उद्घाटन समारोह का डॉ. अमित कुमार द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव देते हुए समापन किया गया।

दिनांक 07 सिंतबर, 2018 को हिन्दी कविता पाठन प्रतियोगिता तीन वर्गों हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखी गयी थी एवं सभी प्रतिभागियों ने अपनी स्वरचित कविता एवं अन्य कविताएँ प्रस्तुत की। इसमें कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। दिनांक 10 सिंतबर, 2018 को अंताक्षरी प्रतियोगिता में सभी तीनों वर्गों हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी और पूर्वोत्तर वासियों को मिलाकर एक समूह बनाया गया। इसमें कुल 3 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। दिनांक 11 सिंतबर 2018 को त्वरित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया एवं उनको उसी समय पुरस्कार प्रदान किए गए।

12 सिंतबर, 2018 को तत्कालिक वाक् प्रतियोगिता तीन वर्गों हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी एवं पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखी गयी थी। इसमें कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। 13 सिंतबर, 2018 को हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता तीन वर्गों हिन्दी भाषी, अहिन्दी भाषी एवं पूर्वोत्तर वासियों के लिए अलग–अलग रखी गयी थी एवं सभी प्रतिभागियों ने अपने लेख प्रस्तुत किए। इसमें कुल 9 लोगों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया। दिनांक 14 सिंतबर, 2018 को हिन्दी दिवस का समापन समारोह आयोजित किया गया एवं इसी शुभ अवसर पर संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक भी की गई, जिसमें सभी सदस्यगण उपस्थित थे। इस अवसर पर हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के नाम घोषित किए गए एवं उन अधिकारियों/ कर्मचारियों को बधाई दी गई। संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन

समिति के सदस्यों द्वारा हिन्दी दिवस पर बहुमूल्य सुझाव भी दिए गए। अन्त में डॉ. बिजोया भट्टाचार्जी प्र. वैज्ञानिक एवं प्रभागाध्यक्ष जैव प्रौद्योगिकी धन्यवाद प्रस्ताव के बाद हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन किया।

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 14 जून, 2018 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन डॉ. के. के. बरूआ प्रभारी निदेशक, मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. मिश्रा (राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो उमियम), डॉ. अर्नवसेन प्रभागाध्यक्ष (पशु स्वास्थ्य), श्री एस. आर. बरूआ, प्रशासनिक अधिकारी (कार्मिक) एवं श्री. के. के. कुलश्रेष्ठ, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी उप निदेशक (रा.भा) ने वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित कर दिया गया।

संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री के. के. कुलश्रेष्ठ द्वारा इस अवसर पर सभागार में सभी का हार्दिक स्वागत किया गया। कार्यशाला की आवश्यकता एवं महत्व को हिन्दी प्रकोष्ठ की प्रभारी श्रीमती शांती धोजसुनार द्वारा प्रस्तुत किया गया। डॉ. अर्नवसेन, पशु स्वास्थ्य, प्रभागाध्यक्ष द्वारा सम्बोधन किया गया, उन्होंने हिन्दी राजभाषा के लिए सम्मान प्रदर्शित करने को कहा। मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. मिश्रा प्रभारी प्रभागाध्यक्ष (राष्ट्रीय पादप संसाधन ब्यूरो उमियम) ने विशय में विस्तार से अपने विचार प्रकट किए, उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु अपना मत प्रकट किया। संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. के. के. बरूआ, द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला को महत्व देते हुए विषय संबंधी अपने बहुमूल्य विचार प्रकट किए गए।

इस कार्यक्रम में संस्थान के विभिन्न अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने अपने विचार प्रकट किए गए। संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री कुलश्रेष्ठ द्वारा सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों से अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने हेतु अपील की गयी एवं यह रेखांकित किया गया कि हिन्दी हमारे अस्तित्व से जुड़ी हुई सरस भाषा है। यह भी सलाह दी गयी कि हिन्दी में पत्र/आवरण पत्र/टिप्पण लेखन इत्यादि को बढ़ावा देना चाहिए। पिछले माह राजभाषा कार्यान्वयन उपनिदेशक क्षेत्रीय कार्यालय गुवहाटी द्वारा किए गए निरीक्षण एवं संस्थान की प्रशंसा से भी सभी को अवगत कराया गया।

संस्थान के तत्वावधान में दिनांक 27 नवंबर, 2018 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव, (क्षेत्रीय कार्यान्वयन अधिकारी) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (गुवाहाटी) थे। मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव का प्रभारी निदेशक द्वारा स्वागत किया गया। डॉ. आर. लाहा, प्रभारी निदेशक, श्री. के. के. कुलश्रेष्ठ, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं प्रभारी उप निदेशक (रा.भा), श्री एस. आर. बरूआ प्रशासनिक अधिकारी (कार्मिक), श्री परिमल घोष प्रशासनिक अधिकारी (सामान्य), संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य एवं सभी सहायक प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव, क्षेत्रीय कार्यान्वयन अधिकारी, राजभाषा विभाग ने विषय में विस्तार से अपने विचार प्रकट किए, उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु अपना मत प्रकट किया। श्री बदरी यादव द्वारा संस्थान के सभागार में एक जीवंत प्रस्तुतीकरण भी पेश किया गया जिसमें विभिन्न राजभाषा सूचनाओं को प्रेषित करने की सम्यक जानकारी प्रदान की गयी।

इस अवसर पर संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा संस्थान के राजभाषा हिन्दी कार्यों के दिनांक 30.10.2018 को हुए निरीक्षण के संबंध में भी चर्चा कि गई एवं समिति की अनुशंसाओ पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन अधिकारी द्वारा यह सुझाव दिया गया कि संस्थान द्वारा इस संबंध में शीघ्र आवश्यनक कार्यवाही की जानी चाहिए।

इस कार्यक्रम में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपने–अपने विचार प्रकट किए गए। मुख्य अतिथि श्री बदरी यादव द्वारा सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों से अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने हेतु अपील भी की गयी एवं यह रेखांकित किया गया कि हिन्दी हमारे अस्तित्व से जुडी हुई सरस भाषा है। यह भी सलाह दी गयी कि हिन्दी में पत्र/आवरण पत्र/टिप्पण, लेखन इत्यादि को बढ़ावा देना चाहिए। संसदीय उप समिति द्वारा संस्थान के हिन्दी कार्यों का निरीक्षण कर जो प्रशंसा की गयी थी, उससे भी सभी को अवगत कराया गया।

हिन्दी की मुख्य गतिविधियां

- संस्थान से हिन्दी प्रशिक्षण (पत्राचार पाठ्यक्रम) के लिए 16 अधिकारी/कर्मचारियों को विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामित किया गया है।
- दिनांक 19.04.18 को पत्र द्वारा सभी समस्त प्रभागाध्यक्ष एवं अनुभाग अधिकारियों से यह अनुरोध किया गया कि अधिक से अधिक काम हिन्दी में करें तथा शत प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने वालों की संख्या बढ़ाने हेतु प्रयास किया जाए।
- संस्थान के 178 कम्प्यूटरों में हिन्दी फौंट उपलब्ध करा दिया गया है। जिससे कि उच्च अधिकारियों को अपना कार्य हिन्दी में करने में आसानी हो रही है।
- S कार्यालय के सभी 143 रजिस्टरों में यथा संभव प्रविष्टियां द्विभाषी कर दी गयी है तथा संबंधित अनुभागों को हिन्दी में प्रविष्टियां करने को कहा गया है।
- उप निदेशक (राभा) एवं सहायक निदेशक (राभा) के सृजित पद को शीघ्रातिशीघ्र भरने का आग्रह परिषद से किया गया है। परिषद की ओर से कार्यवाई अपेक्षित है।
- संसदीय राजभाषा समिति की उप समिति द्वारा दिए गए आश्वासनों एंव ध्यान योग्य बातों पर कार्रवाई की जा रही हैं।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप आयोजित की जा रही है और बैठक में लिए गए निर्णयों पर आवश्यक कार्यवाई की जा रही है।
- दिनांक 14.06.18 को संस्थान में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें संस्थान के विभागों/अनुभागों/वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने भाग लिया।
- दिनांक 07 से 14 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी सप्ताह एवं हिन्दी दिवस मनाया गया।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2018 तक संस्थान में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी दिवस का शुभारम्भ 14 सितम्बर 2018 को संस्थान के अध्यक्ष महोदय डॉ. सन्तोष कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया। संस्थान की राजभाषा अधिकारी

पुरस्कार वितरण समारोह

श्रीमती बिष्णुप्रिया महाराणा के तत्वावधान में हिंदी में निबंध लिखन प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर यूनिकोड में टंकण प्रतियोगिता, स्वरचित कविता पाठ एवं हस्तलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी अधिकारी/कर्मचारी/प्रोजेक्ट स्टॉफ ने हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लिए।

दिनांक 29.12.2018 को माननीय डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग) (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) महानिदेशक की उपस्थिति में हिंदी पखवाड़ों के दौरान आयोजित प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार का वितरण किया गया।

वर्ष 2018 को संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ों के दौरान दिनांक 25 सितम्बर 2018 को "कार्यालयी वित्तिय नियमों की नवीनतम व्याख्या" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में श्री जी.सी. प्रसाद, वित्त नियंत्रक, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, को आमंत्रित किया गया।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान के बेंगलूरु स्थित मुख्यालय और भुवनेश्वर, ओडिशा एवं चेट्टल्ली, कोडगु, कर्नाटक स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों में वर्ष 2018 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गई :

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में 14–28 सितंबर, 2018 के दौरान हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ समारोह संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. प्रकाश पाटील की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ज्ञानचन्द मर्मज्ञ मुख्य अतिथि थे। हिंदी पखवाड़े के दौरान 'हिंदी कविता पाठ', 'हिंदी शब्दावली एवं टिप्पण', 'पूर्व लिखित हिंदी निबंध', 'हिंदी गीत', 'आशु भाषण', 'अंताक्षरी' और 'हिंदी संवाद' प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इस अवसर पर बोलते हुए श्री ज्ञानचन्द मर्मज्ञ ने कहा कि हिंदी इंद्रधनुष के समान है, जैसे इंद्रधनुष में सात रंग होते हैं और उन्हें अलग–अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही हिंदी में हमारे देश की अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं और उन्हें भी अलग नहीं किया जा सकता। हिंदी हमारे देश की प्रादेशिक भाषाओं का प्रतिनिधित्व करती है। सिर्फ हिंदी दिवस या हिंदी सप्ताह या फिर हिंदी पखवाड़े में नहीं, बल्कि वर्ष भर हिंदी में काम करना हमारा कर्तव्य है। इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'बागवानी' के नवें अंक का विमोचन भी किया गया।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह 28 सितंबर, 2018 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री देवेन्द्र कुमार, निदेशक (वित्त), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें राष्ट्र को जोड़ने की क्षमता है। भारत में अधिकांश क्षेत्रों में हिंदी बोली या समझी जाती है। इसीलिए हिंदी को भारत सरकार की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ है। आजकल हिंदी में काम करना आसान हो गया है, क्योंकि हिंदी में काम करने को सुविधाजनक बनाने के लिए तथा क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी सीखने के लिए भी कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। हमें चाहिए कि हम एक बार काम करना शुरू करें, फिर शब्द अपने आप आ जाएँगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. एम.आर. दिनेश ने की।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि का उद्बोधन

इस अवसर पर मुख्य अतिथि और निदेशक ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं और मूल रूप से हिंदी में काम करने वाले कर्मचारियों को प्रमाण–पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए।

हिन्दी कार्यशालाएँ

संस्थान में वर्ष 2018 के दौरान दिनांक 23 जनवरी, 2018, 26 जून, 2018 और 20 दिसंबर, 2018 को संस्थान के प्रशासनिक वर्ग के कर्मचारियों के लिए ''कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य'' विषय पर टेबुल कार्यशालाएँ और दिनांक 24–26 सितंबर, 2018 के दौरान प्रशासनिक व तकनीकी वर्ग के कर्मचारियों के लिए ''आइए हिंदी बोलिए'' विषय पर विशेष कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक रिपोर्ट 2017–18
- वार्षिक राजभाषा पत्रिका ''बागवानी''

हिन्दी प्रोत्साहन योजना

- संस्थान में मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन योजना लागू की गई तथा वर्ष के दौरान इस योजना में भाग लेने वाले कुल 10 प्रतिभागियों में से 02 कर्मचारियों को प्रथम पुरस्कार, 03 कर्मचारियों को द्वितीय पुरस्कार और 05 कर्मचारियों को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। इन कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान नगद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

विशेष कार्यशाला व प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी

हिन्दी सप्ताह

केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, चेट्टल्ली, कोडगु, कर्नाटक में 14–21 सितंबर 2018 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। हिंदी सप्ताह के दौरान केन्द्र के सभी कर्मचारियों और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं के लिए श्रुतलेख, काव्य पाठ, शब्दार्थ, सुलेख और हिंदी वर्णमाला प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 21 सितंबर 2018 को आयोजित किया गया। समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर, ओडिशा

हिन्दी सप्ताह

केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, भुवनेश्वर, ओडिशा में कार्यालयीन कार्य में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु 14–22 सितंबर 2018 के दौरान हिंदी सप्ताह आयोजित किया गया। श्री विनोद कुमार, सेवानिवृत्त आईएफएस अधिकारी, ओडिशा वन विकास निगम लि. ने हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया और उन्होंने राष्ट्रीय एकता और सामाजिक विकास में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सामाजिक माध्यम में हिंदी की भूमिका का भी उल्लेख किया। डॉ. जी.सी. आचार्य, प्रभारी अध्यक्ष ने केन्द्र में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। हिंदी सप्ताह के दौरान डॉ. मीनु कुमारी और डॉ. कुन्दन किशोर के नेतृत्व में हिंदी पढ़ना, सुलेख, आशुभाषण, हिंदी निबंध, अंतराक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। हिंदी सप्ताह का समापन समारोह 22 सितंबर 2018 को आयोजित किया गया, जिसमें श्री श्रवण कुमार, कार्यकारी अभियंता, सी.पी.डब्ल्यु.डी. और श्री पूर्णेन्दु मिश्रा, सहायक अभियंता, सी.पी.डब्ल्यु.डी. अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री कुमार ने समाज और देश की जनता के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए हिंदी भाषा के

हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह

महत्व पर जोर दिया। उन्होंने हिंदी को विज्ञान से जोड़ने और विज्ञान को हिंदी से जोड़ने की बात कही। डॉ. मीनू कुमारी ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर अतिथियों और केन्द्र प्रभारी ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण–पत्र वितरित किए।

भा.कृ.अ.प.– केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

हिन्दीक पखवाड़े का आयोजन

भा.कृ.अनु.प.–संस्थान में दिनांक 14.09.2018 को प्रातः 11:00 बजे संस्थान के निदेशक डॉ. आनंदमय कुण्डू एवं अतिथिगणों द्वारा द्वीप प्रज्ज्वलित कर 'हिंदी पखवाड़े' के उद्‌घाटन समारोह का शुभारंभ किया गया। श्रीमती अर्चना शर्मा द्वारा माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, द्वारा हिंदी सप्ताह के दौरान जारी किए गए सन्देश को सभा के सामने पढ़ा।

उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर संस्थान में श्री सुशील कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने ''कार्यालय में राजभाषा हिंदी की भूमिका'' पर एक विशेष व्याख्यान पावर पाइंट प्रेजेंटेशन द्वारा प्रस्तुत किया।

दिनांक 14.09.2018 को ''इन द्वीपों में किसानों व वैज्ञानिकों की संपर्क भाषा– हिंदी'' शीर्षक पर एक दिवसीय संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसमें सबसे पहले अतिथि वक्ता डॉ. चंदा श्रीवास्तव सहायक निदेशक (कृषि), कृषि विभाग, अण्डमान निकोबार प्रशासन द्वारा उपरोक्त विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। साथ ही संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों ने भी इस विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया जिसमें सभी वैज्ञानिकों ने हिंदी भाषा की महत्वता को दर्शाते हुए अपनी भूमि पुत्रों के साथ का अनुभव एवं उपलब्धियों को विस्तारपूर्वक बताया। अंत में निदेशक डॉ. आनंदमय कुण्डू ने संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को स्मृति–चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस दौरान संस्थान के निदेशक डॉ आनंदमय कुंडू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रेरणादायी वक्तव्य में बताया कि सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को कार्यालय में राजभाषा की भूमिका पर विशेष ध्यान देने के साथ–साथ इसके नियम को पालन करना हमारा कर्तव्य भी है अर्थात हिंदी भाषा की महत्वता को हिंदी सप्ताह के अंतर्गत ही नहीं, पूरे वर्ष भर हमें इसका पालन करना चाहिए और अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए आग्रह किया। सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देते हुए कृषि तकनीकों और अपनी शोध उपलब्धियों को आम जनता तक हिंदी या उनकी मातृभाषाओं में पहुंचाने का अनुरोध किया। साथ ही अपने हस्ताक्षर भी हिंदी में करने को कहा। उन्होंने संस्थान द्वारा हिंदी के क्षेत्र में प्राप्त की गई उपलब्धियों के लिए बधाई देते हुए शुभकामना दी।

हर वर्ष की तरह हिंदी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय द्वारा 14.09.2018 से 30.09.2018 तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 01.10.2018 को अपरान्ह 10.30 बजे सेमिनार हाल में हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री टी.एन. कृष्णामूर्ति, मुख्य

अभियंता एवं प्रशासक, अ.ल.ब.नि.का, पोर्ट ब्लेयर, मुख्य अतिथि थे। समापन समारोह के अवसर पर तत्काल भाषण का आयोजन किया जिसमें सभी वैज्ञानिकों तकनीकी/प्रशासनिक अधिकारीयोंध्कर्मचारियों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. आनंदमय कुंडू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की एवं विभिन्न प्रतियोगिता के अंतर्गत भाग लेने वाले प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि एवं निदेशक द्वारा नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

संयुक्त हिन्दी कार्यशाला

संस्थान के सभागार में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर द्वारा आयोजित एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का उदघाटन समारोह में अंडमान–निकोबार प्रशासन के सचिव (राजभाषा) माननीय श्री रमेश वर्मा, भा.प्र.से. मुख्य अतिथि एवं टैगोर राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जयदेव सिंह विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय श्री रमेश वर्मा एवं डॉ. जयदेव सिंह ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. एस. दाम रॉय के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर एक–दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का विधिवत उदघाटन किया। श्री रमेश वर्मा एवं डॉ. जयदेव सिंह ने संयुक्त हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन के बाद उपस्थितों को संबोधित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष नराकास डॉ. एस. दाम रॉय ने अतिथियों को स्मृति–चिन्ह भेंट किया। उपस्थितों को संबोधित करते हुए डॉ दाम रॉय ने नराकास के क्रियाकलापों की जानकारी दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सचिव, नराकास श्रीमती सुलोचना ने पावर पॉइंट प्रदर्शन द्वारा नराकास के कार्यक्रमों,

बैठकों, पत्रिका, समिति की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की विस्तृत जानकारी दी। इससे पहले कार्यशाला अध्यक्ष के रूप में डॉ. संतोष एस. माने ने उपस्थितों का स्वागत किया।

श्री रमेश वर्मा ने अपने कर कमलों द्वारा नराकास के प्रतीक–चिन्ह का विमोचन किया जो कि पूरे कार्यक्रम के आकर्षण का केंद्र रहा।

हिन्दी/द्विभाषी प्रकाशन

- "द्वीप तरंग" प्रथम–नराकास वार्षिक पत्रिका
- द्वीपों में फूलों का उत्पादन के लिए पारिस्थितिकी तंत्र पर एक दर्शिका
- खाड़ी द्वीपों में एन्थुरियम का गमलों में उत्पादन
- द्वीपों के पारिस्थितिकीय तंत्र के अंतर्गत केले का उत्पादन
- काली मिर्च
- अदरक
- हल्दी
- कददूवर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट का प्रकोप एवं उसका सुरक्षित एवं सफल उपाय
- मीठे पानी की मछलियों के रोग व उनका प्रबंधन
- मीठे पानी में मछली पालन के बेहतर प्रबंधन तरीके
- अंडमान एवं निकोबार द्वीपों में उच्च गुणवत्ता प्रोटीन वाली मक्का की खेती
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में पपीते की वाणिज्यक खेती
- मत्स्य आहार सूत्रीकरण
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के जलीय जीव रोग के लिए राष
- मत्स्य स्वास्थ्य कार्ड
- शकरकंद की खेती
- जिमीकंद की खेती
- 'द्वीप तरंग" द्वितीय – नराकास वार्षिक पत्रिका
- जैविक खेती में पंचगव्य का उपयोग
- निकोबार द्वीप समूह में पोषक तत्वों की सुरक्षा के लिए केंचुएँ की खाद का महत्व
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में कद्दू कुल की सब्जियों की खेती के लिए प्रमुख सुझाव
- कृषि तकनीक द्वारा निचले क्षेत्रों में गेंदा के फूल की खेती
- पादप ऊतक संवर्धन
- अं.नि.द्वीपों के सन्दर्भ में दालचीनी का गूटी विधि से गुणन
- नारियल आरोहण यंत्र
- अदरक

- हल्दी
- ग्रामीण कुक्कुट पालन के लिए कम लगत वाला संतुलित आहार
- ग्रामीण कुक्कुट पालन हेतु जैव सुरक्षा उपाय
- बैकयार्ड में ब्रुडिंग
- ग्रामीण कुक्कुट पालन में मिनी इन्क्युबेटर
- कृषि एवं डेरी उत्पाद का मूल्य संवर्धन (पुस्तक)
- रजनीगंधा की उत्पादन तकनीक
- काली मिर्च
- गेंदे के फूलों की उत्पादन प्रौद्योगिकी
- चमेली की उत्पादन प्रौद्योगिकी
- ड्रैगन फल (पिताया फल)
- गेंदों की उपज में वृद्धि हेतु रोपण की संशोधित प्रणाली
- ''द्वीप कृषि सन्देश'' तकनीकी पुस्तक (संकलन सुलोचना)
- बहिग्रम केंद्र उत्तरी एवं मध्य अंडमान, भारत में कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग–एक नवोन्मेषी संस्थागत
- दृष्टिकोण – पुस्तिका
- ''द्वीप तरंग'' तृतीय नराकास वार्षिक पत्रिका

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान, बंगलुरू

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान में दिनांक 14 से 20 सिंतबर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। समारोह की शुभारंभ 14 सितंबर को संस्थान के निदेशक (कार्यवाहक), डॉ. बी. आर. सोम द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई। इस अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्र उपस्थित थे। इस अवसर पर माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, श्री राधा मोहन सिंह द्वारा हिंदी के लिए जारी संदेश तथा सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, डॉ. त्रिलोचन

महापात्र द्वारा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने के लिए जारी अपील को पढ़ा गया। निदेशक महोदय ने हिन्दी के प्रोत्साहन के लिए संस्थान के वैज्ञानिको, कर्मचारियों और शोध छात्रों से ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने की अपील की। इस अवसर पर संस्थान डॉ. डा. एस. एस. पाटील, प्रधान वैज्ञानिक, और शोध छात्रों ने हिन्दी से जुड़े अपने कुछ अनुभवों को साझा किया। हिन्दी प्रभारी, डॉ. मंजूनाथ रेड्डी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया तथा सभी से विभिन्न प्रतियोगिताओं में ज्यादा से ज्यादा भाग लेने की अपील की। हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत सात विभिन्न प्रतियोगिताओं (आशुभाषण, निबंध लेखन, अनुवाद, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद और गायकी) का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी लोगों ने सहभागिता की। हिंदी सप्ताह के अंतिम दिन समापन समारोह का आयोजन किया गया। बतौर राजभाषा प्रभारी, डॉ मंजुनाथ रेड्डी ने हिन्दी सप्ताह में किए गए आयोजनों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। तत्पश्चात् विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। अंत में डॉ अवधेश प्रजापति, सदस्य सचिव, हिन्दी कार्यान्वयन समिति ने कुशल समापन में सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन दिया।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान में दिनांक 14 से 28 सितम्बर 2018 के बीच हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक डा. आर्जव शर्मा, ने दीप प्रज्जवलित करके किया। हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डा. अनिल कुमार ने हिन्दी के महत्व को बताते हुए राजभाषा के नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम व प्रतियोगिताओं का ब्यौरा प्रस्तुत किया। हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डा. आर्जव शर्मा ने संस्थान में हिन्दी में हो रहे कार्यों की सराहना की और उन्होंने कहा कि हिन्दी पखवाडे के दौरान हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक संचार एवं प्रसार होता है। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि चीन के विश्वविद्यालयों में 50 प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी भाषा सीख रहे हैं ताकि वे अपना व्यापार आदि कार्य भारतीय उपमहाद्वीप में प्रभावी रूप से कर सकें। उन्होंने कहा कि भारत एक महान देश है जो कि विविधताओं से भरा हुआ है और भाषा सारी विविधताओं को जोड़ने में कड़ी का काम करती है। हिन्दी भाषा एक सरल, सशक्त एवं वैज्ञानिक भाषा है इसको सुदृढ़ करने के लिए हमें अधिक से अधिक हिन्दी में काम करना होगा। हिन्दी राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है व

हिन्दी पखवाड़े के शुभारम्भ के अवसर पर सभा को संबोधित करते संस्थान के निदेशक डॉ. प्रबोध चन्द्र शर्मा

इसका गौरवशाली इतिहास रहा है। इसके प्रयोग से हमें गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। इससे पूर्व संस्थान के निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया और बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह निर्णय लिया गया था कि राज–काज में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग 15 वर्ष तक होगा उसके बाद केवल हिंदी राज–काज की भाषा होगी लेकिन विरोध के कारण यह निर्णय लागू नहीं हो पाया। आज गूगल व याहू आदि वेबसाइटों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। भारतीय नेता विदेशों में जाकर विश्व मंच पर हिन्दी में संबोधन करने लगे हैं। सरकारी तंत्र का हिस्सा होने के कारण हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम भी अपना सरकारी कामकाज राजभाषा में ही करें।

हिन्दी पखवाड़े का समापन व पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 28 सितम्बर, 2018 को संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री गगन कुमार, सहायक महाप्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक, करनाल थे। सर्वप्रथम हिन्दी पखवाड़ा समिति के अध्यक्ष डा. अनिल कुमार ने पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि श्री गगन कुमार ने अपने संबोधन में सरकारी काम–काज में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश के 65 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते व समझते हैं और हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो भारत को एक सूत्र में पिरो सकती है। स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी का महान योगदान रहा है। अंग्रेजों ने हिन्दी को महत्वहीन करके अपनी भाषा अंग्रेजी को महत्व दिया इसलिए वह भारत पर शासन कर पाए। यदि हमें पूरे विश्व पर अपना प्रभुत्व कायम करना है तो हमें हिन्दी को अपनाना होगा। हमें जो विचार आता है वह हमारी मातृभाषा हिन्दी से ही आता है, बाद में उसे हम अंग्रेजी में लिखते हैं। उन्होंने संस्थान में हिन्दी में किए जा रहे कार्यों की प्रगति को देखकर प्रसन्नता व संतोष व्यक्त किया और कर्मचारियों से आह्वान किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें।

संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डा. राजेन्द्र कुमार यादव ने कहा कि हमारे देश की 80 प्रतिशत जनता हिंदी समझ सकती है तथा 65 प्रतिशत जनता इसको बोल व लिख सकती है। विचारों को मूर्त रूप देने के लिए हिंदी सशक्त माध्यम है। हिंदी को आगे बढ़ाना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। आज हिंदी 80 देशों में बोली जाती है और 200 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

आज गूगल, याहू वेबसाइट भी अपना कार्य हिंदी में कर रही है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी कर्मचारी हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करें। संस्थान में आयोजित पखवाड़े के दौरान संस्थान में हिन्दी के ज्ञान व इसके प्रयोग को बढ़ाने हेतु आशु भाषण प्रतियोगिता, निबंध लेखन, आवेदन लेखन, हिन्दी टंकण, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, सरकारी काम–काज में मूल हिन्दी आलेखन, प्रश्नोत्तरी, चलवैजयन्ती, हिन्दी गीत अन्ताक्षरी व कविता पाठ इत्यादि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में 30 से 40 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया व विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री गगन कुमार ने हिंदी योजना के अंतर्गत वर्ष भर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा हिन्दी पखवाड़े के दौरान हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को

स्थापना दिवस के अवसर पर सभा को सम्बोधित करते संस्थान के निदेशक डॉ. प्रबोध चन्द्र शर्मा

रबी किसान मेले के अवसर पर आयोजित किसान गोष्ठी में किसानों को संबोधित करते माननीय राधामोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार

पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरित किए। निदेशक महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई 11 प्रतियोगिताओं एवं उनमें भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की सराहना की तथा विजेताओं को हार्दिक बधाई दी। दिनांक 25.09.2018 को संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत एक टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में करनाल जिले में स्थित केन्द्र सरकार के समस्त कार्यालयों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, उपक्रमों व निगमों के लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रमुख उपलब्धियां

- संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रत्येक तिमाही में (वर्ष में चार) बैठकें आयोजित की गई। जिसमें संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हुई प्रगति का अवलोकन किया गया है और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रमानुसार व समीक्षा के रूप में उनसे प्राप्त सुझावों पर संस्थान में राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए आवश्यक कदम उठाए गए।
- संस्थान में सभी रबड़ की मोहरें, नामपट्ट, बोर्ड, बैनर आदि द्विभाषी बनाए गए।
- संस्थान में सभी प्रशासनिक बैठकें हिन्दी में आयोजित की गई।
- संस्थान की तिमाही रिपोर्ट आनलाईन भेजी गई।
- संस्थान के कार्यालय प्रधान, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी व प्रभारी अधिकारी राजभाषा द्वारा नराकास की बैठकों में भाग लिया गया और इन बैठकों में लिए गए निर्णयों की संस्थान में अनुपालना की गई।
- इस अवधि में संस्थान की पत्रिका 'कृषि किरण' प्रकाशित की गई।
- इस अवधि में संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 द्विभाषी प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान का जुलाई से दिसम्बर 2018 लवणता समाचार पत्र द्विभाषी प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि के अन्तर्गत विभिन्न हिन्दी समाचार पत्रों में संस्थान में सम्पन्न गतिविधियों सम्बन्धी 170 प्रेस विज्ञप्तियाँ प्रकाशित हुई।
- विगत कुछ वर्षों से संस्थान के प्रशासनिक कार्मिकों को राजभाषा (हिन्दी) में टिप्पणी व मसौदा लेखन के लिए प्रोत्साहित करने हेतु पुरस्कार वितरित किए जाते हैं, उसी कड़ी में इस वर्ष भी 6 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया।
- कार्यालय में डाक प्रेषण का सारा काम हिन्दी में किया गया।
- अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियाँ हिन्दी में की गई।
- कार्यालय के सभी अनुभागों की फाइलों में अधिकतर टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखी गई।
- सभी मजदूरों के ठेके तथा नीलामी की सूचनाएं, विज्ञापन, प्रेस नोट, निमंत्रण कार्ड आदि हिन्दी में प्रकाशित किए गए।
- लेखा परीक्षा अनुभाग के सभी बिलों पर भुगतान आदेश हिन्दी में लगाए गए व रोकड बही भी हिन्दी में लिखी गई।
- संस्थान की निदेशक इकाई को अपना सर्वाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए चल वैजयंती पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार/सम्मान

भा.कृ.अनु.पं.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में दिनांक 12 जून 2018 को सम्पन्न हुई नराकास करनाल की छमाही समीक्षा बैठक में वर्ष 2017–18 के अंतर्गत संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु संस्थान को अपने वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

भा.कृ.अनु.पं.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में दिनांक 30 नवम्बर 2018 को सम्पन्न हुई नराकास करनाल की छमाही समीक्षा बैठक में संस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'कृषि किरण' को नराकास करनाल द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित वर्ष 2017–18 की उत्कृष्ट पत्रिका प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- इस अवधि में संस्थान का 'लवणता' समाचार पत्र जून से दिसम्बर 2017 व जनवरी से जून, 2018 हिन्दी में प्रकाशित किया गया।
- इस अवधि में संस्थान की पत्रिका 'कृषि किरण' प्रकाशित की गई।
- इस अवधि में संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 द्विभाषी प्रकाशित किया गया।

भा.कृ.अ.प.–केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा उसके प्रभावों में गति लाने हेतु संस्थान में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2018 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। जिसका उद्‌घाटन संस्थान के निदेशक, डा. जीवन मित्र द्वारा किया गया तथा मुख्य वक्ता के रूप में डा. चन्द्र गोपाल शर्मा, पूर्व उप महा प्रबंधक (राजभाषा), पूर्वी रेलवे, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। उद्‌घाटन

समारोह में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र ने समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए राजभाषा हिन्दी के सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया तथा साथ ही इस कार्यक्रम को सफल बनाने में उनकी सहभागिता दर्ज कराने का आग्रह किया। डा. सुब्रत सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा ने अपने उद्घाटन अभिभाषण में संस्थान के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया। साथ ही रेशा किरण, भाग–2 का प्रकाशन शीघ्र करने की अपील की। मुख्य अतिथि ने राजभाषा के सुगम प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने राजभाषा को अधिक कारगर ढंग से संस्थान में लागू करने के लिए सुझाव दिया।

इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए राजभाषा प्रभारी, डा. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय ने हिन्दी पखवाड़े के अतंर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं (तत्कालिक भाषण (एक्सटेम्पोर) (हिन्दीत्तर तथा हिन्दी भाषियों के लिए), हिंदी टंकण (सभी वर्गों के लिए), हिन्दी निबंध लेखन (हिन्दीत्तर भाषियों के लिए), हिन्दी अनुवाद (हिन्दीत्तर तथा हिन्दी भाषियों के लिए), वाद–विवाद, (हिन्दीत्तर भाषियों के लिए), हिन्दी टिप्पण, मसौदा/प्रारूप लेखन (हिन्दीत्तर भाषियों के लिए) आदि प्रतियोगिताओं की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन प्रतियोगिताओं में अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएं। हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान के हिन्दीत्तर भाषी तथा हिन्दी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए तत्कालिक भाषण (एक्सटेम्पोर), हिंदी टंकण, हिन्दी निबंध, हिन्दी अनुवाद, वाद–विवाद तथा हिन्दी टिप्पण, मसौदा/प्रारूप लेखन आदि विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 28 सितम्बर, 2018 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्रीमती सुधा मिश्र पूर्व राजभाषा अधिकारी, दक्षिण पूर्वी रेलवे, गार्डनरीच कोलकाता, मुख्य वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित थीं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन, डा. एस. मित्र, प्रभारी, ए.आई.एन.पी., डा. सुनीति कुमार झा, प्रभारी, कृषि प्रसार, श्री पी.के. जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी मंचासीन थे। अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक महोदय ने कहा कि भारत विविध संस्कृति वाला देश है। जिसमें अनेक भाषाएं बोली जाती हैं मगर राजभाषा हिन्दी का अपना अलग ही स्थान है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में इस संस्थान ने अच्छी प्रगति की है। उन्होंने यह भी कहा कि हिन्दी राजभाषा होने के साथ ही अत्यंत सरलतम भाषा है। इसके प्रसार एवं व्यवहार में तीव्रतम विकास अति आवश्येक है। इसके प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने पर बल दिया तथा संतोष व्यक्त किया कि प्रशासनिक खण्ड से हिन्दी में काफी हद तक हिन्दी टिप्पण/मसौदा लेखन/पत्र लेखन का कार्य किया जा रहा जो सराहनीय है। श्रीमती सुधा मिश्र पूर्व राजभाषा अधिकारी, दक्षिण पूर्वी रेलवे, गार्डनरीच कोलकाता ने अपने व्याख्यान में भारत सरकार की राजभाषा नीति को ध्यान में रखते हुए सरकारी कार्यालयों में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने की अपील की।

डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन प्रभाग ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारे संस्थान में हिन्दी में काफी कार्य हो रहा है तथा इसे आगे भी जारी रखना चाहिए। डा. एस. मित्रा, प्रभारी, ए.आई.एन.पी ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी में काम करना आसान है हमें हर क्षेत्र में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए। श्री पी.के. जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने कहा कि राजभाषा हिंदी ही एक मात्र ऐसी भाषा है जो भारत के एक राज्य को दूसरे राज्यों से जोड़ती है। उन्होंने कहा कि संविधान में हिंदी को पूर्ण रूप से राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, हमें निष्ठा भाव से इसे मजबूती प्रदान करनी चाहिए। श्री गौरांग घोष, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने कहा कि भारत की सभी भाषाएं एक दूसरे की परिपूरक हैं अतएव हम भारत के किसी भी कोने में जाएं तो हमें सभी भाषाओं में सामंजस्य नजर आता है। उन्होंने लेखा परीक्षा एवं लेखा अनुभाग में हो रहे हिन्दी के प्रयोग पर संतोष व्यक्त करते हुए इसे और व्यापक बनाने का अनुरोध किया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के उपलक्ष्य में स्वागत देते हुए प्रभारी, हिन्दी कक्ष, डॉ. एस.के. पाण्डेय

समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल विजेता प्रतियोगियों को (क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय) डा. जीबन मित्र, निदेशक महोदय तथा अन्य उपस्थित गणमान्य पदाधिकारियों के कर कमलों द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। निदेशक महोदय ने संस्थान में हिन्दी पखवाड़ा तथा इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन पर अपनी खुशी जाहिर की तथा आशा व्यक्त की कि इस संस्थान में हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर प्रगति होगी। कार्यक्रम का समापन डा. सुनीति कुमार झा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि प्रसार अनुभाग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 14 मार्च, 2018 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री फतेह बहादुर सिंह, प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, निजाम पैलेस, कोलकाता को मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया था। अतिथि वक्ता ने पत्राचार के विभिन्न रूपों जैसे कार्यालय टिप्पणी, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश एवं पारिभाषिक शब्दावली इत्यादि पर चर्चा की जिससे यह कार्यशाला बहुत ही उपयोगी रही। इस कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक, डा. जीबन मित्र की।

संस्थान में दिनांक 29 जून, 2018 को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में बड़ी संख्या में सभी वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों (वैज्ञानिक, प्रशासनिक एवं तकनीकी) ने भाग लिया। इस अवसर पर डा. चन्द्र गोपाल शर्मा, पूर्व उप–महाप्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया। अतिथि वक्ता ने निदेशक महोदय तथा सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए राजभाषा अधिनियम–नियम, राजभाषा नीति तथा व्यावहारिक व्याकरणिक समस्याओं व उनका समाधान तथा राजभाषा नीति के प्रमुख बिन्दुओं पर विस्तृत जानकारी एवं चर्चा की।

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 29 दिसम्बर, 2018 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों के दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के सुगमतापूर्वक अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रशिक्षित करना था। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. जीबन मित्र ने की। इस अवसर पर उन्होंने सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने की अपील की। श्री पी.के. जैन, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसके अधिकतम प्रयोग पर बल दिया। साथ ही दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को आवश्यक बताते हुए इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला तथा कार्यशालाओं का आयोजन प्रत्येक तिमाही की नियत तिथि पर आयोजित करने पर भी बल दिया।

कार्यशाला में श्री अदालत प्रसाद, हिन्दी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार निजाम पैलेस, कोलकाता को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने उक्त कार्यशाला का आरम्भ पत्राचार के विभिन्न रूपों जैसे कार्यालय टिप्पणी, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश आदि तथा राजभाषा नीति के प्रमुख बिन्दुओं पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी तथा अभ्यास भी कराया।

हिन्दी कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रभारी, हिन्दी कार्यशाला में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हुए डा. चन्द्र हिन्दी कक्ष, डा. एस.के. पाण्डेय। गोपाल शर्मा, पूर्व उप महा प्रबंधक (राजभाषा), पूर्व रेलवे, कोलकाता

हिन्दी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 26.09.2018 को कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी

के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु हिन्दी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी थी। इस प्रतियोगिता का आयोजन हिन्दी कक्ष की ओर से किया गया था। इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

भा.कृ.अ.प.–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, कौशल्यागंग, भुवनेश्वर

हिंदी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2018 के दौरान हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित किया। यह समारोह 14 सितंबर, 2018 को डॉ बिंदु आर. पिल्लई, निदेशक (कार्यवाहक) के औपचारिक उद्घाटन के द्वारा शुरू किया गया। 15 दिवसीय समारोह में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं/राजभाषा कार्यशाला/कवि गोष्ठी/हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के उत्सव के एक भाग के रूप में संस्थान द्वारा हिंदी में प्रकाशित पुस्तकों की चार दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी संस्थान के हीरालाल चौधरी पुस्तकालय में 19–23 सितंबर, 2018 के दौरान आयोजित की गई। संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, पुस्तिकाएं, पत्रक, बुलेटिन, प्रशिक्षण पुस्तिकाएं इत्यादि की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों, विद्वानों, शोधकर्ताओं को राजभाषा एवं इसके महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करना था। पखवाड़े के दौरान संस्थान में दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए कर्मचारियों में प्रोत्साहन एवं जागरूकता लाने के लिए कई प्रतिस्पर्धी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पखवाड़ा आयोजन के दौरान वाद–विवाद, निबंध लेखन, श्रुतलेख, टिप्पणी, मसौदा लेखन, आवेदन लेखन, लघु कथाएं और पोस्टर इत्यादि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक कर्मचारियों एवं शोधकर्ता ने भाग लिया।

कवि गोष्ठी

राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संस्थान ने दिनांक 28 सितंबर, 2018 को हिंदी दिवस के समापन समारोह के अवसर पर सम्मेलन कक्ष में राजभाषा प्रकोष्ठ के सौजन्य से कवि गोष्ठी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुख्य आमंत्रित कवियों में श्री राम किशोर शर्मा, केंद्र प्रमुख, दिव्यांगों हेतु नेशनल करियर सर्विस सेंटर, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार, गुडमुंडा, पोस्ट ऑफिस–खंडगिरि 751030, ओडिशा एवं श्री आर.एन. चांद, हिंदी अधिकारी, (हिंदी सेल), प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) कार्यालय, भुवनेश्वर उपस्थित थे। संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री इंद्र भुषण कुमार ने इस गोष्ठी में स्वागत भाषण देते हुए राजभाषा के प्रति लोगों में जागरूकता प्रदान करने के लिए इस तरह की कवि गोष्ठी के महत्व पर बल दिया।

कार्यशाला का आयोजन

संस्थान ने 27 सितंबर, 2018 को राजभाषा हिंदी का कार्यालयों में प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों, नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु "सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग" नामक विषय पर राजभाषा तिमाही कार्यशाला का आयोजन सभागार में किया गया। इस संस्थान में बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का शुभारंभ द्वीप प्रज्ज्वलन एवं आईसीएआर गीत से किया गया। मुख्य अतिथि वक्ता के रुप में श्री रबिन्द्रनाथ चांद, हिंदी अधिकारी, मुख्य महालेखाकार कार्यालय, भुवनेश्वर को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर दिया। उन्होंने विस्तृत रूप से इस क्षेत्र के लोगों को हिंदी में कार्य करने में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों एवं समाधान पर चर्चा की।

संस्थान के निदेशक डॉ बिंदु आर पिल्लई, ने संस्थान में हिंदी के प्रयोग पर बढ़ावा देने के लिए संस्थान के सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों से अनुरोध किया की जहां तक

हो सके सरकारी कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें। और सीफा के प्रौद्योगिकी को हिंदी में प्रकाशन पर बल दिया ताकि हमारी तकनीकी उपलब्धियां जनमानस तक पहुँच सके। श्री इन्द्रभुषण कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, भाकृअनुप–सीफा नें राजभाषा संबंधी अधिनियमों एवं आदेशों के अनुपालन पर प्रकाश डाला।

कौशल विकास में वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों की भूमिका पर संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार हिंदी के प्रति चेतना बढ़ाने हेतु भुवनेश्वर स्थित केंद्रीय सरकारी संस्थान (i) राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर (ii) भौतिकी संस्थान, भुवनेश्वर (iii) सीएसआईआर–खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान, भुवनेश्वर (iv) भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर (v) अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर (vi) भाकृअनुप–केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा संयुक्त रुप से कौशल विकास में वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों की भूमिका विषय पर दिनांक 20 मार्च, 2018 को संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन नाइजर, जटनी के सभागार में आयोजित किया गया। संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य भुवनेश्वर एवं इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान से जुड़े विभिन्न केंद्रीय संस्थानों को एकीकृत रूप से राजभाषा के माध्यम के रूप में प्रयुक्त करते हुए उपर्युक्त विषय पर विस्तार से चर्चा करना था। भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर की तरफ से श्री गणेश कुमार, प्रशासनिक अधिकारी इस कार्यक्रम के सह समन्वयक थे। सभी संस्थानों के वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, सहित 200 से अधिक अधिकारियों ने संयुक्त राजभाषा संगोष्ठी में भाग लिया। संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारी सहित कुल 15 कर्मचारियों ने राजभाषा संगोष्ठी में हिस्सा लिया।

सभी संस्थानों के कुलसचिवों/निदेशकों द्वारा द्वीप प्रज्वलन कर इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष एवं नाइज़र के कुलसचिव द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। सभी संस्थानों के निदेशकों ने इस अवसर पर अपनी बाते कही। डॉ जे.के. सुंदराय, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर ने संगोष्ठी में कहा कि भुनवेश्वर स्थित सभी संस्थानों को आपस में मिलकर आम समस्याओं को दूर करने एवं लोगों को कौशल विकास के प्रति जागरुक करने का प्रयत्न करना चाहिए जिससे कि लोग अपना कौशल विकास कर आत्मनिर्भर बन सकें।

संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक संगोष्ठी में दो तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया था। प्रथम सत्र में विभिन्न संस्थानों से कुल 06 आमंत्रित वक्ताओं एवं द्वितीय सत्र में 06 आमंत्रित वक्ताओं ने अपनी प्रस्तुति दी। संस्थान से प्रथम तकनीकी सत्र में श्री इन्द्र भूषण कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ धनंजय कुमार वर्मा, प्रभारी राजभाषा अधिकारी आमंत्रित वक्ताओं में थे। भाकृअनुप–सीफा से प्रथम तकनीकी सत्र से आमंत्रित वक्ता श्री इन्द्र भूषण कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने "कौशल विकास एवं राजभाषा" पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होनें कौशल विकास को प्रसारित करने के लिए राजभाषा हिंदी के आसान एवं प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल दिया जिससे कि संस्थान की विकसित प्रौद्योगिकियों को राजभाषा के माध्यम से जन मानस तक पहुँचाया जा सके। द्वितीय तकनीकी सत्र में भाकृअनुप–सीफा से डॉ धनंजय कुमार वर्मा, प्रभारी राजभाषा अधिकारी ने आमंत्रित वक्ता के रुप में "जलकृषकों के कौशल विकास" में भाकृअनुप–केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर की भूमिका पर अपनी प्रस्तुति दी। उन्होनें संस्थान द्वारा विभिन्न परियोजना एवं प्रदर्शनी के माध्यम से सीफा द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से जलकृषकों में रोजगार के अवसर प्रदान करने में संस्थान की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। अंत में नाइजर के हिंदी प्रकोष्ठ के सचिव निदेशक श्री दिनेश बहादुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिंदी प्रकाशन

- संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 का हिंदी में प्रकाशन
- संस्थान का त्रैमासिक सीफा समाचार 2018 (4 अंक) का हिंदी में प्रकाशन
- प्रशिक्षण पुस्तिका मीठा पानी मोती कृषि में उद्यमिता विकास का प्रकाशन

भा.कृ.अ.प.–भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद

हिंदी चेतना मास समारोह

संस्थान में 14 सितंबर से 12 अक्तूबर, 2018 के दौरान हिंदी चेतना मास समारोह का आयोजन किया गया। उक्त चेतना मास के अंतर्गत हिंदी में कुल 13 विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने भाग लिया।

संस्थान में 27 अक्तूबर, 2018 को हिंदी चेतना मास के समापन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के गान से हुआ। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक, डॉ. एस आर वोलेटी ने मुख्य

अतिथि के रूप में पधारे डॉ. वी आर भागवत, इमिरेटस वैज्ञानिक, भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। डॉ. महेश कुमार, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान एवं प्रभारी–हिंदी कक्ष ने संस्थान में संपन्न राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्यों पर वार्षिक प्रतिवेदन तथा हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा उक्त समारोह को सफल बनाने के लिए संस्थान में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. भागवत ने संस्थान में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण–पत्र प्रदान किए तथा डॉ. वोलेटी ने प्रतियोगिता के अन्य सहभागियों को प्रमाण–पत्र तथा मुख्य अतिथि व प्रतियोगिताओं के आयोजकों एवं निर्णायकों को स्मृति चिह्न प्रदान किए।

डॉ. भागवत ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी स्वयं ही संपर्क भाषा के रूप में आगे बढ़ रही है और यह संस्थान केंद्रीय कृषि संस्थान होने के नाते राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। आज पूरे विश्व में हिंदी का बोलबाला है और हमें भी उसके महत्व को स्वीकार करते हुए, उसे उचित स्थान देना होगा। डॉ. वोलेटी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इस बार हमारे संस्थान के द्वारा हिंदी चेतना मास समारोह का भव्य आयोजन किया गया है, अतः आप समारोह की भांति ही अपने दैनिक कार्यों में भी हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें ताकि विभिन्न निरीक्षणों का हम आसानी से सामना कर सकें। कृषि संस्थान होने के नाते हिंदी में कार्य करने पर हमारी पहुंच अधिकांश लोगों तक होगी, जो कि हमारा पहला प्रयोजन है। उक्त समारोह को रोचक बनाने के प्रयोजन से बीच–बीच में शब्बीर पटेल, बी सतीश तथा चिरुटकर के द्वारा देशभक्ति परक गीतों का भी गायन किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

संस्थान में 30 जून, 2018 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे। डॉ. एस आर वोलेटी, कार्यकारी निदेशक ने कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की ।

श्री तिवारी ने राजभाषा नीति को विश्लेषित करते हुए राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संस्थान की अनिवार्यता एवं अपेक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। श्री तिवारी एवं डॉ महेश कुमार ने सहभागियों की शंकाओं का समाधान किया। डॉ. सुब्रह्मण्यम, प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि इस संस्थान के कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में सक्षम हैं, परंतु उन्हें थोड़ी–सी झिझक महसूस होती है तथा इस तरह की कार्यशालाओं के आयोजन से उनकी झिझक को दूर करके राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचा जा सकता है। उक्त कार्यशाला में प्रशासन एवं वित्त अनुभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों के अलावा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों को मिलाकर कुल 32 सहभागियों ने भाग लिया।

वर्ष 2018 के दौरान प्रकाशित हिंदी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 का सारांश

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

केंद्र में इस वर्ष 14–22 सितंबर, 2018 के दौरान हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। केंद्र के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन 22 सितंबर को हुआ जिसमें श्री संजय भारद्वाज जो कि पुणे में स्थित हिन्दी आंदोलन परिवार के मुख्य प्रणेता हैं को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। इस समारोह में केंद्र की हिन्दी पत्रिका "अंगूरी" के तृतीय अंक का विमोचन भी किया गया। केंद्र के प्रशासनिक अधिकारी बी एल कोक्कुला ने मुख्य अतिथि को इस केंद्र द्वारा हिन्दी में किए जा रहे विभिन्न कार्यकलापों से परिचित कराया। वैज्ञानिक डॉ धनंजय गवाण्डे ने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी मुख्य अतिथि को दी।

समापन समारोह में हिंदी सप्ताह प्रतियोगिताओं के विजेताओ को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस केंद्र मे किए जा रहे हिंदी के कार्य की मुख्य अतिथि ने सराहना की एवं हिंदी मे किए जा रहे कार्य को और बढ़ाने का सभी से अनुरोध किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि केंद्र उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा और राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों में हमेशा सहयोग करता रहेगा।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

दिनांक 23 मार्च 2018 को भारतीय संविधान मे हिंदी का स्थान विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें संस्था्न के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 21 जून 2018 को अंगूर के बगीचा में खरड़ छाटनी विषय पर आयोजित की गई। दिनांक 21 सितंबर 2018 को राजभाषा का महत्व और व्यक्तित्व विकास विषय पर आयोजित की गई। दिनांक 22 दिसंबर 2018 को स्वच्छता का महत्व और विकास विषय पर आयोजित की गई।

हिन्दी प्रकाशन

- वार्षिक प्रतिवेदन, 2017–18
- हिन्दी पत्रिका अंगूरी (तृतीय अंक), 2018

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान, सिक्किम

हिंदी चेतना मास का आयोजन

संस्थान में दिनांक 14 सितंबर, 2018 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक व्याख्यान माला का आयोजन किया जिसमें राजभाषा से संबंधित विविध विषयों पर जैसे राजभाषा हिंदी में वैज्ञानिक लेखों का प्रस्तुतिकरण, राजभाषा हिंदी का कृषि विज्ञान के प्रसार में योगदान, संचार माध्यमों का हिंदी के विकास मेँ योगदान, अहिंदीभाषी क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी की प्रगति, हिंदी मेँ लोकप्रिय लेखों की तैयारी, राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति, प्रशासनिक पत्राचार में राजभाषा हिंदी के प्रयोग मेँ सकारात्मक वृद्धि व्याख्यान दिए गए।

इसी क्रम में दिनांक 15 सितंबर, 2018 को आशुभाषण भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि अभियांत्रिकी एवं कटाईं उपरांत प्रौद्योगिकी कॉलेज के डीन डॉ. पी.पी. डबराल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इसी दिन संस्थान में स्वच्छता पखवाड़े की शुरूआत भी की गई इसमें भी अधिष्ठाता महोदय ने भाग लिया एवं कर्मचारियों का उत्साहवर्धन किया। पूरे सितंबर माह में विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के कर्मचारियों ने पूर्ण रुचि के साथ भाग लिया। इस वर्ष संस्थान के बच्चों के लिए भी पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसे स्वच्छता पखवाड़े से संबधित विषयों से जोड़ा गया। संयोग से हिंदी चेतना मास के दौरान ही दिनांक 21 सितंबर, 2018 को सिक्किम के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी ने संस्थान का दौरा किया। उन्होंने भी संस्थान में राजभाषा हिंदी में चल रही गतिविधियों की सराहना की। उनके द्वारा पूरे आइ.सी.ए.आर परिसर एवं अनुसंधान परिक्षेत्र का भी भ्रमण किया गया।

दिनांक 29 सितंबर, 2018 को हिंदी चेतना मास का समापन सत्र का आयोजन किया गया। इस सुअवसर पर पूर्वी सिक्किम (East Sikkim) के जिलाधीश श्री कपिल मीणा, आई.ए.एस. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर सदस्य सचिव ने अपने स्वागत संबोधन में हिंदी चेतना मास के दौरान किए गए आयोजनों का विवरण प्रस्तुत किया। रा.भा.का.स. के उपाध्यक्ष डॉ. राघवेंद्र सिंह ने अपने उद्बोधन में संस्थान के हिंदी अनुभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों का विस्तृत विवरण देते हुए बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा कृषकों हेतु आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नेपाली एवं हिंदी के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है एवं प्रसार सामग्री को भी द्विभाषी रूप से तैयार किया जा रहा है तथा भविष्य में इन्हें हिंदी में ही तैयार किए जाने का निर्णय लिया। सयुंक्त निदेशक एवं राजभाषा कार्यन्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. रविकांत अवस्थी ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के अलावा संस्थान में चल रही कृषि अनुसंधान एवं प्रसार संबंधित गतिविधियों से मुख्य अतिथि महोदय को अवगत कराया। मुख्य अतिथि श्री कपिल मीणा द्वारा राष्ट्रीय जैविक कृषि अनुसंधान संस्थान में हिंदी के विकास, कार्यान्वयन एवं प्रसार एवं प्रचार पर चल रहे प्रयासों की प्रशंसा की। अपने संबोधन के क्रम में उन्होंने इस बात को भी रेखांकित किया कि उनकी पृष्ठभूमि भी कृषि विज्ञान से जुड़ी है इसलिए इस संस्थान के कार्यकलापों मे उनकी विशेष रुचि एवं जिज्ञासा है। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान को कुछ सुझाव भी दिए और अपनी ओर से शुभकामनायें भी दी। समापन सत्र के अवसर पर मुख्य अतिथि एवं संयुक्त निदेशक महोदय के कर कमलों से विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। सदस्य सचिव श्री सुरेन्द्र मोहन कंडवाल को उनकी राजभाषा हिंदी में विशिष्ट उपलब्धियों एवं योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्र द्वारा सम्मानित किया गया। हिंदी चेतना मास समापन सत्र के अवसर पर "सिक्किम में मशरूम की जैविक खेती" शीर्षक युक्त एक पुस्तिका का विमोचन मुख्य अतिथि श्री कपिल मीणा, जिलाधीश (पूर्वी सिक्किम) के कर कमलों से हुआ। यह पुस्तिका इस संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. श्वेता सिंह एवं उनके साथी वैज्ञानिकों द्वारा तैयार की गई।

कार्यशालाओं का आयोजन

संस्थान द्वारा वर्षभर में 4–5 कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2018 के दौरान निम्न लिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया:–

दिनांक 15 मार्च, 2018 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के कर्मचारियों एवं आर.ए./एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि हेतु राजभाषा हिन्दी का पत्राचार, कार्यालय टिप्पणी, परिपत्र, ज्ञापन, आदेश आदि मे प्रयोग, पारिभाषिक शब्दावली एवं व्यावहारिक व्याकरणीय समस्याओं एवं उनका समाधान राजभाषा नीति के प्रमुख विषयों पर चर्चा एवं शंका समाधान विषयों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया:–

दिनांक 2 जून, 2018 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के कर्मचारियों एवं आर.ए./एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि हेतु राजभाषा हिंदी के बढ़ते कदम, भारतीय भाषाओं की विविधता में एक सूत्रता, दैनिक कार्यालयी पत्राचार में हिंदी का त्रुटिरहित प्रयोग, राजभाषा हिंदी का कृषि विज्ञान संबंधित प्रसार सामग्री के प्रकाशन में प्रयोग विषयों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया:–

दिनांक 1 अगस्त, 2018 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के कर्मचारियों एवं आर.ए./एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि हेतु राजभाषा हिंदी कार्यशालाओं का महत्व एवं उपयोगिता विषय पर विविध प्रकार के दैनिक रूप में प्रयोग होने वाले पत्रों (शासकीय/अशासकीय) एवं परिपत्रों का प्रारूप एवं लेखन विधि एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 7 दिसंबर 2018 को संस्थान एवं कृषि विज्ञान केंद्र के कर्मचारियों एवं आर.ए./एस.आर.एफ/जे.आर.एफ. आदि हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों का सरल अनुबाद एवं वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेखों में प्रयोग एवं केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के माध्यम से हिंदीत्तर क्षेत्रों के कर्मचारियों को लाभ एवं दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग में सुगमता विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

सिक्किम प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री गंगा प्रसाद जी 'हिन्दी पखवाड़ा' के दौरान कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

भा.कृ.अ.प.–खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

निदेशालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 14.09.2018 को हिन्दी दिवस एवं दिनांक 14.09.2018 से दिनांक 29.09.2018 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया

गया। जिसमें कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं निदेशक डॉ. पी.के. सिंह, तथा डॉ. सुशील कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, रा.का.समिति श्री जी.आर. डोंगरे द्वारा सरस्वती पूजन एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अपना सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में करने का संकल्प भी दिलाया गया।

तत्पश्चात् निदेशक महोदय ने सभागार में उपस्थित सभी को हिन्दी दिवस की शुभकामनायें दी एवं अपने उद्बोधन में हिन्दी भाषा की गुणवत्ता को बताते हुए कहा कि हिन्दी भाषा ऊंच–नीच को नहीं मानती है, इसलिए न तो उसमें कोई कैपिटल अक्षर होता है और न ही कोई स्माल अक्षर होता है, साथ ही यह आधे अक्षर को सहारा देकर पूरा शब्द तैयार करती है। सबसे ज्यादा हिंदी का प्रचार–प्रसार दक्षिण के विद्धवानों द्वारा किया गया है। विश्व की बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी का स्थान तीसरा है, और वह दिन दूर नही जब हिन्दी को दूसरा स्थान प्राप्त होगा, हिंदी हमारी राजभाषा है और हमें हमेशा हमारी भाषा का जितना संभव हो प्रयोग करते समय हमें गर्व महसूस करना चाहिए। इसी क्रम में निदेशक महोदय द्वारा माननीय श्री राधामोहन सिंह, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश तथा भा.कृ.अनु.प. के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्रा द्वारा प्रेषित अपील का वाचन किया।

पखवाड़े के दौरान निदेशालय में तात्कालिक निबंध लेखन प्रतियोगिता, शुद्ध लेखन प्रतियोगिता, पत्र लेखन प्रतियोगिता, आलेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, क्विज कांटेस्ट प्रतियोगिता एवं नकद पुरस्कार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिन्दी पखवाड़े का समापन/पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29.09.2018 को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. सिंह ने की। जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. राजा राम सोनी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर एवं विशिष्ट अतिथि श्री आनंद विश्वकर्मा, हास्य कवि थे। कार्यक्रम के अन्त में प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए।

प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्षभर 20,000 से अधिक हिन्दी शब्द लिखने वाले, 9 अधिकारियों/कर्मचारियों को नगद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त वर्षभर हिन्दी राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले निदेशालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्षभर हिन्दी में सर्वाधिक काम करने वाले अनुभागों को चलित से सम्मानित किया गया।

कार्यशालाओं का आयोजन

दिनांक 27 जनवरी, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. लवकुश त्रिपाठी द्वारा ''मच्छर जनित रोग, उनसे बचाव और भविष्य में बदलते पर्यावरण के साथ मच्छर जनित रोगों की स्थिति'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 27 जनवरी, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. शोभा सोंधिया, वरि. वैज्ञानिक द्वारा ''पुनर्जन्म एवं कार्मिक बंधनः एक वैज्ञानिक तथ्य'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 31 मई, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीमती विनीता भट्ट एवं श्री अजय जैन, द्वारा ''बाजार की चाल मत देखिए निवेश की चाल चलते रहिए'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 30 जुलाई, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. सुशील कुमार, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा ''दीमक का अद्भुत संसार उनके फायदे और नुकसान एवं प्रबंधन के उपाय'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 19 सितम्बर, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री बसंत मिश्रा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा ''वन्य प्राणी संरक्षण एवं जनजागरण'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

दिनांक 30 नवम्बर, 2018 को समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री सोपान शिवाजी सोलंकी, शोध छात्र द्वारा ''मानव चिकित्सा में कीटकों की भूमिका'' विषय पर वक्तव्य दिया गया।

हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- तृण संदेश – राजभाषा पत्रिका
- खरपतवारों के कारण उपज और आर्थिक नुकसान – बुलेटिन
- पार्थेनियम अवेयरनेस वीक – पोस्टर
- पार्थेनियम अवेयरनेस वीक – लीफलेट्स
- खरपतवार समाचार – फोल्डर
- वार्षिक प्रतिवेदन

भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झाँसी

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को डॉ. अनिल कुमार, निदेशक (कार्यवाहक) की अध्यक्षता में हिन्दी सप्ताह (14–20 सितम्बर, 2018) का शुभारम्भ आई.सी.ए.आर. गीत से किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ.सी.के. बाजपेयी प्रभारी अधिकारी, राजभाषा ने हिन्दी सप्ताह आयोजन की रूप–रेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. आर.पी. द्विवेदी प्रधान वैज्ञानिक द्वारा माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार का संदेश एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, के महानिदेशक की अपील पढ़कर सभी को उनके बहुमूल्य विचारों से अवगत कराया।

डॉ. अनिल कुमार, निदेशक (कार्यवाहक) ने सभी वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से अपील की कि हिन्दी में अधिक से अधिक पुस्तकें, तकनीकी बुलेटिनों तथा प्रसार बुलेटिनों का प्रकाशन किया जाए जिससे किसान संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधानों को अपनाकर उसका भरपूर लाभ उठा सकें। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि भारत सरकार के गजट में इस संस्थान का नाम ''क'' क्षेत्र में है, इसलिए हम लोगों को अपना प्रशासनिक कार्य शत–प्रतिशत हिन्दी में करना है। उन्होनें समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों से अपील की कि हिन्दी में पत्राचार को बढ़ाने में अपना सहयोग प्रदान करें

जिससे राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

दिनांक 14.09.2018 को सप्ताह के उद्‌घाटन के साथ ही दूसरे सत्र में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसका शीर्षक ''भारतवर्ष में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति'' कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी डॉ. चन्द्रेश कुमार बाजपेयी थे।

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 23 मार्च, 2018 को आयोजित कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक (वानिकी), डॉ. नरेश कमार थे। उन्होंने अपना व्याख्यान ''बॉस प्रजातियों में विविधता एवं उनकी उपयोगिता'' पर दिया। उन्हांने कार्यशाला के दौरान देश मे प्रचलित बॉस आधारित कृषिवानिकी पद्धतियों के बारे में अवगत कराया। चर्चा के दैरान वक्ता द्वारा बॉस के विभिन्न उपयोगों के बारे में भी अवगत कराया गया। वक्ता द्वारा हिन्दी शोध पत्र लेखन में आने वाली सामान्य समस्याओं पर भी चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि परिषद के हिन्दी विभाग द्वारा कृषि से सम्बन्धित तकनीकी शब्दों की शब्दावली तैयार की गई है जो कि परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध है। उन्होंने यह भी बताया कि हिन्दी भाषा में अग्रेजी से इतर एक शब्द के अनेक समानार्थी शब्द मौजूद है जिन्हे शोध पत्र लेखन के दैरान सरल सामान्य भाषा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

दिनांक 29 जून, 2018 कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा. आर.एच. रिजवी थे इनका व्याख्यान ''अतंरराष्ट्रीय कृषिवानिकी सम्मेलनः एक अनुभव''–विषय पर आधारित था। यह सम्मेलन 27–29 अप्रैल, 2018 की अवधि में काठमांडू, नेपाल में सम्पन्न हुआ था। उन्होनें अपने व्याख्यान में नेपाल में प्रचलित कृषिवानिकी पद्धतियों के बारे मे अपने अनुभवों से अवगत कराया। चर्चा के दौरान शोध–पत्र एवं प्रसार बुलेटिन लेखन में प्रचलित श्ब्दावली, जो कि जन–सामान्य की समझ के लिए सरल हो, ऐसे सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया गया। कार्यशाला में संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों द्वारा संस्थान के संदर्भ में कृषिवानिकी के विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गयी और यह चर्चा पूरी तरह से हिंदी में संपन्न हुई।

जुलाई–सितम्बर 2018, में समाप्त तिमाही अवधि में केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी में राजभाषा हिंदी की तिमाही कार्यशाला दिनांक 14.9.2018 को डा. अनिल कुमार, कार्यवाहक निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी डा. चन्द्रेश कुमार बाजपेयी थे। व्याख्यान ''भारतवर्ष में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति'' विषय पर आधारित था। चर्चा के

दौरान शोध–पत्र एवं प्रसार बुलेटिन लेखन में प्रचलित शब्दावली, जो कि जन–सामान्य की समझ के लिए सरल हो, ऐसे सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया गया। कार्यशाला में संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों द्वारा संस्थान के संदर्भ में कृषिवानिकी की विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गयी और यह चर्चा पूरी तरह से हिंदी में संपन्न हुई।

अक्टूबर–दिसम्बर 2018, में समाप्त तिमाही अवधि में केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी में राजभाषा हिंदी की तिमाही कार्यशाला दिनांक 03.10.2018 को डा. अनिल कुमार, कार्यवाहक निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता संस्थान के वैज्ञानिक डा. धीरज कुमार, डा. विरेश कुमार तथा डा. आशाराम थे। व्याख्यान "मेटा एनालाईसिसः एक परिचय" (इण्डोनेशिया में आयोजित वैज्ञानिक प्रशिक्षण के संदर्भ में) विषय पर आधारित था। चर्चा के दौरान शोध–पत्र एवं प्रसार बुलेटिन लेखन में प्रचलित शब्दावली, जो कि जन–सामान्य की समझ के लिए सरल हो, ऐसे सरल शब्दों के प्रयोग पर बल दिया गया। कार्यशाला में संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों द्वारा संस्थान के संदर्भ में कृषिवानिकी की विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गयी और यह चर्चा पूरी तरह से हिंदी में संपन्न हुई।

भा.कृ.अ.प.–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, अल्मोड़ा

हिन्दी चेतना मास का आयोजन

संस्थान में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस तथा 14 सितम्बर से 13 अक्टूबर, 2018 तक 'हिन्दी चेतना मास' का आयोजन किया गया। इससे पूर्व संस्थान के निदेशक की ओर से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने सम्बन्धी अपील जारी की गयी जिसमें सभी कार्मिकों से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने का अनुरोध किया गया। इसके साथ ही महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद महोदय द्वारा भेजे गए शुभकामना संदेश को समस्त कार्मिकों के मध्य परिचालित किया गया। 14 सितम्बर को संस्थान में 'हिन्दी दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हिंदी दिवस संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में वाई.एस. परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्व विद्यालय सोलन के पूर्व कुलपति एवं संस्थान शोध सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. के.आर. धीमन मुख्य अतिथि थे। संगोष्ठी में अनेक वक्ताओं ने हिन्दी के महत्व, इसकी प्रगति एवं इसकी उपयोगिता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। मुख्य अतिथि डा. के. आर. धीमन ने स्थानीय भाषाओं एवं हिन्दी के महत्व पर बल देते हुए इनका हमारे दैनिक जीवन एवं दैनिक कार्यों में महत्ता की जानकारी दी। संगोष्ठी में शोध सलाहकार समिति के अन्य सदस्यों ने भी राजभाषा के प्रयोग, प्रगति आदि पर अपने विचार व्यक्त किए। चेतना मास कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिनांक 16.09.2018 को भारत रत्न स्व. श्री अटल बिहारी बाजपेयी की प्रथम मासिक पुण्य तिथि के अवसर पर हिन्दी संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी/कार्यशाला में कुमाऊँ विश्व विद्यालय सोबन सिंह जीना परिसर अल्मोड़ा की सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा. दिवा भट्ट, दैनिक जागरण के पूर्व संवाददाता एवं कवि श्री नवीन चन्द्र बिष्ट, हिन्दी की अनेक रचनाओं के रचयिता श्री त्रिभुवन गिरी एवं एडम्स गर्ल्सव इण्टर कालेज की हिन्दी की प्रवक्ता डा. दीपा गुप्ता उपस्थित थे। संगोष्ठी में उपरोक्त सभी विद्वतजनों ने हिन्दी शब्दावली, हिन्दी काव्य ग्रंथ आदि पर अपने विचार प्रकट किए। इस अवसर पर कविता वाचन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 16 कार्मिकों ने प्रतिभागिता की। चेतना मास के दौरान वर्ग–1, वर्ग–2 एवं वर्ग–3 के कार्मिकों के लिए हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 24.09.2018 को किया गया। इसमें प्रत्येक वर्ग के कार्मिकों ने सहभागिता की। हिन्दी चेतना मास के दौरान प्रशासनिक वर्ग के कार्मिकों के लिए नोटिंग, ड्राफ्टिंग एवं हिन्दी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

इन प्रतियोगिताओं में प्रशासनिक संवर्ग के कार्मिकों ने प्रतिभागिता की। चेतना मास के अन्तर्गत 12.10.2018 को संस्थान के प्रयोगात्मक प्रक्षेत्र, हवालबाग के सभागार में एक राजभाषा संगोष्ठी/ कार्यशाला का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, वैज्ञानिकों आदि ने व्याख्यान दिए तथा अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी के दौरान वर्ग–1, वर्ग–2 एवं वर्ग–3 के लिए तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में सहायक वर्ग अस्थाई स्तर से लेकर वैज्ञानिकों ने प्रतिभागिता की। संगोष्ठी में कार्यवाहक निदेशक डा. लक्ष्मी कान्त, विभागाध्यक्ष, फसल सुधार अनुभाग, डा. जयदीप कुमार विष्ट, विभागाध

यक्ष फसल उत्पादन विभाग ने अपने विचार प्रस्तुत किए तथा संस्थान में हिन्दी की प्रगति को और अधिक बढ़ाने के लिए अनुरोध किया गया। सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी राजभाषा श्री तेज बहादुर पाल ने संस्थान में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन, राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने, संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा संस्थान में राजभाषा कार्य का निरीक्षण, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अन्तर्गत नराकास के कार्यों आदि की विस्तृत जानकारी दी तथा समस्त कार्मिकों से अनुरोध किया कि हिन्दी में कार्य करना बहुत सरल एवं सुगम है। अतः अपना दैनिक राजकीय कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करके राजभाषा नीति को आगे बढ़ाने में सहयोग करें इसके उपरान्त चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए।

हिन्दी प्रकाशनों का विवरण

- वार्षिक प्रतिवेदन हिन्दी 2017–18
- संस्थान समाचार पत्रिका–पर्वतीय कृषि दर्पण वाल्यूम 21 सं.–01, द्विभाषी
- कृषकोपयोगी बौद्धिक सम्पदा के अधिकार
- पर्वतीय क्षेत्रों में आलू की वैज्ञानिक खेती
- पर्वतीय क्षेत्रों में कृषकों की समस्याएँ एवं समाधान
- पर्वतीय क्षेत्रों में पौलीटैंक निर्माण
- गेठी वृक्ष की छाल से मंडुवा व अन्य मोटे अनाजों का मूल्यवर्धन
- गेहूँ की वैज्ञानिक खेती
- कृषि कैलेन्डर 2018–19
- विवेकानन्द कृषक प्रश्नोत्तरी जनपद उत्तरकाशी एवं बागेश्वर के किसानों हेतु मार्गदर्शिका
- पर्वतीय महिलाओं हेतु पोषण सुरक्षा का महत्व

भा.कृ.अ.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय चम्बाघाट, सोलन

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

निदेशालय में दिनांक 14–28 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2018 को इस आयोजन का शुभारंभ किया गया तथा सुलेख प्रतियोगिता, श्रुतलेखन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, टिप्पणी प्रतियोगिता, अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 28.09.2018 को किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को तथा

भा.कृ.अनु.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, चम्बाघाट, सोलन (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित राजभाषा

पूरे वर्ष हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस निदेशालय में दिनांक 17.03.2018, 20.06.2018, 21.09.2018 तथा 03.12.2018 को राजभाषा कार्यशाला आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के माध्यम से निदेशालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए यूनीकोड में प्रशिक्षण दिया गया तथा निदेशालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने दिन प्रतिदिन के सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग खुलकर कर रहे हैं। हिन्दी का कार्य शत–प्रतिशत करने की ओर निदेशालय अग्रसर है। हिन्दी कार्यशालाओं में बतौर मुख्य वक्ता श्री एच. एन. शर्मा, प्रशासनिक अधिकारी, डा. बी.एल. अत्री, प्रधान वैज्ञानिक, निदेशालय में राजभाषा के कार्यों को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए, इस विषय पर अपने–अपने विचार रखे। श्री शर्मा द्वारा धारा 3(3) के अंर्तगत आने वाले कागजातों व इन्हें अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में ही जारी करने को कहा। इन कार्यशालाओं में निदेशालय के निदेशक डा. वी. पी. शर्मा, ने भी अपने विचार रखे तथा भारत सरकार व परिषद द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को शत प्रतिशत पूर्ण करने को कहा।

राजभाषा संबंधी उपलब्धियां

- हिन्दी पखवाड़ा 14 से 28 सितम्बर, 2018 तक आयोजित किया गया।
- वार्षिक प्रकाशन 'छत्रक' 2017 का प्रकाशन किया गया।
- फाईलों में 99 प्रतिशत से अधिक टिप्पणियां हिन्दी में लिखी गई।
- खुम्ब उत्पादकों के लिए होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वक्तव्य हिन्दी में दिए गए।
- वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 को द्विभाषी तैयार किया गया।
- निदेशालय में आयोजित होने वाले विभिन्न दिवसों जैसे "उत्पादकता सप्ताहः दिनांक 12–18 फरवरी, 2018

'विज्ञान दिवस' 28 फरवरी, 2018, दिनांक 17 मार्च, 2018 को ''कृषि उन्नति मेले" के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के भाषण के सीधे प्रसारण, निदेशालय स्थापना दिवस – 21.06.2018, राष्ट्रीय खुम्ब मेला–10 सितम्बर, 2018, कृषि शिक्षा दिवस–3 दिसम्बर, 2018, 'विश्व् मृदा दिवस' 5 दिसम्बर, 2018, 'राष्ट्रीय किसान दिवस' 23 दिसम्बर, 2018 का आयोजन किया गया। इन दिवसों में सारी कार्रवाई हिन्दी में ही की गई तथा प्रेस विज्ञिप्तियां भी हिन्दी में जारी की गई।

- दिनांक 27.02.2018, 21.05.2018, 24.07.2018 व 29.10.2018 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें संपन्न हुई। सभी बैठकों की कार्यसूची वार्षिक कार्यक्रम की अपेक्षाओं के अनुसार एवं अध्यक्ष महोदय, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अनुमोदन के बाद ही तय की गई।
- अधिकारियों तथा कर्मचारियों के हिन्दी शब्द ज्ञान को बढ़ाने के उद्देशयी से श्याम पट्ट (ब्लैक बोर्ड) पर 'आज का विचार' शीर्षक के अन्तर्गत प्रतिदिन हिन्दी के वाक्य लिखे जाते हैं ताकि अधिकारियों व कर्मचारियों के शब्द ज्ञान में वृद्धि हो सके।
- प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मशरूम मेले का आयोजन 10 सितम्बर, 2018 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य पंडाल के सभी चित्रों के शीर्षक, ग्राफ, हिस्टोग्राफ आदि हिन्दी में प्रदर्शित किए गए। मल्टीमीडिया के माध्यम से मशरूम संबंधी जानकारी आकर्षक ढंग से हिन्दी में प्रस्तुत की गई तथा किसानों, छात्रों व अन्य अंगतुकों को मशरूम साहित्य हिन्दी में उपलब्ध कराया गया।
- दूरदर्शन पर भी निदेशालय के वैज्ञानिकों की मशरूम विषय पर हिन्दी में वार्ताएं प्रसारित होती रहती है, जिनसे मशरूम उत्पादकों की समस्याओं का समाधान उनकी अपनी भाषा में होता है।

वर्ष के दौरान प्राप्त पुरस्कार/सम्मान

सचिव, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा "क" क्षेत्र की श्रेणी में भा.कृ.अ.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन को वर्ष 2017–18 के दौरान उनके संगठन द्वारा संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन करने के लिए प्रथम स्थान प्राप्त करने में उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया (प्रतिलिपि संलग्न)।

वर्ष, 2018 के दौरान प्रकाशित हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''छत्रक"
- श्वेत बटन खुम्ब की खेती
- श्वेत बटन खुम्ब की बीमारियां, प्रतिस्पर्धी कवक एवं प्रबंधन

भा.कृ.अ.प.– भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

संस्थान में 01 से 14 सितम्बर, 2018 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 01 सितम्बर, 2018 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. लाल मोहन भर द्वारा किया गया। हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन के तत्पश्चात् काव्य–पाठ का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के कर्मियों द्वारा स्वरचित एवं प्रतिष्ठित कवियों की रचनाओं का पाठ किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान के वैज्ञानिक प्रभागों के लिए प्रभागीय चल–शील्ड प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें वैज्ञानिक प्रभागों में कार्यरत वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मियों, छात्रों द्वारा वित्त वर्ष 2017–18 के दौरान हिन्दी में लिखे एवं प्रस्तुत किए गए शोध–पत्रों, हिन्दी में दिए व्याख्यानों एवं सेमिनारों, हिन्दी कार्यशालाओं के आयोजन, शोध–पत्र पोस्टर प्रस्तुति इत्यादि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के कार्यों के आधार पर प्रभागीय चल–शील्ड का निर्धारण किया गया। संस्थान के वैज्ञानिक, छात्रों, आर.ए. एवं एस.आर.एफ. के लिए डिजिटल हिन्दी शोध–पत्र प्रस्तुति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों द्वारा स्वयं के मूल अनुसंधान पर आधारित शोध–पत्रों की डिजिटल प्रस्तुति की गयी। इसके अतिरिक्त, हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दीतर कर्मियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिता, अन्ताक्षरी एवं प्रश्न–मंच का आयोजन किया गया। अन्ताक्षरी एवं प्रश्न–मंच प्रतियोगिता के संचालकों द्वारा इन प्रतियोगिताओं को ऑडियो–विजुअल रूप में प्रस्तुत किया गया जिससे ये प्रतियोगिताएँ अत्यन्त ही रोचक रहीं। सभी प्रतियोगिताओं में छात्रों सहित संस्थान के विभिन्न वर्ग के कर्मियों ने हिस्सा लिया।

संस्थान द्वारा वर्ष 1992 से हिन्दी दिवस के अवसर पर ''डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला'' आरम्भ की गयी जिसमें

किसी सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वारा किसी भी वैज्ञानिक विषय पर हिन्दी में व्याख्यान दिया जाता है। इस वर्ष, हिन्दी दिवस के अवसर पर इस कड़ी का सत्ताइसवाँ व्याख्यान भा.कृ.अनु. परिषद् के उप–महानिदेशक (शिक्षा), डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा "भारत में स्थायी कृषि हेतु आवश्यक आयाम" विषय पर दिया गया। डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ इस समारोह के मुख्य अतिथि भी थे। भा.कृ.अनु.परिषद् के सहायक महानिदेशक (शिक्षा), डॉ. पुण्यव्रत एस. पाण्डेय इस समारोह के विशिष्ट अतिथि थे।

दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ तथा समापन समारोह के अवसर पर हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को सम्मानित करने एवं सफल प्रतियोगियों को पुरस्कृत करने के साथ–साथ वर्ष 2017–18 के दौरान "सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना" के अन्तर्गत भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, इस अवसर पर जुलाई 2017 से जुलाई 2018 तक की अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं के वक्ताओं को प्रमाण–पत्र वितरित करने के साथ–साथ संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाः सांख्यिकी विमर्श 2017–18 के सम्पादक मंडल के सदस्यों को भी प्रशस्ति–पत्र प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान में वर्ष 2018 के दौरान छः हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें से पहली कार्यशाला 09 जनवरी, 2018 को "कृषि में संगणक का अनुप्रयोग" विषय पर आयोजित की गयी जिसमें 07 वक्ताओं द्वारा 07 विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए गए। इस कार्यशाला में 18 अधिकारियों एवं 02 कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गयी। दूसरी कार्यशाला विशेष रूप से संस्थान के वैज्ञानिक वर्ग के लिए 20 जनवरी, 2018 को "कृषक कल्याण के लिए सांख्यिकी एवं सूचना–विज्ञान का योगदान" विषय पर आयोजित की गयी इस कार्यशाला में आई.सी.एम.आर. के पूर्व अपर महानिदेशक एवं राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग के सदस्य, डॉ. पदम सिंह, राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी नीति अनुसंधान संस्थान (एन.आई.ए.पी.) के निदेशक, डॉ. सुरेश पाल, संस्थान की पूर्व प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. रंजना अग्रवाल तथा संस्थान के प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा संस्थान के कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान दिए गए।

इस कार्यशाला में 58 वैज्ञानिकों द्वारा सहभागिता की गयी। तीसरी कार्यशाला 05 जून, 2018 को राजभाषा नियम एवं अनुपालन विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा नियम/अधिनियम, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों इत्यादि के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करायी गयी । इस कार्यशाला में 03 अधिकारियों तथा 20 कर्मचारियों ने सहभागिता की। चौथी कार्यशाला 25 जुलाई, 2018 को "कृषि में संगणक का अनुप्रयोग" विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में 08 वक्ताओं द्वारा विषय से सम्बन्धित विभिन्न उप–विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान दिए गए। इस कार्यशाला में 13 अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गयी। पाँचवीं कार्यशाला 08 अक्टूबर, 2018 को "ई.आर.पी. के प्रशासनिक मॉड्यूल" विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में 07 अधिकारियों तथा 04 कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गयी। छठी कार्यशाला 11 दिसम्बर, 2018 को "राजभाषा सम्बन्धी वार्षिक कार्यक्रम एवं हिन्दी यूनिकोड का उपयोग" विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निहित दिशानिर्देशों के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ टंकण कार्य में हिन्दी यूनिकोड की व्यवहारिक जानकारी उपलबध करायी गयी । इस कार्यशाला में 04 अधिकारियों तथा 23 कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गयी। कार्यशालाओं के आयोजकों/वक्ताओं द्वारा प्रतिभागियों को व्याख्यानों की सामग्री, मैनुअल के रूप में, हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी गयी।

राजभाषा सम्बन्धी विशेष उपलब्धियां

भारत सरकार, राजभाषा विभाग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु मध्यम वर्ग के कार्यालयों में संस्थान को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास (उत्तरी दिल्ली) द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "सांख्यिकी विमर्शः 2017–18" को उत्कृष्ट गृह पत्रिका पुरस्कार के अन्तर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया ।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) द्वारा संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से सम्बन्धित मार्च 2018 एवं सितम्बर 2018 को समाप्त छःमाही रिपोर्टों के आधार पर संस्थान को ''उत्कृष्ट श्रेणी'' में वर्गीकृत किया गया ।

भारतीय कृषि अनुसंधान समिति एवं कृषि अनुसंधान संचार केन्द्र, करनाल द्वारा संस्थान की वैज्ञानिक, डॉ. अनु शर्मा को अपना मौलिक शोध–पत्र ''संगणनात्मक विधियों के द्वारा अरहर में माइक्रो–आर.एन.ए. की पहचान एवं उसका विवरण'' तथा डॉ. मृन्मय राय, श्री राजेन्द्र सिंह तोमर, डॉ. रामसुब्रमणियन, वी. एवं डॉ. के. एन. सिंह को अपना मौलिक शोध–पत्र ''ए. आर.आई.एम.ए.–ए.एन.एन. हाइब्रिड मॉडल के उपयोग द्वारा भारत की गन्ने की उपज का पूर्वानुमान'' भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका में राजभाषा हिन्दी में छपवाने तथा राष्ट्र की सेवा करने के लिए ''कृषि विज्ञान गौरव'' (2018) की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया ।

संस्थान के समस्त कर्मियों को 02 वर्ष की अवधि में कम से कम एक बार हिन्दी कार्यशाला में सहभागिता करने का अवसर मिलने की अनिवार्यता के संबंध में राजभाषा विभाग से प्राप्त 29 फरवरी, 2016 के कार्यालय ज्ञापन सं. 12019/81/2015– रा.भा.(का–2)/पार्ट–2 में निहित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, संस्थान द्वारा 21 सितम्बर, 2016 से 08 अक्टूबर, 2018 के दौरान संस्थान से संबंधित विभिन्न विषयों पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन कर संस्थान के समस्त कर्मियों को कम से कम एक बार हिन्दी कार्यशाला में प्रशिक्षित किया गया ।

संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–। (दिल्ली) के उप–निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा 11 जुलाई, 2018 को तथा कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा 04 अक्टूबर, 2018 को संस्थान के राजभाषा सम्बन्धी निरीक्षण किए गए। दोनों निरीक्षण सफलातपूर्वक सम्पन्न हुए।

संस्थान द्वारा राजभाषा विभाग को प्रेषित 2017–18 अवधि की तिमाही हिन्दी प्रगति रिपोर्टों में दिए गए आंकड़ों की जांच के लिए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय–। (दिल्ली) के उप–निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा 08 अक्टूबर, 2018 को संस्थान का दौरा किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में व्याख्यान दिए गए तथा व्याख्यानों की सामग्री मैनुअल के रूप में हिन्दी में उपलब्ध करायी गयी। इन कार्यशालाओं के अनेक वक्ता हिन्दीत्तर भी थे।

संस्थान के वैज्ञानिक प्रभागों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संदर्भ पुस्तिकाओं में कवर पेज, आमुख एवं प्राक्कथन द्विभाषी रूप में प्रस्तुत करने के साथ–साथ कुछ हिन्दी के व्याख्यान भी शामिल किए गए। वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों में कवर पेज, आमुख, प्राक्कथन एवं सारांश द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किए गए तथा कुछ वैज्ञानिकों द्वारा अपनी परियोजना रिपोर्टों में विषय–सूची एवं तालिकाएं भी द्विभाषी रूप में प्रस्तुत की गयीं। इसके अतिरिक्त, संस्थान में एम.एससी. तथा पीएच.डी. के विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध–प्रबंधों में सार द्विभाषी रूप में प्रस्तुत किए गए। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा शोध–पत्र हिन्दी में प्रकाशित किए गए।

संस्थान द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका, 'सांख्यिकी–विमर्श' के तेरहवें अंक का प्रकाशन किया गया। इस वर्ष से इस पत्रिका में अनुसंधान खण्ड के साथ–साथ राजभाषा खण्ड को भी शामिल किया गया। इस पत्रिका में संस्थान में सम्बन्धित वर्ष में किए गए अनुसंधानों व अन्य कार्यों के संक्षिप्त विवरण, राजभाषा से सम्बन्धित कार्यों आदि की जानकारी के साथ–साथ कृषि सांख्यिकी, संगणक अनुप्रयोग एवं कृषि जैव सूचना से सम्बन्धित विभिन्न लेखों एवं शोध–पत्रों को भी प्रस्तुत किया गया है। पाठकों के हिन्दी ज्ञानवर्धन के लिए दैनिक स्मरणीय शब्द–शतक (हिन्दी व अँग्रेजी में) के साथ–साथ द्विभाषी पदनाम तथा लैटिन शब्दों के हिन्दी समानक भी पत्रिका में शामिल किए गए हैं।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग की नराकास (उत्तरी दिल्ली) द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन कार्य में उत्कृष्ट निष्पादन हेतु मध्यम वर्ग के कार्यालयों में संस्थान को प्राप्त तृतीय पुरस्कार।

नराकास (उत्तरी दिल्ली) द्वारा वर्ष 2017–18 के दौरान संस्थान द्वारा प्रकाषित हिन्दी पत्रिका ''सांख्यिकी विमर्शः 2017–18'' को उत्कृष्ट गृह पत्रिका पुरस्कार के अन्तर्गत द्वितीय पुरस्कार प्राप्त।

हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- सांख्यिकी–विमर्शः 2017–18 (वार्षिक)
- वार्षिक रिपोर्टः 2016–17
- भाकृअप–भा.कृ.सां.अ.सं. समाचार (त्रैमासिक)
- भा.कृ.सां.अ.सं.–हिन्दी पखवाड़े से संबंधित

भा.कृ.अ.प.–भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, रांची

हिन्दी दिवस समारोह

भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान में राजभाषा अधिनियम के अनुपालन एवं कार्यालय कार्य में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए संस्थान में दिनांक 01.09.2018 से 30.09.2018 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत दिनांक 29.09.2018 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री अमरकान्त, प्रबंध संपादक, खबर मंत्र, हिन्दी दैनिक, राँची तथा डॉ हीरानन्दन प्रसाद, साहित्यकार एवं सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह को संबोधित करते हुए श्री अमरकान्त ने संस्थान के शोध और उपलब्धियों को हिन्दी में प्रकाशित करने की बात कही, जिससे स्थानीय स्तर पर किसान और ग्रामीण उसे पढ़कर लाभान्वित हो सकें। उन्होंने कहा कि यह काफी सराहनीय बात है कि संस्थान के वैज्ञानिक बातचीत और अपने कागजाती कार्य में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं। उन्होंने हिन्दी को लोगों का जीवन और दिनचर्या बताते हुए कहा कि इस भाषा के बगैर हम अपने आपको अधूरा महसूस करते हैं। विशिष्ट अतिथि डॉ हीरानन्दन प्रसाद ने अपने संबोधन में कहा की हिन्दी सबसे समृद्ध भाषा है अगर हिन्दी के प्रति थोड़ी सजगता हो तो यह बेहद सहज और सरल लगेगी। उन्होंने कहा कि हिन्दी के विकास में राजनीति भी एक बाधक है। डॉ. प्रसाद ने कहा कि मेडिकल साईंस और अन्य टेक्नोलॉजी की पढ़ाई के लिए अंग्रेजी में लिखी किताबों का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए, तभी छात्र–छात्राओं का रूझान इस ओर बढ़ेगा।

संस्थान के निदेशक, डॉ केवल कृष्ण शर्मा ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिन्दी चेतना मास के अन्तर्गत हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया है। संस्थान में लम्बे समय से राजभाषा हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। हमारे यहाँ कार्यालय कार्य के साथ–साथ वैज्ञानिक साहित्य में भी हिन्दी का अच्छा प्रयोग हो रहा है। संस्थान द्वारा नियमित अंतराल पर हिन्दी/द्विभाषी पुस्तिकाएं, पत्र इत्यादि प्रकाशित होते रहते हैं।

भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, गढ़खटंगा, राँची के निदेशक डॉ. तिलक राज शर्मा ने हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर शुभकामनाएं दीं तथा संस्थान में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग संबंधी प्रयासों के बारे में बताया। हिन्दी चेतना मास की अवधि में दिनांक– 06–07 सितम्बर, 2018 को हिन्दी टिप्पण, प्रारूप लेखन, निबंध, अंताक्षरी, पर्याय एवं विपरीतार्थक शब्द प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम संस्थान एवं भारतीय कृषि जैवप्रौद्योगिकी संस्थान, गढ़खटंगा, राँची द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। इस अवसर पर अन्य संस्थानों के अतिथियों के अतिरिक्त संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

खाद्य अपमिश्रण का स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर नगर स्तरीय हिन्दी संगोष्ठी/सह कार्यशाला का आयोजन

संस्थान में 08 मई, 2018 को खाद्य अपमिश्रण का स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव विषय पर एक दिवसीय नगर स्तरीय हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में संगोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए श्री सरयू राय, माननीय मंत्री खाद्य, जनवितरण प्रणाली, उपभोक्ता मामले, झारखण्ड सरकार ने कहा कि खाद्य पदार्थों में मिलावट जोरों पर है, यह अपनी सीमा को पार कर चुका है तथा सरकार को इसके लिए कड़े कदम उठाने की जरूरत है। व्यापार में लोगों का स्वार्थ इतना बढ़ गया है कि वे किसी भी हद तक जाने में संकोच नहीं कर रहे हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि दुकानदार पहले अपनी दुकान में शुभ–लाभ लिखते थे, परंतु अब शुभ का स्थान लोभ ने ले लिया है। साथ हीं उन्होंने कहा कि हमारे खाने–पीने के तरीकों में व्यापक बदलाव आया है, जिसके कारण मिलावट काफी आसान हो गई है। हमें विज्ञान और परंपरा के बीच सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता है। हमें चमकदार सीलबंद डिब्बों में खाने के चलन को छोड़ना होगा। मिलावट को रोकने के लिए हमारे यहां कानून

जरूर बने हैं, पर उनके प्रति जागरूकता का घोर अभाव है। हमें अपनी सोच बदलनी होगी। क्योंकि हम रासायनिक यौगिकों को मूल्यवान समझते हैं, जबकि इसी सोच की आड़ में लोगों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ हो रहा है। अपमिश्रण या मिलावट हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा है।

समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ तथा संस्थान के निदेशक डॉ केवल कृष्ण शर्मा ने पुष्पगुच्छ देकर अतिथियों का अभिनंदन किया। संस्थान के निदेशक डॉ. केवल कृष्ण शर्मा ने संस्थान की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी के माध्यम से वर्तमान समय की एक बड़ी समस्या को चर्चा के लिए लिया गया है।

संगोष्ठी का आयोजन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केन्द्र सरकार के कार्यालय), राँची के तत्वावधान में किया गया एवं भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, गढ़खटंगा, राँची इस आयोजन के सह–प्रायोजक थे। संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में व्याख्यान देते हुए श्री चतुर्भुज मीणा, कार्यालय प्रमुख एवं खाद्य एनालिस्ट, राज्य खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला, नामकुम, राँची ने बताया कि मिलावट हमारी सोच से कहीं अधिक आगे बढ़ चुका है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि बाजार में कई ऐसे ब्रांडेड उत्पाद हैं जो पूरी तरह मिलावटी हैं। सरसों तेल में ऑर्जिमोन मैक्सिकाना, मिठाइयों में सूडान रेड जैसे रसायन घातक व कैंसर कारक हैं।

संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ आशा किरण, एसोशिएट प्रोफेसर, प्रिवेन्टिव मेडिसिन विभाग, रिम्स, बरियातु, राँची ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मिलावट इस कदर बढ़ चुकी है कि हम अगर किसी पार्टी या भोज में खाना खाने जाते हैं, तो वहां से कोई न कोई बीमारी लेकर जरूर आते हैं। यह एक बहुत बड़ी समस्या बनती जा रही है। संगोष्ठी के बारे में जानकारी देते हुए संयोजक एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ संजय श्रीवास्तव ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य आए दिन हो रही खाद्य पदार्थों में मिलावट से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के प्रति लोगों को जागरूक करना था।

संगोष्ठी में संस्थान एवं भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों समेत राँची स्थित केन्द्र सरकार के 32 कार्यालयों के 138 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। समापन सत्र के पूर्व अयोजित खुली चर्चा में भी प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में श्री महेन्द्र कुमार यादव, अध्यक्ष, रेलवे भर्ती बोर्ड डॉ ए. एच. नकवी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची; श्री प्रियतोश अमिष्ट, संयुक्त निदेशक, जनगणना कार्य निदेशालय श्री घनश्याम सिंह, तथा श्री सुब्रतो कुमार नाग, सहायक कमान्डेण्ट, केन्दीय रिजर्व पुलिस बल, जमशेदपुर, संस्थान के विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिकगण, वरिष्ठ अधिकारियों इत्यादि ने भाग लिया।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, दिल्ली

हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा विकास नीति के अन्तार्गत गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वायन समिति के तत्वानधान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय केन्द्र दिल्लीा में 14–20 सितम्बर, 2018 तक हिन्दी सप्तादह बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में सफलतापूर्वक मनाया मनाया गया। जिसमें विविध ज्ञानवर्धक, रूचिपूर्ण हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र का प्रारम्भ दिनांक 14.09.2018 सभापति महोदय डॉ. राम प्रसाद यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी सप्ताह का विधिवत उद्घाटन किया गया। इसके उपरांत हिन्दी सप्ताह समारोह के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक द्वारा राजभाषा के विकास एवं उन्नति और राजभाषा के सम्मान में शब्द सुमनों से अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करने के उपरांत हिन्दी सप्ताह समारोह में आयोजित किए जाने वाले विविध रूचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के बारे में बताया। इसके उपरांत सभापति महोदय डॉ. राम प्रसाद यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख द्वारा अपने सम्बोधन एवं अपने वचनों से हमे मार्गदर्शित एवं भाव–विभोर किया और कार्यालय में राजभाषा में की गई प्रगति के बारे में अवगत कराया और बताया कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष हमारे कार्यालय ने हिंदी में कार्य करने में काफी अधिक प्रगति की है। आपने राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम 2018–19 पर भी विशेष प्रकाश डाला। आपने बताया की कार्यालय के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा उपलब्ध है इस सुविधा का सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिकाधिक प्रयोग करके राजभाषा के प्रचार और प्रसार में अपना बहुमूल्य योगदान देना चाहिए। साथ ही हमारे मुख्यालय नागपुर से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका ''धरती'' और ''मृदा दर्पण'' में अधिकाधिक अपने संस्मरण, लेख, कहानी, गीत, कविता, वैज्ञानिक और तकनीकी लेख भेजकर राजभाषा के प्रचार और प्रसार में अपना बहुमूल्य सहयोग देना चाहिए।

तत्पश्चात् 14 सितंबर, 2018 से 20 सितंबर, 2018 तक की अवधि के दौरान आयोजित विविध कार्यक्रमों जैसे हिन्दी

गीत व कविता पाठ प्रतियोगिता, शुद्ध लेखन एवं सुंदर लेखन प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं रुचिपूर्ण कार्यक्रम अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। जिसमें केन्द्र में कार्यरत अधिकांश अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लेकर उन्हे सफल बनाया।

दिनांक 20.09.2018 को अपराह्न में हिन्दीं सप्ताह समारोह के समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अभय कुमार व्यास, सहायक महानिदेशक (एच.आर.एम.) का क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख द्वारा स्वागत किया गया एवं समारोह के महत्व पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा हिन्दी सप्ताह समारोह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आकर्षक पुरस्कावरों से सम्मानित किया गया।

इसके उपरांत अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. अभय कुमार व्यास, सहायक महानिदेशक ने कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद दिया जिन्होंने इस हिन्दी सप्ताह समारोह में सक्रिय रूप से भाग लेकर इसे सफल बनाया व सभी विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने बताया कि हिन्दी बहुत ही सहज व सरल है व देश के अधिकांश भागों में समझी जाती है व हमारे देश को एक कड़ी के रूप में जोड़े हुए है। हमें अपनी राजभाषा का सम्मान करते हुए इसका अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। उन्होने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सलाह दी की वे अपना अधिकांश शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में करे। इसके उपरांत हिन्दी सप्ताह समारोह की अध्यक्ष, श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सभी कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लेने के लिए बधाई दी व सभी निर्णायक मड़ल के सदस्यों का धन्यवाद दिया। हिन्दी सप्ताह समारोह के सभी कार्यक्रमों एवं मंच का संचालन श्रीमति सुनीता मित्तल, सहायक, एवं सदस्य हिन्दी सप्ताह समारोह द्वारा किया गया व आभार प्रदर्शन श्री विकास, वैज्ञानिक, एवं सदस्य हिन्दी सप्ताह समारोह द्वारा प्रकट किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह – 14 से 20 सितम्बर 2018

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में दिनांक 01.01.2018 से 31.12.2018 के दौरान तीन हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों, तकनीकी सहायक वर्ग एवं प्रशासनिक वर्ग ने सक्रिय रूप से भाग लेकर उन्हें सफल बनाया। इन चार कार्यशालाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में दिनांक 27 मार्च, 2018 को केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों एवं प्रशासनिक वर्ग हेतु प्रथम कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु कुमारी सुनिता, सहायक निदेशक (रा.भा.) भा.कृ.अनु.स. परिसर, नई दिल्ली सादर आमंत्रित थीं। आपने ''युनिकोड की जानकारी'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में केंद्र के 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख ने की व आभार प्रदर्शन श्री अरविन्द कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी द्वारा किया गया।

केन्द्र की दूसरी कार्यशाला का आयोजन 20 जून, 2018 को केन्द्र के प्रशासनिक एवं तकनीकी सहायक वर्ग हेतु किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली आमंत्रित थे। आपने ''हिंदी में टिप्पण और प्रारुप लेखन'' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। आपने टिप्पण के विभिन्न प्रायोजन, प्रस्तुतीकरण और स्वरूप के बारे में विस्तार से बताया। इस कार्यशाला में केंद्र के 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. शंकर कुमार महापात्रा, प्रधान वैज्ञानिक ने की व आभार श्री अरविन्द कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने व्यक्त किया।

केन्द्र की तीसरी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 17 अक्तूबर 2018 को केन्द्र के वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी वर्ग हेतु किया गया। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्रीमती अर्चना राघव, सहायक निदेशक (रा.भा.), रा.प.आ.अ. ब्यूरो, भा.कृ.अनु.स. परिसर, नई दिल्ली सादर आमंत्रित थीं। आपने ''वार्षिक कार्यक्रम 2018–19 के लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयास'' विषय व्याख्यान हेतु चुना। इस कार्यशाला में केंद्र के 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. आर.पी. यादव, प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केन्द्र प्रमुख ने की व आभार श्री अरविन्द कुमार सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने माना।

केन्द्र की प्रमुख उपलब्धियां

- क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में वर्ष के दौरान समिति की चार बैठकों का आयोजन किया गया।
- क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में वर्ष 2018 में तीन कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।
- क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली हिन्दी सप्ताह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। जिसमें हिन्दी से संबंधित ज्ञानवर्धक, रूचिपूर्ण विषयों पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।
- पौधा किस्म और कृषक अधिकार सरक्षण प्राधिकरण, (कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली में 13.02.2018 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

पुरस्कार/सम्मान

- भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा मूलरूप से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत एवं अधिकारियों द्वारा हिंदी में श्रुतलेख/टिप्पण/डिक्टेशन दिए जाने के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली के श्री सुमित सिंधु, सहायक प्रशासनिक अधिकारी को नगद पुरस्कार प्रदान किया गया।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश

हिन्दी दिवस का आयोजन

संस्थान में दिनांक 27 सितम्बर, 2018 को हिन्दी दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। लोकप्रिय कवि एवं लेखक एवं शिक्षाविद् डॉ. सुरेश अवस्थी कानपुर इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के कार्यवाहक निदेशक डा. कृष्णा कुमार ने की। समारोह में संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक वर्ग के कर्मचारियों ने भाग लिया। अपने उद्‌बोधन में डॉ अवस्थी ने कहा कि आज विकास की गति में हमारी राजभाषा हिन्दी एक मजबूत सूत्रधार का कार्य कर रही है। हम अपनी भाषा में अधिक स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से अपने विचार एवं विषय को प्रकट कर सकते हैं। यही हमारी उन्नति का संवाहक होता है। अतः हमें अपनी राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा। हिन्दी अपनी सरलता और सहज बोधगम्यता के कारण पूरे देश में समझी और बोली जाती है और राष्ट्रीय सम्पर्क सूत्र की महती भूमिका निभा रही है। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कार्यवाहक निदेशक महोदय ने कहा

कि संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग को आगे बढ़ाने के लिए बहुआयमी प्रयास किए गए हैं। इसी क्रम में हिन्दी में, मौलिक वैज्ञानिक लेखन, कार्यालयीन पत्राचार और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया गया है। तकनीकी क्षेत्रों के साथ–साथ, गैर तकनीकी क्षेत्रों में भी हिन्दी के प्रयोग में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। संस्थान में राजभाषा की प्रगति आख्या डॉ राजेश कुमार श्रीवास्तव, प्रभारी, राजभाषा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'दलहन आलोक 2018' एवं वार्षिक प्रतिवेदन 2017–18 (हिन्दी) का विमोचन किया। इस अवसर पर हिंदी में कविता पाठ का भी आयोजन किया गया।

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र , बीकानेर

हिन्दीर सप्ताह का आयोजन

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर केन्द्र द्वारा दिनांक 14–22 सितम्बर, 18 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ में मुख्य अतिथि डॉ. शालिनी मूलचंदानी, विभागाध्यक्ष, राज. डूंगर महा., बीकानेर को आमंत्रित किया गया। अध्यक्षता केन्द्र निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने की। प्रभारी राजभाषा डॉ. बसंती ज्योत्सिना ने हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस अवसर पर प्राप्त संदेशों का वाचन किया केन्द्र में हिंदी सप्ताह के दौरान हिन्दी में निबंध लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी में श्रुति लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी में अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी में प्रश्न मंच (क्वीज) प्रतियोगिता, हिन्दी में वाद–विवाद प्रतियोगिता, राजभाषा कार्यशाला, हिन्दी में शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह पर मुख्य अतिथि डॉ. अन्नाराम शर्मा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद (राज.) ने हिन्दी भाषा प्रयोग में क्लिष्ट शब्दावली के स्थान पर उसके सरलीकरण पर जोर देने की बात कही।

21 मार्च, 2018 केन्द्र में राजभाषा नीति कार्यान्वयन हेतु आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता श्री सुनील कुमार ने प्रयोजन मूलक हिन्दी और कार्यालय' विषय व्याख्यान प्रस्तुत किया व प्रतिभागियों की राजभाषा संबंधी जिज्ञासाओं का निराकरण किया गया। दिनांक 19 जून, 2018 'स्वस्थ एवं सुखी जीवन हेतु योग का महत्व' विषय पर आयोजित कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में देवेन्द्र योग संस्थान, बीकानेर के मुख्य प्रबंधक डॉ. देवाराम काकड़ ने कहा कि संपूर्ण विश्व आज योग को लेकर भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है, भारत का प्रत्येक व्यक्ति योग का भलीभांति महत्व जानता है। योग हेतु वैश्विक सहमति इस बात का द्योतक है। दिनांक 22 दिसम्बर, 2018 की आयोजित कार्यशाला में शुद्ध लेखन विषय पर व्याख्यान हेतु डॉ. अन्नाराम शर्मा, सह आचार्य, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर एवं द्वितीय व्याख्यान स्वच्छता: एक सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी श्री मोहर सिंह यादव, प्राचार्य, चौपड़ा कटला स्कूल बीकानेर एवं संस्था पक स्वच्छता प्रहरी संस्थान बीकानेर को अतिथि वक्ता के रूप में आमन्त्रित किया गया।

केन्द्र के निदेशक डॉ. आर.के. सावल ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि राजभाषा कार्यशाला में प्रदत्त जानकारी निश्चित रूप से प्रतिभागियों के ज्ञान में अभिवृद्धि करने में सहायक बनेंगी। उन्होंने कहा कि हमें स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों में भरपूर योगदान देना चाहिए ताकि कार्यक्रमों की सार्थकता सिद्ध हो सके। वहीं भाषा में भी शुद्धता हेतु प्रयत्नशील रहें। केन्द्रम को वर्ष 2017–18 के दौरान राजभाषा के प्रशंसनीय व सराहनीय प्रयोग के लिए बड़े कार्यालय के रूप में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

केन्द्र द्वारा प्रकाशित हिन्दी प्रकाशन

- राजभाषा पत्रिका करभ अंक 15
- वार्षिक प्रतिवेदन (द्विभाषी)
- क्यों पियें ऊँटनी का दूध : विस्तार पत्रक
- भाकृअनुप–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र–विस्तार पत्रक
- उष्ट्र एक उत्कृष्ट वातावरणीय अनुकूलनशील प्रजाति

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राष्ट्रीय कृषि आर्थिकी एवं नीति अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 14–28 सितम्बर, 2018 के दौरान 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाते हुए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ताकि हिन्दी के प्रयोग के बारे में स्टाफ के बीच जागरूकता का सृजन किया जा सके। 'हिन्दी पखवाडे' के दौरान आयोजित गतिविधियों में विभिन्न विषयों में लेखन कौशल विकसित करने के लिए निबंध प्रतियोगिता, वाद–विवाद प्रतियोगिता और ज्वलंत विषयों पर सीधी वार्ता का आयोजन शामिल था। गैर हिन्दी भाषियों को भी अपनी रूचि के किसी भी विषय पर हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया गया। राजभाषा में सामान्य संचेतना के लिए एक प्रश्न–मंच प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के सभी स्टाफ सदस्यों ने हिस्सा लिया। हिन्दी पखवाड़े का समापन कविता पाठ एवं पुरस्कार वितरण के साथ किया गया।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान द्वारा स्टाफ की मासिक बैठक और राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक और हिन्दी कार्यशाला का नियमित आयोजन किया गया। संस्थान राजभाषा समिति द्वारा परिषद तथा केन्द्रीय राजभाषा विभाग, भारत सरकार से समय–समय पर जारी दिशानिर्देशों, परिपत्रों एवं अनुदेशों को लागू किया जाता है। संस्थान में नाम पट्टिका एवं रबर की मुहर द्विभाषी रूप में उपलब्ध हैं। संस्थान के प्रत्येक कम्प्यूटर में हिन्दी टंकण के लिए 'यूनीकोड' की सुविधा उपलब्ध है। 'मेरा गांव – मेरा गौरव' कार्यक्रम के तहत, किसानों को सूचना का प्रसार हिन्दी में किया गया।

प्रकाशनों की सूची

- भा.कृ.अ.प.–निआप वार्षिक प्रतिवेदन 2016–17

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थोन, कोच्चि

हिन्दी दिवस का आयोजन

संस्थान में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से दिनांक 14 सितंबर, 2018 को हिन्दी दिवस मनाया गया। इस संदर्भ में हिन्दी समारोह पर माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी और माननीय कृषि एवं किसान सहकारिता मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी के संदेशों की प्रतियॉं सभी कर्मचारियों के बीच परिचालित की गयीं।

संस्थान के सभी क्षेत्रीय/अनुसंधान केन्द्रों में विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के साथ हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ा आयोजित किए गए।

सी.एम.एफ.आर.आई.मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में दिनांक 14 से 24 सितंबर, 2018 के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिन्दी लिप्यंतरण, अनुवाद, निबंध लेखन, टिप्पण व आलेखन, तकनीकी शब्दावली के साथ हिन्दी सप्ताह मनाया गया। सुश्री एस.सुमती, प्राचार्या, केन्द्रीय विद्यालय, मंडपम ने दिनांक 14 सितंबर को दीप प्रज्वलित करके हिन्दी सप्ताह का उद्‌घाटन किया। हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन कार्यक्रम दिनांक 24 सितंबर, 2018 को आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. मुरली, सहायक प्रोफसर, हिन्दी विभाग, मदुरै कॉलेज, मदुरै मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कर्मचारियों को यह आह्‌वान दिया कि राजभाषा के कार्यान्वयन के साथ साथ मातृभाषा का प्रचार करना भी आवश्यक है। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं, विभागीय हिन्दी परीक्षाओं में पास होने वाले कार्मिकों और हिन्दी में मूल काम करने वाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार प्रदान किए

सी.एम.एफ.आर.आई., मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र में हिन्दी सप्ताह समारोह के दृश्य

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियॉं

राजभाषा गौरव पुरस्कार

संस्थान की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका 'मत्स्यगंधा' में प्रकाशित 'मछुआरों की आय बढ़ायी जाने के लिए समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियां, विषयक लेख के लिए डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक और डॉ. इमेल्डा जोसफ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, समुद्री संवर्धन प्रभाग, सी एम एफ आर आई को राजभाषा विभाग का गौरव पुरस्कार–2017–18 दिनांक 14 सितंबर, 2018 को आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में भारत के महामहिम उप राष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडु ने प्रदान किया।

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी.एम.एफ.आर.आई और डॉ. इमेल्डा जोसफ पुरस्कार ग्रहण करते हुए

राजर्षि टंडन पुरस्कार

संस्थान में वर्ष 2016–17 के दौरान आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन कार्यविधियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्थापित राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त हुआ। एन ए एस सी परिसर, नई दिल्ली में दिनांक 16 जुलाई, 2018 को आयोजित भा.कृ.अनु.प. के 90 वीं वर्षगांठ के दौरान निदेशक, सी.एम.एफ.आर.आई. और श्री नवीन

कुमार यादव, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह से पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान के कार्मिकों को हिन्दी में काम करने को प्रोत्साहित करने तथा हिन्दी में वार्तालाप करने की झिझक दूर करने के उद्देश्य से वर्ष के दौरान चार कार्यशालाएं – 27 फरवरी 2018, 20 जून 2018, 15 सितंबर 2018 और 17 दिसंबर 2018 को आयोजित की गई इसी तरह संस्थान के विभिन्न क्षेत्रीय तथा अनुसंधान केन्द्रों में भी हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

हिन्दी प्रकाशन

- कडलमीन – सी.एम.एफ.आर.आई. समाचार की तिमाही पत्रिका
- मत्स्यगंधा
- पुस्तिकाएं
- जलवायु परिवर्तन से संबंधित परियोजना के अंतर्गत जलवायु से हाने वाले परिवर्तन के प्रभाव, अनुकूलन, शमन और सामना करने के संबंध में जनता की जानकारी के लिए पांच पुस्तिकाएं प्रकाशित की गई।

भा.कृ.अ.प.–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून

हिन्दी सप्ताह का आयोजन

संस्थान में हिन्दी सप्ताह दिनांक 14–20 सितम्बर, 2018 को मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन कर व माँ सरस्वती को पुष्पांजलि देने के बाद ईश वंदना से हुआ। तत्पश्चात कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार एवं राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी गृह मंत्री के इस अवसर पर जारी संदेशों को पढ़ कर सुनाया गया। इसके बाद खुले मंच के रूप में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संस्थान के विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी में किए जा रहे कार्यो के विषय में बताया। साथ ही चूँकि संस्थान एक अनुसंधान संस्थान है अतः इसके अनुसंधान के कार्य में हिन्दी भाषा के प्रयोग के दौरान आने वाली परेशानियों के विषय पर भी चर्चा हुई। सप्ताह के दौरान संस्थान में शब्दावली, शब्द बनाओ, अनुवाद, निबंध लेखन, पत्र/आवेदन लेखन व चित्र/लघु लेखन की प्रतियोगितायें संस्थान में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों, प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों, तकनीकी अधिकारियों व कर्मचारियों एवं कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी।

हिन्दी सप्ताह का समापन दिनांक 20 सितम्बर, 2018 को हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि, साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश' थे। इस अवसर पर अपने व्याख्यान में डॉ. चमोला ने कार्यालयों में राजभाषा के व्यवहारिक कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला। उन्होनें कहा कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों में हिन्दी में विज्ञान लेखन सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्य क है कि हम अपने लेखन में मानक शब्दावली का प्रयोग करें।

संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. पी. आर. ओजस्वी ने इस अवसर पर कहा कि विगत कुछ महीनों में संस्थान में हिन्दी में किए जा रहे कार्य में बढ़ोत्तरी हुई है, किन्तु यह अपेक्षा से कम है। चूँकि हमारा संस्थान 'क' क्षेत्र मे स्थित है, अतः हमें अपना प्रशासकीय कार्य पूर्ण रूप से हिन्दी में करना चाहिए। मुख्य अतिथि महोदय के कर कमलों द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी कार्यशाला

संस्थान में वर्ष 2018 के अंतिम त्रैमास (अक्टूबर–नवम्बर, 2018) की हिन्दी कार्यशाला दिनांक 22 नवम्बर, 2018 को संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री एस के गजमोती की अध्यक्षता प्रारंभ हुई। कार्यशाला में त्रैमासिक रिपोर्ट के प्रपत्र पर बिन्दु वार सभी मदों पर विस्तार से चर्चा हुई। चर्चा में संस्थान के प्रशासन, वित्त एवं लेखा, बिल एवं रोकड़, भण्डार एवं क्रय, पुस्तकालय, केंद्रीय प्रयोगशाला, वाहन प्रकोष्ठ आदि अनुभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर बल दिया कि संस्थान के सभी विभाग/अनुभाग अपना अधिक से अधिक काम (पत्राचार, टिप्पणी लेखन, बैठक का कार्यवृत्त) हिन्दी में करें और हिन्दी में किए गए कार्य का सटीक व पूरा ब्यौरा रखें, जिससे त्रैमासिक रिपोर्ट के प्रपत्र को भरने में असुविधा न हो। उन्होंनें आगे कहा कि इस प्रकार त्रैमासिक रिपोर्ट सभी विभागों/अनुभागों से समय से प्राप्त होने पर संकलित कर संस्थान स्तर पर तैयार कर के राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर अपलोड की जा सकेगी।

संस्थान के हिन्दी में प्रकाशन

- संचित वर्षा जल से पूरक सिंचाई संबंधित उन्नत तकनीक
- पर्वतीय क्षेत्रों में खनन प्रभावित इलाकों के पुर्नस्थापन हेतु प्रौद्योगिकी
- संस्थान मुख्यालय की राजभाषा पत्रिका – मृदा एवं जल संरक्षिका

भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

भारत सरकार की राजभाषा की विकास नीति के अंतर्गत गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यन्वयन समिति के तत्वावधान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं सरकारी काम–काज में हिन्दी के प्रयोग को अधिकाधिक प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी, निदेशक की अध्यक्षता में 14 से 27 सितम्बर, 2018 तक किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिन व हिन्दी दिवस के अवसर पर एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ सुनीता श्रीवास्तव प्रोफेसर गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय हिसार ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य ''भगिनी निवेदिता का भारतीय राष्ट्रवाद में योगदान'' पर दिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष व केन्द्र के निदेशक डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि अनेकता में एकता का

स्वर हिन्दी के माध्यम से गूंजता है। जीवन में भाषा का सबसे अधिक महत्व होता है। विभिन्नताओं के बीच एक भाषा ही है, जो एकता का आधार बनती है और हम सभी को इस एकता के साधन का सम्मान करना चाहिए। डॉ. अनुराधा ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी व साथ ही सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों व केन्द्र के वैज्ञानिकों व कर्मचारियों का इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आभार भी व्यक्त किया। इस दौरान विभिन्न ज्ञानवर्धक एवं रूचिपूर्ण हिन्दी प्रतियोगिताओं जैसे निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी परिछेद अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी श्रुत लेख प्रतियोगिता, हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ एवं सुलेख प्रतियोगिता (संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बच्चों के लिए), हिन्दी टंकण प्रतियोगिता एवं हास्य कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया। निदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़ा में बच्चों की प्रतिभागिता की सराहना की और उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। केन्द्र के निदेशक महोदय डॉ. भूपेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने संस्थान के कर्मिकों को अधिकाधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

दिनांक 26.09.2018 को राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, हिसार में हिन्दी पखवाड़े के अन्तर्गत एक "विराट हास्य कवि सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसमें भिन्न–भिन्न स्थानों से आए गणमान्य व वरिष्ठ हास्य कवियों ने अपनी हास्य रचनाएं प्रस्तुत की।

हिन्दीग कार्यशालाओं का आयोजन

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 2018 के अवसर पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. सुनीता श्रीवास्तव, प्रोफेसर गुरु जम्बेश्वर विश्वविद्यालय हिसार ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपना वक्तव्य ''भगिनी निवेदिता का भारतीय राष्ट्रवाद में योगदान'' पर दिया। उन्होंने हिन्दी के उत्थान तथा विकास का आहवान किया तथा वैज्ञानिकों व अधिकारियों को अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया।

हिन्दी की दूसरी, तीसरी एवं चौथी कार्यशाला 2 मई 2018, 17 नवम्बर, 2018, एवं 14 मार्च, 2018 को करवाई गई जिसमें प्रशासनिक विभाग एवं अनुबंधित कर्मचारियों के लिए हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया। हिन्दी अधिकारी डॉ अनुराधा भारद्वाज के निरीक्षण में प्रशासनिक अधिकारी द्वारा 11 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण का अभ्यास करवाया गया। इस कार्यशाला से प्रतिभागियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के प्रयास किए गए।

विविधा

अभिनन्दन

के.के. शर्मा*

विद्यालय में आज आखिरी दिन, सेवानिवृत्ति जो हो रही थी। विद्यालय की पुरानी सारी यादें एक साथ लौट आई हो जैसे। तहसील पालमपुर के केंद्रीय विद्यालय में आए करीब 20 बरस हुए और आज नौकरी का पड़ाव भी पूरा हुआ। बिटिया रिशिका की शादी और मोंटू के विदेश जाने के बाद तो केवल लगता था जैसे दायित्व पूरा हुआ। सब कुछ खुशहाल ही था, लेकिन अचानक उनके जाने के बाद तो ऐसा लगा कि जिंदगी जैसे बेजा हो गई, एक कमी बेहद खलने लगी थी। तभी दिल्ली शहर के कोलाहल से दूर, हिमाचल के पालमपुर कस्बे में प्रधानाचार्य के रूप में तबादला करा लिया था, ताकि अब शांत वातावरण में जीवन का आखिरी समय बिताया जा सके, कुदरत के करीब। जीवन का जो लक्ष्य बनाया था कि कम से कम सौ विद्यार्थियों को एक मुकाम तक पहुंचाना है, उनको देश सेवा के लिए तैयार करना है। दिमाग में आज बस यही विचार आता था क्या मैं अपने उद्देश्य को पाने में सफल हुई या नहीं हुई।

अचानक तभी घड़ी पर नजर पड़ी तो जाना संध्या के चार बज चुके है। बारह बजे से स्कूल के प्रांगण में रिटायरमेंट की पार्टी चलती रही, सभी की बधाई पाती रही, खूब भाषण हुए, खूब बधाइयां मिली, सेवा कार्यकाल की बहुत तारीफों के पुल बांधे गए, गुलदस्तों से स्वागत किया गया, सब तोहफे का सामान सामने बिखरा पड़ा हुआ था। बच्चों के प्रेम भरे गीत, और पत्र देखकर प्रेम के आंसू छलकते जाते थे। अंत में उप प्रधानाचार्य को चार्ज भी सौंप दिया था मानो जैसे विद्यालय की अंतिम जिम्मेदारी भी पूरी हुई।

बस अब केवल बेंच पर बैठा चपरासी मेरे बाहर आने का इंतजार करता था। आखिरी पड़ाव, आखिरी दिन, दिल में एक अजीब सा गहरा उतरता सैलाब। सब बहुत शांत प्रतीत होता था बाहर से, लेकिन अंदर बस एक पुराने पंखे की झूमती पंखड़ियों की आवाज जिसे देख ये प्रतीत हुआ मानो जीवन के चक्र की गति की याद दिला रहा हो। कस्बे की प्रधानाचार्या रहते जीवन में इतना सम्मान पाया, अति विशिष्ट व्यक्तियों की तरह, शायद शहरी बाबू इस अनुभव से कभी गुफ़्त्गू ना हो पाए, सारे अधिकार ही दे डाले पहाड़ी संस्कृति और समाज ने। सच्चे गुरु को सहज ही सम्मान मिलता है वह अपेक्षा का आभारी नहीं। बस यही जाना कि राजनीति और महत्वाकांक्षा से मुक्ति दिलाना वास्तविक शिक्षा है जो कि पूरब की श्रेष्ठतम देन है। उसे ही जिम्मेदारी से निभाने की चेष्टा रही हमेशा आज याद आ रहा है कि अमेरिका में दो तरह के वी.आई.पी होते हैं एक वैज्ञानिक और दूसरे केवल शिक्षक, फ्रांस के न्यायालय में सिर्फ शिक्षक को ही कुर्सी पर बैठने का अधिकार है, जापान की सरकार भी मोहताज है अनुमति की शिक्षक को गिरफ्तार करने के लिए, कोरिया में शिक्षक को वह सारे अधिकार हैं जो भारत के एक मंत्री को प्राप्त है, पूर्ण यूरोप में प्राथमिक शिक्षक को सबसे अधिक वेतन का सौभाग्य प्राप्त है । पर भारत के शहरों में शिक्षकों का अपमान अभी भी जारी है। अब वह बात नहीं रही, गुरु अब 'सर' और 'मैडम' बन गए हैं, सब कुछ बिकाऊ है, शिक्षा कम, हमारे विद्यालय – कॉलेज राजनीति के अखाड़े बन गए हैं। जीवन के मूल्यों से दूर, एजुकेशन अब बहुत बड़े व्यवसाय के रूप में फैल रहा है। जहाँ – जहाँ शिक्षकों, अभिभावकों का अपमान होता रहेगा, उस समाज में विद्यार्थी नहीं, चोर, डाकू, लुटेरे और भ्रष्टाचारी लोग ही पनपते रहेंगे, जागरूक समाज कभी तैयार नहीं हो पाएगा।

यहां आने से पहले डिसीजन बनाया कि कम से कम सौ बच्चों को उस मुकाम तक पहुँचाना है जहां पर वर्ग से हट, कुछ अलग करने की तमन्ना हो, देश सेवा में जो प्राण न्योछावर कर सके। उन युवाओं को तैयार करना है। अगर ऐसी गुणवत्ता को प्रोत्साहन मिले तो भारत माँ की गोद कभी सूनी ना रहेगी इसी कामना संग मैंने इस पहाड़ की वादियों में आना उचित समझा। दिल को गहरे से बात छू गयी थी।

अपना देश–समाज चार वर्ण वर्ग में बंटा हुआ है, जिसको एक करने का उत्तरदायित्व हमारा था। सत्य जाना कि जो बुद्धि से काम करते हैं वे ब्राह्मण होते हैं, जो भुजाओं से काम लेते हैं वे क्षत्रिय हैं, और जिनको साधन, प्रतिष्ठा की खोज करनी है वे वैष्णव, जो आराम परस्त है वो शूद्र जाने गए। सच तो यह है पांच हजार वर्ष पूर्व भारत के ऋषियों ने जिस वर्ण में मनुष्य को वर्णित किया वह आज भी सत्य है। कार्ल गुस्ताव जंग ने जो कि बहुत बड़े साइंटिस्ट विचारक

*वित्त एवं लेखा अधिकारी, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो

रहे अपनी रिसर्च में साबित किया इंसान की फितरत को केवल चार भागों में ही बांटा जा सकता है। आजकल सारा शहर खोया हुआ है आराम परस्ती में रहने में जो कि शूद्रता है, इसलिए गुलामी की तरफ बढ़ रहा है अपना देश। देश की रक्षा के लिए श्रेष्तम शिष्यों को तैयार करना है रात दिन एक करके इसका संदर्भ इस पंक्ति से जानना सरल है। घास–पात अपने आप उगते है, गुलाब के लिए मेहनत करनी पड़ती है, पौध तैयार करनी पड़ती है। बस यहां आने के बाद फर्क समझा तो जाना कच्ची मिट्टी को कैसे पक्का करना है, ओर इस कार्य को पूरा करने के लिए सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर डाला।

अब आखिरी दिन आन पड़ा, अब लौट जाना है फिर से कंक्रीट के शहर दिल्ली में, भीड़ वाली गलियों में जहां अपनापन नहीं, जहां दिक्कते और कुब्बते है, हर शख्सर परेशान और हर तरफ भागती दौड़ती छोटी सी जान और आपाधापी से भरी एक टुकड़ा जिंदगी। आज शब्द निरर्थक थे भावना को प्रकट करने के लिए। सत्य तो जाना कि जो लोग पांव छूते थे पर अगर आज चपरासी की नौकरी भी उनसे मांगे तो वह भी तुरंत सर्टिफिकेट मांगने को तैयार हैं, भरोसा किस किस पर करें। बस शहर में लोगो के हाथ में गुलदस्ता तो जरूर आ रहा है, लेकिन अगर नजर गौर से देखी जाए, तो आस्तीन में क्या–क्या है मालूम ही नहीं है।

अभी ख्याल जारी ही थे, लौट जाने को। अचानक विद्यालय का प्रांगण नगाड़े और ढोल–नगाड़ों से गूंज उठा, ऐसा माहौल तैयार हुआ कि नजारा देखते ही बनता था। प्रधानाचार्य कमरे से तुरंत बाहर निकल आई तो जाना शहर के विधायक जो इसी स्कूल का छात्र रहा, "अपना शैतान बिरजू" सभी बच्चों को लेकर स्वागत के लिए आन पड़ा है, बच्चों के हाथो में गुब्बारे, आंगनवाड़ी के सभी कार्यकर्ता, पुराने शिक्षक साथी फूलों से स्वागत को तैयार थे। यह कैसा समां बना दिया था बिरजू ने पांव छूकर गुजारिश कर डाली "पूरा कस्बा एक ही बात कहने आया है अब आप गांव छोड़कर कभी भी दिल्ली शहर को नहीं जाएंगे" "अपने इस परिवार को संभाल लेंगे फिर से" तभी बच्चों ने प्रेम से साड़ी के आंचल को पकड़ लिया ओर कुछ तो लिपट गए, हाथो को थाम लिया, हाथ थमते ही ख्याल आया कि इन नन्हे–नन्हे हाथों को प्रेम से दबा तो लूं।

सबने एक स्वर में लगभग चिल्लाना शुरु कर दिया "आप हमारे साथ ही रहेंगे"। प्रधान जी भी मुस्कुराते हुए चले आए और बात कह डाली "आपका जीवन अमूल्य है, हमारे लिए। आप अब इसी घर में ही रहेंगे, अबसे यह किराये का घर आपका हुआ।

अहसास हुआ दिल की धड़कने और सांसे एकदम बेकाबू, अश्रुधारा रुकते ना रुके। झुककर बच्चों को गले लगा लिया और दिल में एक ही बात आन निकली "अपना घर मिल गया, अब शहर नहीं लौटना है। "देखते ही देखते बस फिर से ढोल नगाड़ों के शोर में सब कुछ छुप गया। सभी ने हाथों में हाथ डाल लिए और हिमाचली नाटी नाच में झूमने लगे, प्रधानाचार्य आंसुओं को ना रोक पायी, जीवन का मकसद जैसे पूरा हुआ।

जिंदगी ने स्वीकारा यह अभिनंदन।

मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता।

भाषा के क्षेत्र में घृणा का नहीं, प्रेम और सौहार्द का स्थान होना चाहिए। देवनागरी भारत के लिए वरदान है।

–आचार्य विनोबा भावे

जिस भाषा में तुलसीदास जैसे कवि ने कविता की हो, वह अवश्य ही पवित्र है, और उसके सामने कोई भाषा नहीं ठहर सकती।

–महात्मा गांधी

ढाई आखर

(दोहो में लघुकथा)

तीन संत दर पर खड़े, मन में थी कुछ आस।
तब दरवाजा खोलकर, गृहणी आई पास।।

धन, आदर व प्रेम थे, उन तीनों के नाम।
हाथ जोड़ गृहणी कहा, पति गए हैं काम।।

आएंगे वो शाम को, तब मिल लेना आप।
बाहर से लौटा रही, देना ना तुम श्राप।।

दिन ढलने के बाद जबर, पति आए जो धाम।
पत्नी ने बताई तब, जो थी बात तमाम।।

घर पर लेकर आ गए, उनको वो श्रीमान।
तब संतों ने क्याह कहा, इस पर देना ध्यान।।

हम तीनों ना आ सकें, ये तुम लेना देख
कोई भी चुन लीजिए, आएगा बस एक।।

पति ने चाहा आय धन, पत्नी आदर साथ।
अधिक जरूरी प्रेम है, बिटिया ये समझात।।

बस फिर ये तय हो गया, प्रेम बने महमान।
हाथ जोड़ उनको कहा, दिल का जो अरमान।।

आगे जो कुछ भी हुआ, उसकी ना थी आस।
तीनों भौंचक रह गए, हुआ नहीं विश्वास।।

संग प्रेम के आ गए, दोनों पीछे साथ।
जहां प्रेम हम तो वहां, आते अपने आप।।

ढाई आखर में छिपा, इस जीवन का सार।
बिना प्रेम के क्या धरा, धरा पे इस संसार।।

–डॉ. जसवीर सिंह
परामर्शदाता, हिन्दी अनुभाग,
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

गाय पर कविता

स्थायी– गऊ नहीं पशु केवल, वह सृष्टि का आधार है ।
गऊ दूध के रूप में बहती, अमृतधार है

1. अन्न धन के भण्डार भरे, जहां गऊ पालना होती है,
गऊ गोबर से उपजाऊ धरा, उपहार अनोखे देती है,
गऊ दूध दही घी और गौमूत्र की, महिमा जाने संसार है ।

2. छोटे–बड़े वृद्ध सभी जन, घी–दूध गऊ का चाहते हैं,
पर घर के एक कौने में भी न, गऊ माता को रखपाते हैं ।
अपने बच्चो के तीरों से, घायल मां का प्यार है।
गऊ नहीं पशु केवल, वह ऋष्टि का आधार है ।

3. माता–माता कहकर सब ही, गऊ का मान बढ़ाते हैं,
पूजा और अर्चना की विधियां, सभी निभाते हैं,
पर घर के आगे खड़ी गाय को, डंडे से हड़काते हैं,
गऊ माता कहने वाले भी, उसकी पीर समझ नहीं पाते हैं ।
सोच समझकर सभी बताओ, क्या मां–बच्चों का प्यार है–
गऊ नहीं पशु केवल, वह ऋष्टि का आधार है ।

4. जब कमजोर वो हो जाती है, दूध नहीं दे पाती है।
उसके तन लोभी मानव द्वारा, सूंई लगाई जाती है।
लहू दूध बन बह निकला, इसको पीता संसार है ।
इसको मानव का लोभ कहें या साइंस का चमत्कार है ।
गऊ नहीं पशु केवल, वह ऋष्टि का आधार है ।

5 बड़ी विडम्बना देखी है, खूंटे पर गैया रोती है ।
सबको दूध पिलाने वाली गैया, पीर अनेकों सहती है।
मानव जाति की पालनहारी, उसकी आज शिकार है ।

6 गऊ घृत, दूध और गौमूत्र सभी, अब बेचे खरीदे जाते हैं,
गऊ से मिले उपहारों के, गुण भी गाये जाते हैं।
पर गऊ पालना किए बिना, मानव कैसे यह सब पाएगा,
नकली उत्पादों के चक्कर में फंसकर रह जाएगा ।
पढ़ा लिखा मानव भी कैसा नादान गंवार है।

7 गऊ पालना गऊ रक्षण से, धरा गगन हरषाएंगे ।
दूध दही की बहेंगी नदियां, मानव रोग मुक्त हो जाएंगे।
गऊ रक्षण के माध्यम से हम, अपनी रक्षा कर पाएंगे ।
गऊ पालना सच्चे अर्थों में, मानव सुख का आधार है ।

– **सुनीता**
निजी सहायक (कृषि प्रसार),
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

आगे बढ़ता देश हमारा

आगे बढ़ता देश हमारा,
आओ हम सब हाथ बढ़ाएं ।।

(1) कटते जंगल गिरते पर्वत,
इनको हम सब नित्य बचाएं ।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

(2) घटती गऊऐं भखे पशुधन,
इनकी हम सब भूख मिटाएं।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

(3) बढ़ते रावण पापी निस दिन,
हम सब मिलकर राम बुलाएं।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

(4) व्यारकुल धरती विचलित नदियां,
इनको हम सब स्वच्छ बनाएं।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

(5) परहित प्रेम दया करूणा बने,
आओ हम पढ़ें पढ़ाएं।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

(6) विद्या बरखा नित भारत मां को,
कबहूं न ओमहरी बिसराए।। आओ .... हाथ बढ़ाएं

– **डॉ. ओम हरि चतुर्वेदी**
अध्यक्ष
उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्रीय केन्द्र
(केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान)
गड़सा, वाया–युन्तर
जिला–कुल्लू (हि.प्र.)

सफलता के सोपान

''गणतंत्र दिवस 2019 के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की झांकी ''किसान गांधी'' का राजपथ पर दूसरी बार प्रदर्शन हुआ तथा इसे गणतंत्र दिवस के अवसर पर झांकी की श्रृंखला में दिए जाने वाले प्रथम पुरस्कार 2019 से सम्माानित किया गया ।

भाकृअनुप
ICAR